# समवाय-सुत्तं

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर

प्रकाशक :
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
श्री जितयशाश्री फाउंडेशन, कलकत्ता

अक्टूबर, १९९०

प्रकाशक :
प्राकृत भारती अकादमी
३८२६-यति श्यामलालजी का उपाश्रय,
मोतीसिंह भोमियों का रास्ता,
जयपुर-३०२ ००३ (राज०)

श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ
पो. मेवानगर-३४४ ०२५
जिला-बाड़मेर (राज०)

श्री जितयशाश्री फाउंडेशन
९-सी, एस्प्लानेड रो ईस्ट,
कलकत्ता-७०० ०६९

मुद्रक :
हमनोग प्रिण्टर्स, जोधपुर

SAMAVAY-SUTTAM
By
MAHOPADHYAY
CHANDR-PRABH-SAGAR

# प्रकाशकीय

आगमवेत्ता महोपाध्याय श्री चन्द्रप्रभसागर जी सम्पादित-अनुवादित 'समवाय-सुत्तं' प्राकृत-भारती, पुष्प-७४ के रूप में प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता है।

आगम-साहित्य जैनधर्म की निधि है। इसके कारण आध्यात्मिक वाङ्मय की अस्मिता अभिवर्द्धित हुई है। जैन-आगम-साहित्य को उसकी मौलिकताओं के साथ जनभोग्य सरस भाषा में प्रस्तुत करने की हमारी अभियोजना है। 'समवाय-सुत्तं' इस योजना की क्रियान्विति का अगला चरण है।

'समवाय-सुत्तं' जैन आगम-साहित्य का प्रमुख ग्रन्थ है। इसमें जैन धर्म के इतिहास के परिवेश में जिन सूत्रों एवं सन्दर्भों का आकलन हुआ है, उसकी उपयोगिता आज भी निर्विवाद है। इसके अनेक सूत्र वर्तमान अनुसन्धित्सुओं के लिए एक स्वस्थ दिशा-दर्शन हैं।

ग्रन्थ के सम्पादक चन्द्रप्रभजी देश के सुप्रतिष्ठित प्रवचनकार हैं, चिन्तक है, लेखक हैं, कवि हैं। आगमों में उनकी मेधा एवं पकड़ तलस्पर्शी है। उनकी वैदुष्यपूर्ण प्रतिभा प्रस्तुत आगम में सर्वत्र प्रतिबिम्बित हुई है। अनुवाद एवं भाषा-वैशिष्ट्य इतना सजीव एवं सटीक है कि ग्रन्थ की बोधगम्यता सहज, स्वाभाविक एवं प्रभावक बन गई है। मूल पाठ की विशुद्धता ग्रन्थ की अतिरिक्त विशेषता है।

गणिवर श्री महिमाप्रभसागरजी ने इस आगम-प्रकाशन-अभियान के लिए हमें उत्साहित किया, एतदर्थ हम उनके हृदय से आभारी हैं।

| पारसमल भंसाली | प्रकाशचन्द दफ्तरी | देवेन्द्रराज मेहता |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | सचिव | सचिव |
| श्री जैन श्वे. नाकोड़ा | श्री जितयशाश्री फाउण्डेशन | प्राकृत भारती अकादमी |
| पार्श्व. तीर्थ, मेवानगर | कलकत्ता | जयपुर |

# पूर्व स्वर

आगम-सम्पदा अध्यात्म-पुरुषों की अभिव्यक्त अस्मिता है। युग-युग के मनीषी-चिन्तन आगमों में संकलित एवं संरक्षित हैं। धर्म एवं दर्शन तो इनकी आधार-भूमिका है, किन्तु जन-संस्कृति आगमों में जिस ढंग से आत्मसात् हुई है, वह वेमिसाल है। आगम प्राचीन है, किन्तु वर्तमान के द्वार पर सदैव उसका स्वागत होता रहेगा।

आगमों की रचना हुए कई शतक बीत गये, परन्तु ऐतिहासिक सन्दर्भों की अगवानी के लिए हमारी दस्तक युग-युग की देहरी पर है। 'समवाय-सुत्तं' मात्र आगम ही नहीं, अपितु इतिहास का एक बड़ा दस्तावेज भी है। इसमें हमारा प्राचीन गौरव और इतिहास सुरक्षित हुआ है।

'समवाय-सुत्तं' आगम-क्रम में चौथा अंग-आगम होते हुए भी आगमों की समग्रता का प्रतिनिधि-ग्रन्थ है। आगम-सूत्रों का यह प्रास्ताविक भी है और उपसंहार भी। एक प्रकार से यह संग्रह-ग्रन्थ है, सन्दर्भ-कोष है, विज्ञप्ति-विधान है। इसके दस्तावेज में ऐसे अनेक सूत्र इन्द्राज हुए हैं, जिनसे अतीत के मोटे परदे उघड़ते हैं। कोष-शैली एवं संख्यात्मक तथ्य-प्रस्तुति 'स-सु' के व्यक्तित्व की पारदर्शिता है। ग्रन्थ का प्रारम्भ एकत्ववाची तथ्यों से हुआ है, पर समापन अनन्त की गोद में। इतिहास किलकारियाँ भर रहा है, तथ्य अँगड़ाईयाँ ले रहे है, 'स-सु' के वर्तमान धरातल पर।

यह वह समृद्ध-कोष है, जिससे कई वैज्ञानिक सम्भावनाएँ जन्म ले सकती हैं। यदि सृजन-धर्मी अनुशीलन किया जाए, तो अतीत की यह थाती वर्तमान के लिए विस्मयकारी रोशनी की धार साबित हो सकती है। भौतिकी, जैविकी एवं भौगोलिकी को उघाड़ने/निहारने के लिए 'स-सु' की वैज्ञानिकता एवं उपयोगिता विवाद-मुक्त है। जल, थल, नभ की मोटी-मोटी परतों का 'स-सु' ने आखिर कितना बारीकी से उद्‌घाटन किया है। ऋषि-मुनि कहलाने वाले वैरागी लोगों

की वैज्ञानिक पहुँच एवं पकड़ कितनी गहरी-से-गहरी थी, 'स-सु' का हर पन्ना इसका प्रमाण-पत्र पेश करता है।

प्रस्तुत प्रयास मेरी रुचि के अनुकूल है। तथ्यों को सामने लाना मेरा मौलिक उद्देश्य है। टिप्पणों के विवाद से ऊपर उठकर मौलिकता की निखालिसता को ही पेश किया है। मुझे प्रसन्नता है कि तत्कालीन लोकभाषा एवं राष्ट्रभाषा के बीच एक सेतु मुझसे सम्भावित हुआ। विश्वास है यह अप्रतिम विश्व-कोष धुंधले अतीत को निहारने में पारदर्शी रोशनदान सिद्ध होगा।

२ अक्टूबर, ६०

—चन्द्रप्रभ

# विषय-निर्देश

□□

# समवाय - सुत्तं

# पढमो समवाओ

१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

२. इह खलु समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरणाणदंसणधरेणं वियट्टच्छउमेणं जिणेणं जावएणं तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तं जहा—
आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विआहपण्णत्ती नायधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ।

# पहला समवाय

१. सुना है मैंने आयुष्मन् ! उन भगवान् द्वारा इस प्रकार कथित है—

२. आदिकर, तीर्थंकर, स्वयं-सम्बुद्ध, पुरुपोत्तम, पुरुष-सिंह, पुरुपवर-पुण्डरीक / पुरुप-कमल, पुरुष-वर-गन्धहस्ती, लोकोत्तम, लोकनाथ, लोक-हृदय, लोक-प्रदीप, लोक-प्रद्योतकर, अभयदाता, चक्षुदाता, मार्गदाता, शरणदाता, जीवदाता, बोधिदाता, धर्मदाता, धर्मदेशक, धर्मनायक, धर्म-सारथी, धर्म-वर-चातुरन्त/चतुर्दिक्-चक्रवर्ती, अप्रतिहत/शाश्वत-श्रेष्ठ-ज्ञान-दर्शन-धारक, विवृत्तछद्म/निर्दोष, जिन, ज्ञापक, तीर्ण, तारक, बुद्ध, बोधक, मुक्त, मोचक, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, शिव, अचल, अरुज / रोगमुक्त, अनन्त, अक्षय, अव्यावाध / व्यवधान-रहित, अपुनरावर्तक/पुनर्जन्म-रहित, सिद्धि-गति नामक स्थान सम्प्राप्त करने वाले श्रमण भगवान् महावीर द्वारा यह द्वादशांग गणिपिटक प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
आचार, सूत्रकृत, स्थान, समवाय, व्याख्या-प्रज्ञप्ति, ज्ञाता-धर्मकथा, उपासक-दशा, अन्तकृत्-दशा, अनुत्तरोपपाति-दशा, प्रश्न-व्याकरण, विपाक-श्रुत और दृष्टिवाद ।

| | |
|---|---|
| ३. तत्थ णं जेसे चउत्थे अंगे समवाएत्ति आहिते, तस्स णं अयमट्ठे, तं जहा— | ३. इनमें जो चौथा अंग है, वह समवाय कथित है। उसका यह अर्थ है। जैसे कि— |
| ४. एगे आया। | ४. आत्मा एक है। |
| ५. एगे अणाया। | ५. अनात्मा एक है। |
| ६. एगे दंडे। | ६. दण्ड/हिंसा एक है। |
| ७. एगे अदंडे। | ७. अदण्ड/अहिंसा एक है। |
| ८. एगा किरिआ। | ८. क्रिया एक है। |
| ९. एगा अकिरिआ। | ९. अक्रिया एक है। |
| १०. एगे लोए। | १०. लोक एक है। |
| ११. एगे अलोए। | ११. अलोक एक है। |
| १२. एगे धम्मे। | १२. धर्म एक है। |
| १३. एगे अधम्मे। | १३. अधर्म एक है। |
| १४. एगे पुण्णे। | १४. पुण्य एक है। |
| १५. एगे पावे। | १५. पाप एक है। |
| १६. एगे बंधे। | १६. वन्ध एक है। |
| १७. एगे मोक्खे। | १७. मोक्ष एक है। |
| १८. एगे आसवे। | १८. आस्रव/कर्म-स्रोत एक है। |
| १९. एगे संवरे। | १९. संवर/कर्म-अवरोध एक है। |
| २०. एगा वेयणा। | २०. वेदना एक है। |
| २१. एगा णिज्जरा। | २१. निर्जरा/कर्म-क्षय एक है। |

२२. जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसय-सहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

२२. जम्बुद्वीप-द्वीप एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२३. अप्पइट्ठाणे नरए एगं जोयण-सयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

२३. अप्रतिष्ठान नरक एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२४. पालए जाणविमाणे एगं जोयण-सयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

२४. पालक-यान विमान एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२५. सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ते ।

२५. सर्वार्थसिद्ध महाविमान एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२६. अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२६. आर्द्रा-नक्षत्र का एक तारा प्रज्ञप्त है ।

२७. चित्तानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२७. चित्रा-नक्षत्र का एक तारा प्रज्ञप्त है ।

२८. सातिनक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२८. स्वाति-नक्षत्र का एक तारा प्रज्ञप्त है ।

२९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

२९. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३०. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

३०. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की उत्कृष्टतः एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३१. दोच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३१. दूसरी [ शर्कराप्रभा ] पृथ्वी पर नैरयिकों की जघन्यतः/न्यूनतः एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

३२. कुछेक असुरकुमार देवों की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३३. असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं साहियं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

३३. असुरकुमार देवों की उत्कृष्टतः स्थिति एक सागरोपम से अधिक प्रज्ञप्त है ।

३४. असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३४. असुरकुमारेन्द्र को छोड़कर कुछेक भौमिज्ज/भवनवासी देवों की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३५. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३५. कुछेक असंख्य-वर्षायु संज्ञी/समनस्क पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक जीवों की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३६. असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियसण्णिमणुयाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३६. कुछेक असंख्य-वर्षायु गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज संज्ञी/समनस्क मनुष्यों की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३७. वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३७. वान-व्यन्तर देवों की उत्कृष्टतः एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३८. जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता ।

३८. ज्योतिष्क देवों की उत्कृष्टतः एक पल्योपम से एक शत-सहस्र/एक लाख वर्ष अधिक प्रज्ञप्त है ।

३९. सोहम्मे कप्पे देवाणं जहण्णेणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३९. सौधर्मकल्प देवों की जघन्यतः/न्यूनतः एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४०. सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

४०. कुछेक सौधर्मकल्प देवों की एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४१. ईसाणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साइरेगं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

४१. ईशानकल्प देवों की जघन्यतः/न्यूनतः स्थिति एक पल्योपम से अधिक प्रज्ञप्त है ।

४२. ईसाणे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

४२. कुछेक ईशानकल्प देवों की एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४३. जे देवा सागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पण्णत्ता ।

४३. जो देव सागर, सुसागर, सागरकान्त, भव, मनु, मानुषोत्तर और लोकहित विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४४. ते णं देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

४४. वे देव एक अर्धमास/पक्ष में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

४५. तेसि णं देवाणं एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुपज्जइ ।

४५. उन देवों के एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

४६. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगेणं भवग्गहणेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

४६. कुछेक भवसिद्धिक जीव है, जो एक भवग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# बीओ समवाओ

१. दो दंडा पण्णत्ता, तं जहा— अट्ठादंडे चेव, अणट्ठादंडे चेव ।

२. दुवे रासी पण्णत्ता, तं जहा— जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव ।

३. दुविहे बंधणे पण्णत्ते, तं जहा— रागबंधणे चेव, दोसबंधणे चेव ।

४. पुव्वाफग्गुणीनक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

५. उत्तराफग्गुणीनक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

६. पुव्वाभद्दवयानक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

७. उत्तराभद्दवयानक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते ।

८. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

# दूसरा समवाय

१. दण्ड/हिंसा दो प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि— अर्थदण्ड/प्रयोजनभूत हिंसा और अनर्थदण्ड/निष्प्रयोजन हिंसा ।

२. राशि दो प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि— जीव-राशि और अजीव-राशि ।

३. बन्धन द्विविध प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि— राग-बन्धन और द्वेष-बन्धन ।

४. पूर्वाफाल्गुनी-नक्षत्र के दो तारे प्रज्ञप्त हैं ।

५. उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्र के दो तारे प्रज्ञप्त हैं ।

६. पूर्वाभाद्रपदा-नक्षत्र के दो तारे प्रज्ञप्त हैं ।

७. उत्तराभाद्रपदा-नक्षत्र के दो तारे प्रज्ञप्त हैं ।

८. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. दूसरी [ शर्कराप्रभा ] पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की दो सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. कुछेक असुरकुमार देवों की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. असुरिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११. असुरकुमारेन्द्र को छोड़कर कुछेक भौमिज्ज/भवनवासी देवों की दो पल्योपम से कुछ कम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. असंखेज्जवासाउयसण्णि-पंचेंदिय-तिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. कुछेक असंख्य-वर्षायु संज्ञी/समनस्क पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक जीवों की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतिय-सण्णिमणुस्साणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ कुछेक असंख्य-वर्षायु गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज संज्ञी/समनस्क मनुष्यों की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४. सौधर्मकल्प में कुछेक देवों की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१५. ईशानकल्प में कुछेक देवों की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१६. सौधर्मकल्प में कुछेक देवों की उत्कृष्टतः दो सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१७. ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१७. ईशानकल्प में देवों की स्थिति दो सागरोपम से अधिक प्रज्ञप्त है।

१८. सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१८. सनत्कुमार कल्प में देवों की जघन्यतः/न्यूनतः दो सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६. माहेन्द्र कल्प मे देवों की जघन्यतः/ न्यूनतः दो सागरोपम से अधिक स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२०. जे देवा सुभं सुभकंतं सुभवण्णं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२०. जो देव शुभ, शुभकान्त, शुभवर्ण, शुभगन्ध, शुभलेश्य, शुभस्पर्श, सौधर्मवितंशक विमान में देवत्व से उपपन्न है, उन देवों की उत्कृष्टतः दो सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२१. तेणं देवा दोण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

२१. वे देव दो अर्धमासों/पक्षों में आन/ आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

२२. तेसि णं देवाणं दोहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ ।

२२. उन देवों के दो हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२३. अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

२३ कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो दो भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## तइओ समवाओ

१. तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—
मणदंडे वइदंडे कायदंडे ।

२. तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती ।

३. तओ सल्ला पण्णत्ता, तं जहा—
मायासल्ले णं नियाणसल्ले णं मिच्छादंसणसल्ले णं ।

४. तओ गारवा पण्णत्ता, तं जहा—
इड्ढीगारवे रसगारवे सायागारवे ।

५. तओ विराहणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा ।

६. मिगसिरनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

७. पुस्सनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

८. जेट्ठानक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

९. अभीइनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

१०. सवणनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

## तीसरा समवाय

१ दण्ड तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
मन-दण्ड, वचन-दण्ड, काय-दण्ड ।

२. गुप्ति तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
मन-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति ।

३. शल्य / चुभन तीन प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
माया-शल्य, निदान-शल्य, मिथ्या-दर्शन-शल्य ।

४ गौरव / आदर्श तीन प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
ऋद्धि-गौरव, रस-गौरव, साता-गौरव ।

५. विराधना / अवहेलना तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
ज्ञान-विराधना, दर्शन-विराधना, चारित्र-विराधना ।

६. मृगशिर नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

७. पुष्य-नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं ।

८. ज्येष्ठा नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

९. अभिजित नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

१०. श्रवण नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

११. असिणिनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

११. अश्विनी नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

१२. भरणीनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

१२. भरणी नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

१३. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछ नैरयिकों की तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. दोच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णी सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. दूसरी [ शर्कराप्रभा ] पृथ्वी पर नैरयिकों की उत्कृष्टतः तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ तीसरी [वालुकाप्रभा पृथ्वी पर] नैरयिकों की जघन्यतः/न्यूनतः तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६. कुछेक असुरकुमार देवों की तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१७. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७. कुछेक असंख्य-वर्षायु संज्ञी/समनस्क पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक जीवों की उत्कृष्टतः तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१८. असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतिय-सण्णिमणुस्साणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८. कुछेक असंख्य-वर्षायु गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज संज्ञी/समनस्क मनुष्यों की उत्कृष्टतः तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९. सौधर्म-ईशानकल्प में कुछेक देवों की तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

२०. सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२०. सनत्कुमार-माहेन्द्रकल्प में कुछेक देवों की तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

२१. जे देवा आभंकरं पभंकरं आभंकरपभंकरं चंदं चंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवण्णं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिगं चंदसिट्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२१. जो देव आभंकर, प्रभंकर, आभंकर-प्रभंकर, चन्द्र, चन्द्रावर्त, चन्द्रप्रभ, चन्द्रकान्त, चन्द्रवर्ण, चन्द्रलेश्य, चन्द्रध्वज, चन्द्रशृंग, चन्द्रसृष्ट, चन्द्रकूट और चन्द्रोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न है, उन देवों की उत्कृष्टतः तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२२. ते णं देवा तिण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

२२. वे देव तीन अर्धमासों/पक्षोंमें आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

२३. तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२३. उन देवों के तीन हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्व दुक्खाणमंतं करिस्संति ।

२४ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो तीन भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## चउत्थो समवाओ

१. चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—
कोहकसाए माणकसाए माया-कसाए लोभकसाए।

२. चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तं जहा—
अट्टे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे।

३. चत्तारि विगहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
जहा इत्थिकहा भत्तकहा राय-कहा देसकहा।

४. चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, तं जहा—
आहारसण्णा भयसण्णा मेहुण-सण्णा परिग्गहसण्णा।

५. चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—
पगडिबंधे ठिइबंधे अणुभावबंधे पएसबंधे।

६. चउगाउए जोयणे पण्णत्ते।

७. अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते।

## चौथा समवाय

१. कषाय/अन्तर-विकार चार प्रज्ञप्त हैं। जैसेकि—
क्रोध-कषाय, मान-कषाय, माया-कषाय, लोभ-कषाय।

२. ध्यान/एकाग्रता चार प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
आर्त-ध्यान, रौद्र-ध्यान, धर्म-ध्यान, शुक्ल-ध्यान।

३. विकथा चार प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
स्त्री-कथा, भक्त-कथा, राज-कथा, देश-कथा।

४. संज्ञा/विषय-वृत्ति चार प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
आहार-संज्ञा, भय-संज्ञा, मैथुन-संज्ञा, परिग्रह-संज्ञा।

५. बन्ध/अवस्थिति चार प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
प्रकृति-बन्ध, स्थिति-बन्ध, अनुभाव-बन्ध, प्रदेश-बन्ध।

६. योजन चार गव्यूति/कोस का प्रज्ञप्त है।

७. अनुराधा नक्षत्र के चार तारे प्रज्ञप्त हैं।

८. पुव्वासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ।

८. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चार तारे प्रज्ञप्त हैं ।

९. उत्तरासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते ।

९. उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चार तारे प्रज्ञप्त हैं ।

१०. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की चार पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. तीसरी पृथिवी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की चार सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. कुछेक असुरकुमार देवों की चार पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की चार पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प में कुछेक देवों की चार सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. जे देवा किट्ठिं सुकिट्ठिं किट्ठियावत्तं किट्ठिप्पभं किट्ठिकंतं किट्ठिवण्णं किट्ठिलेसं किट्ठिज्झयं किट्ठिसिंगं किट्ठिसिट्ठं किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. जो देव कृष्टि, सुकृष्टि, कृष्टि-आवर्त, कृष्टिप्रभ, कृष्टियुक्त, कृष्टिवर्ण, कृष्टिलेश्य, कृष्टिध्वज, कृष्टिशृंग, कृष्टिसृष्ट, कृष्टिकूट और कृष्टि-उत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः चार सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. ते णं देवा चउण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१६. वे देव चार अर्धमासों पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं।

१७. तेसि देवाणं चउहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१७. उन देवों के चार हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१८. अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१८. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो चार भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे।

## पंचमो समवाओ

## पाँचवां समवाय

१. पंच किरिया पण्णत्ता, तं जहा—
काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारियावणिआ पाणाइवाय-किरिया ।

१. क्रिया/प्रवृत्ति पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
कायिकी/शरीर-प्रवृत्ति, आधिकारणिकी/शस्त्र-प्रवृत्ति, प्राद्वेपिकी/दुर्भाव-प्रवृत्ति, पारितापनिका/सन्त्रास-प्रवृत्ति, प्राणातिपात-क्रिया/घात-प्रवृत्ति ।

२. पंच महव्वया पण्णत्ता, तं जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

२. महाव्रत पाँच प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
सर्व प्राणातिपात से विरमण/निवृत्ति, सर्व मृपावाद से विरमण, सर्व अदत्तादान से विरमण, सर्व मैथुन से विरमण, सर्व परिग्रह से विरमण ।

३. पंच कामगुणा पण्णत्ता, तं जहा—
सद्दा रूवा रसा गंधा फासा ।

३. कामगुण/वासना पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श ।

४. पंच आसवदारा पण्णत्ता, तं जहा—
मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा ।

४. आस्रव-द्वार/कर्म-स्रोत-माध्यम पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
मिथ्यात्व/अश्रद्धान्, अविरति/आसक्ति, प्रमाद/मूर्च्छा, कपाय/अन्तर-विकार, योग/तादात्म्य ।

५. पंच संवरदारा पण्णत्ता, तं जहा—
सम्मत्तं विरई अप्पमाया अकसाया अजोगा ।

५. संवर-द्वार / कर्म-अवरोधक-साधन पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
सम्यक्त्व, विरक्ति, अप्रमत्तता, अकपायता, अयोगता ।

६. पंच निज्जरट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—
पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमणं अदिण्णादाणाओ वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं।

६ निर्जरा-स्थान/कर्म-क्षय-साधन पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
प्राणातिपात-विरमण, मृषावाद-विरमण, अदत्तादान-विरमण, मैथुन-विरमण, परिग्रह-विरमण।

७. पंच समिईओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण-भंड-मत्तनिक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिई।

७. समिति/संयम-प्रवृत्ति पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
ईर्या-समिति/पथदृष्टि-संयम, भाषा-समिति/वाणी-संयम, एषणा-समिति/भिक्षा-संयम, आदान-भांड-मात्र-निक्षेपणा समिति/स्थापन-संयम, उच्चार/मल प्रस्रवण/मूत्र श्लेष्म/कफ सिंघाण/नासिकामल जल्ल/शरीर-मैल प्रतिष्ठापना-समिति/परित्याग-संयम।

८. पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—
धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए।

८. अस्तिकाय/प्रदेशवान् पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
धर्मास्तिकाय/गमन, अधर्मास्तिकाय/स्थिति, आकाशास्तिकाय/स्थान-दान, जीवास्तिकाय/चैतन्य, पुद्गलास्तिकाय/अजीव।

९. रोहिणीनक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते।

९. रोहिणी-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त हैं।

१०. पुणव्वसुनक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते।

१०. पुनर्वसु-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त हैं।

११. हत्थनक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते।

११. हस्त-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त हैं।

१२. विसाहानक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते।

१२. विशाखा नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त हैं।

१३. धणिट्ठानक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते।

१३. धनिष्ठा-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त है ।

१४. इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णता ।

१४. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरकियों की पाँच पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. तीसरी पृथ्वी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की पाँच सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६. कुछेक असुरकुमार देवों की पाँच पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की पाँच पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८. सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प में कुछेक देवों की पाँच सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९. जे देवा वायं सुवायं वातावत्तं वातप्पभं वातकंतं वातवण्णं वातलेसं वातज्झयं वातसिंगं वातसिट्ठं वातकूडं वाउत्तरवडेंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवण्णं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिंगं सूरसिट्ठं सूरकूडं सूरुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पंच सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९. जो देव वात, सुवात, वातावर्त, वातप्रभ, वातकान्त, वातवर्ण, वातलेश्य, वातध्वज, वातशृंग, वातसृष्ट, वातकूट, वातोत्तरावतंसक, सूर, सुसूर, सूरावर्त, सूरप्रभ, सूरकान्त, सूरवर्ण, सूरलेश्य, सूरध्वज, सूरशृंग, सूरसृष्ट, सूरकूट और सूरोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः पाँच सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२०. ते णं देवा पंचण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

२०. वे देव पाँच अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते है, निःश्वास छोड़ते हैं ।

२१. तेसि णं देवाणं पंचहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२१. उन देवों के पाँच हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२२. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पंचहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

२२. कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो पाँच भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# छट्ठो समवाओ

# छठा समवाय

१. छल्लेसा पण्णत्ता, तं जहा—
कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा
तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ।

१. लेश्या/चित्तवृत्ति छह प्रज्ञप्त हैं ।
जैसे कि—
कृष्ण-लेश्या / संक्लेश-वृत्ति, नील-लेश्या/रौद्र-वृत्ति, कापोत-लेश्या/आर्त-वृत्ति, तेजो-लेश्या/परोपकार-वृत्ति, पद्म-लेश्या/विवेक-वृत्ति, शुक्ल-लेश्या/निर्मल-वृत्ति ।

२. छज्जीवनिकाया पण्णत्ता, तं जहा—
पुढवीकाए आउकाए तेउकाए
वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

२. जीव के छह निकाय/संकाय प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
पृथिवीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय/गतिशील ।

३. छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तं जहा—
अणसणे ओमोदरिया वित्ति-संखेवो रसपरिच्चाओ काय-किलेसो संलीणया ।

३. बाह्य तपोकर्म छह प्रज्ञप्त हैं ।
जैसे कि—
अनशन/उपवास, ऊनोदरिका/अल्प-भोजन, वृत्ति-संक्षेप/शारीरिक वृत्ति-निरोध, रस-परित्याग/स्वाद-विजय, कायक्लेश / सहिष्णुता, संलीनता/इन्द्रिय-गोपन ।

४. छव्विहे अब्भिंतरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तं जहा—
पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं
सज्झाओ झाणं उस्सग्गो ।

४. आभ्यन्तर-तप छह प्रज्ञप्त हैं ।
जैसे कि—
प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य/सेवा, स्वाध्याय, ध्यान, व्युत्सर्ग/कायोत्सर्ग ।

५. छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—
वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्विय-समुग्घाए तेयसमुग्घाए आहार-समुग्घाए ।

५. छाद्मस्थिक/सांसारिक समुद्घात/प्रदेश-विस्तार छह प्रज्ञप्त हैं ।
जैसे कि—
वेदना-समुद्घात, कषाय-समुद्घात, मारणान्तिक-समुद्घात, वैक्रिय-समुद्घात, तेजस्-समुद्घात, आहा-रक-समुद्घात ।

६. छव्विहे अत्थुग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—
सोइंदिय-अत्थुग्गहे चक्खिंदिय-अत्थुग्गहे घाणिंदिय-अत्थुग्गहे जिब्भिंदिय-अत्थुग्गहे फासिंदिय-अत्थुग्गहे नोइंदिय-अत्थुग्गहे।

६. अर्थावग्रह/अर्थ-बोध छह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
श्रोत्रेन्द्रिय-अर्थावग्रह, चक्षुरिन्द्रिय-अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय-अर्थावग्रह, जिह्वेन्द्रिय-अर्थावग्रह, स्पर्शनेन्द्रिय-अर्थावग्रह, नोइन्द्रिय/मन-अर्थावग्रह।

७. कत्तियानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते।

७. कृत्तिका नक्षत्र के छह तारे प्रज्ञप्त हैं।

८. असिलेसानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते।

८. आश्लेषा नक्षत्र के छह तारे प्रज्ञप्त हैं।

९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की छह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. तीसरी पृथिवी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की छह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११. कुछेक असुरकुमार देवों की छह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की छह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३. सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प में कुछेक देवों की छह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. जे देवा सयंभुं सयंभुरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किट्ठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेणियं वीरावत्तं वीरप्पभं वीरकंतं वीरवण्णं वीरलेसं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिट्ठं वीरकूडं वीरुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. जो देव स्वयम्भू, स्वयम्भूरमण, घोष, सुघोष, महाघोष, कृष्टिघोष, वीर, सुवीर, वीरगत, वीरश्रेणिक, वीरावर्त, वीरप्रभ, वीरकांत, वीरवर्ण, वीरलेश्य, वीरध्वज, वीरश्रृग, वीरसृष्ट, वीरकूट और वीरोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न है, उन देवों की उत्कृष्टत: छह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. ते णं देवा छण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१५. वे देव छह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते है, उच्छ्वास लेते हैं, नि:श्वास छोड़ते हैं ।

१६. तेसि णं देवाणं छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई ।

१६. उन देवों के छह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१७. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१७. कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो छह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदु:खान्त करेंगे ।

# सत्तमो समवाओ

# सातवां समवाय

१. सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—
इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए।

१. भयस्थान सात प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
इहलोक-भय, परलोक-भय, आदान-भय, अकस्मात्-भय, आजीव-भय, मरण-भय, अश्लोक/निन्दा-भय।

२. सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—
वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए।

२. समुद्घात सात प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
वेदना-समुद्घात, कषाय-समुद्घात, मारणान्तिक-समुद्घात, वैक्रिय-समुद्घात, आहारक-समुद्घात, केवलि-समुद्घात।

३. समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३. श्रमण भगवान् महावीर ऊँचाई की दृष्टि से सात रत्निक/हाथ ऊँचे थे।

४. सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—
चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे।

४. इस जम्बुद्वीप द्वीप में वर्षधर पर्वत सात प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
क्षुल्लक, हिमवन्त, महाहिमवन्त, निषध, नीलवन्त, रुक्मी, शिखरी, मन्दर/सुमेरु।

५. सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा—
भरहे हेमवते हरिवासे महाविदेहे रम्मए हेरण्णवते एरवए।

५. इस जम्बुद्वीप द्वीप में वास/क्षेत्र सात प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
भरत, हैमवत, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक, ऐरण्यवत, ऐरवत।

६. खीणमोहे णं भगवं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ वेएई।

६. क्षीणमोह भगवान् मोहनीय कर्म का वर्जन कर सात कर्म-प्रकृतियों का वेदन करते हैं।

७. महानक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते ।

७. मघा-नक्षत्र के सात तारे प्रज्ञप्त हैं।

८. कत्तिआइया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिआ पण्णत्ता ।

८. कृत्तिका आदि सात नक्षत्र पूर्वद्वारिक प्रज्ञप्त हैं ।

९. महाइया सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिआ पण्णत्ता ।

९. मघा आदि सात नक्षत्र दक्षिणद्वारिक प्रज्ञप्त हैं ।

१०. अणुराहाइया सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ पण्णत्ता ।

१०. अनुराधा आदि सात नक्षत्र अपर/पश्चिमद्वारिक प्रज्ञप्त हैं ।

११. धणिट्ठाइया सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ पण्णत्ता ।

११. धनिष्ठा आदि सात नक्षत्र उत्तरद्वारिक प्रज्ञप्त है ।

१२. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की सात पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. तीसरी पृथिवी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की उत्कृष्टतः सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. चउत्थीए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. चौथी पृथिवी [पंकप्रभा] पर नैरयिकों की जघन्यतः/न्यूनतः सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. कुछेक असुरकुमार देवों की सात पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की सात पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७. सणंकुमारे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७. सनत्कुमार कल्प में देवों की उत्कृष्टतः सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८. माहिंदे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८. माहेन्द्र-कल्प में देवों की उत्कृष्टतः सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९. बंभलोए कप्पे देवाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९. ब्रह्मलोक कल्प में कुछेक देवों की सात सागरोपम से अधिक स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२०. जे देवा समं समप्पमं महापभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणंकुमारवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२०. जो देव सम, समप्रभ, महाप्रभ, प्रभास, भासुर, विमल, कांचनकूट और सनत्कुमारावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२१. ते णं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

२१. वे देव सात अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

२२. तेसि णं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२२. उन देवों के सात हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२३. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

२३. कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो सात भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## अट्ठमो समवाओ

१. अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—
जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए।

२. अट्ठ पवयणमायाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिई उच्चारपासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणियासमिई मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती।

३. वाणमंतराणं देवाणं चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

४. जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

५. कूडसामली णं गरुलावासे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

६. जंबुद्दीवस्स णं जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

## आठवां समवाय

१. मदस्थान आठ प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
जाति-मद, वल-मद, रूप-मद, तपो-मद, श्रुत-मद, लाभ-मद, ऐश्वर्य-मद।

२. प्रवचन-माता आठ प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
ईर्या-समिति, भाषा-समिति, एषणा-समिति, आदान-भांड-मात्र निक्षेपण-समिति, उच्चार-प्रस्रवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-परिष्ठापना-समिति, मनो-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति।

३. वान-व्यन्तर देवों के चैत्यवृक्ष ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है।

४. जम्बु सुदर्शन वृक्ष ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है।

५. गरुड़-देव का आवासभूत पार्थिव कूट-शाल्मली वृक्ष ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है।

६. जम्बुद्वीप की जगती/पाली ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँची प्रज्ञप्त है।

७. अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते, तं जहा—
पढमे समए दंडं करेइ ।
बीए समए कवाडं करेइ ।
तइए समए मंथं करेइ ।
चउत्थे समए मंथंतराइं पूरेइ ।
पंचमे समए मंथंतराइं पडिसाहराइ ।
छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ ।
सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ ।
अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ ।
तत्तो पच्छा सरीरत्थे भवइ ।

७. केवलि-समुद्घात अष्ट सामयिक प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
पहले समय में दण्ड किया जाता है।
दूसरे समय में कपाट किया जाता है।
तीसरे समय में मन्थन किया जाता है।
चौथे समय में मन्थन के अन्तराल पूर्ण किये जाते है।
पाँचवें समय में मन्थन के अन्तराल का प्रतिसंहार/संकोच किया जाता है।
छठे समय में मन्थन का प्रतिसंहार किया जाताहै।
सातवें समय में कपाट का प्रतिसंहार किया जाता है।
आठवें समय में दण्ड का प्रतिसंहार किया जाता है।
तत्पश्चात् शरीरस्थ होते हैं।

८. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा—
सुंभे य सुंभघोसे य,
वसिट्ठे बंभयारि य ।
सोमे सिरिधरे चेव,
वीरभद्दे जसे इ य ।।

८. पुरुपादानीय अर्हत् पार्श्व के आठ गण और आठ गणधर थे। जैसे कि—
शुभ, शुभघोष, वशिष्ठ, ब्रह्मचारी, सोम, श्रीधर, वीरभद्र और यश ।

९. अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति, तं जहा—
कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा जेट्ठा ।

९. आठ नक्षत्र चन्द्र के साथ प्रमर्द योग करते हैं। जैसे कि—
कृत्तिका, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा ।

१०. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की आठ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. चौथी पृथिवी [पंकप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की आठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. कुछेक असुरकुमार देवों की आठ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की आठ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. ब्रह्मलोक कल्प में कुछेक देवों की आठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. जे देवा अच्चि अच्चिमालिं वइरोयणं पभंकरं चंदाभं सूराभं सुपइट्ठाभं अग्गिच्चाभं रिट्ठाभं अरुणाभं अरुणुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. जो देव अर्चि, अर्चिमाली, वैरोचन, प्रभंकर, चन्द्राभ, सूराभ, सुप्रतिष्ठाभ, अग्नि-अर्च्याभ, रिष्टाभ, अरुणाभ और अनुत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः आठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१६. वे देव आठ अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१७. तेसि णं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७. उन देवों के आठ हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१८. कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो आठ भव-ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# नवमो समवाओ

१. नव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

नो इत्थीणं-पसु-पंडग-संसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ ।

नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ ।

नो इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवइ ।

नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।

नो पणीयरसभोई भवइ ।

नो पाणभोयणस्स अइमायं आहारइत्ता भवइ ।

नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सुमरइत्ता भवइ ।

नो सद्दाणुवाई नो रूवाणुवाई नो गंधाणुवाई नो रसाणुवाई नो फासाणुवाई नो सिलोगाणुवाई ।

नो सायासोक्ख-पडिबद्धे यावि भवइ ।

२. नव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ ।

इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ ।

इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवइ ।

इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।

# नौवां समवाय

१. ब्रह्मचर्य-गुप्ति नौ प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—

[ब्रह्मचारी] स्त्री, पशु और नपुंसक-संसक्त शय्या तथा आसन का सेवन नहीं करता ।

स्त्रियों की कथा नहीं करता ।

स्त्रियों के स्थान का सेवन नहीं करता ।

स्त्रियों की मनोहर-मनोरम इन्द्रियों का अवलोकन-निरीक्षण नहीं करता ।

प्रणीत-रस-बहुल-भोजी नहीं होता ।

भोजन-पान का अतिमात्रा में आहार नहीं करता ।

स्त्रियों की पूर्व रति तथा पूर्व क्रीड़ाओं का स्मरण नहीं करता ।

न शब्दानुवादी, न रूपानुवादी, न गन्धानुवादी, न स्पर्शानुवादी और न ही श्लोकानुवादी होता है ।

शाता-सुख से प्रतिबद्ध भी नहीं होता ।

२. ब्रह्मचर्य-अगुप्ति नौ प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—

[ब्रह्मचारी] स्त्री, पशु और नपुंसक-संसक्त शय्या तथा आसन का सेवन करता है ।

स्त्रियों की कथा करता है ।

स्त्रियों के स्थान का सेवन करता है ।

स्त्रियों की मनोहर-मनोरम इन्द्रियों का अवलोकन-निरीक्षण करता है ।

पणीयरसभोई भवइ ।
पाणभोयणस्स अइमायं आहार-
इत्ता भवइ ।
इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं
सुमरइत्ता भवइ ।
सद्दाणुवाई रूवाणुवाई गंधाणुवाई
रसाणुवाई फासाणुवाई सिलो-
गाणुवाई ।
सायासोक्ख-पडिबद्धे यावि भवइ ।

प्रणीत-रस-बहुल-भोजी होता है ।
भोजन-पान का अतिमात्रा में आहार
करता है ।
स्त्रियों की पूर्व रति तथा पूर्व
क्रीड़ाओं का स्मरण करता है ।
न शब्दानुवादी, न रूपानुवादी, न
गन्धानुवादी, न स्पर्शानुवादी और न
ही श्लोकानुवादी होता है ।
शाता-सुख से प्रतिबद्ध भी रहता है ।

३. नव बंभचेरा पण्णत्ता, तं जहा—
सत्थपरिण्णा लोगविजओ
सीओसणिज्जं सम्मत्तं ।
आवंती धुअं विमोहायणं
उवहाणसुयं महपरिण्णा ॥

३. ब्रह्मचर्य - आचारांगसूत्र - के अध्ययन
नौ प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
शस्त्र-परिज्ञा, लोकविजय, शीतो-
ष्णीय, सम्यक्त्व, आवन्ती, धूत,
विमोह, उपधानश्रुत, महापरिज्ञा ।

४. पासे णं अरहा नव रयणीओ
उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४. पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व ऊँचाई की
दृष्टि से नौ रत्निक/हाथ ऊँचे थे ।

५. अभीजिनक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते
चंदेणं सद्धिं जोगं जोइए ।

५. अभिजित नक्षत्र चन्द्र के साथ नौ
मुहूर्त से अधिक योग करता है ।

६. अभीजियाइया नव नक्खत्ता
चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति,
तं जहा—
अभीजि सवणो धणिट्ठा सय-
भिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरा-
पोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी ।

६. अभिजित आदि नौ नक्षत्र चन्द्र का
उत्तर से योग करते हैं । जैसे कि—
अभिजित से भरणी तक ।

७. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए
बहुसमरमणिज्जाओ भूमि-
भागाओ नव जोयणसए उड्ढं
अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चारं
चरइ ।

७. इस रत्नप्रभा पृथिवी के बहुसम/
अत्यधिक रमणीय भूमि-भाग से नौ
सौ योजन ऊपर ऊपरीतल में तारा
रूप में अबाधत: संचरण करते हैं ।

| | |
|---|---|
| ८. जंबुद्दीवे णं दीवे नवजोयणिया मच्छा पविसिसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा । | ८. जम्बुद्वीप में नौ योजन के मत्स्य प्रवेश करते थे, प्रवेश करते हैं और प्रवेश करेंगे । |
| ९. विजयस्स णं दारस्स एगमेगाए बाहाए नव-नव भोमा पण्णत्ता । | ९. विजय-द्वार की एक-एक बाहु पर नौ-नौ भौम/भवन प्रज्ञप्त हैं। |
| १०. वाणमंतराणं देवाणं सभाओ सुधम्माओ नव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ताओ । | १०. वान-व्यन्तर देवों की सुधर्मा-सभाएँ ऊँचाई की दृष्टि से नौ योजन ऊँची प्रज्ञप्त हैं । |
| ११. दंसणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— निद्दा पयला निद्दानिद्दा पयला-पयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे । | ११. दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ नौ प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि— निद्रा/सामान्य नींद, प्रचला/शय्यारहित निद्रा, निद्रानिद्रा/प्रगाढ़ निद्रा, प्रचला-प्रचला/शय्यारहित प्रगाढ़ निद्रा, स्त्यानर्द्धि/कार्य-समापन्नक निद्रा, चक्षु-दर्शनावरण/नेत्र-आवरण, अचक्षु-दर्शनावरण/अन्य इन्द्रिय-आवरण, अवधि-दर्शनावरण/मूर्त-दर्शन-आवरण और केवल-दर्शनावरण/सर्व दर्शन-आवरण । |
| १२. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । | १२. इस रत्नभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की नौ पल्योपम-स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| १३. चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । | १३. चौथी पृथिवी [पंकप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की नौ सागरोपम-स्थिति प्रज्ञप्त है। |
| १४. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । | १४. कुछेक असुरकुमार देवों की नौ पल्योपम-स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| १५. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । | १५. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की नौ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |

१६. बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६. ब्रह्मलोक कल्प में कुछेक देवों की नौ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७. जे देवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पहं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिट्ठं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडेंसगं सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जपभं सुज्जकंतं सुज्जवण्णं सुज्जलेसं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं सुज्जसिट्ठं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडेंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्लकंतं रुइल्लवण्णं रुइल्ललेसं रुइल्लज्झयं रुइल्लसिंगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं रुइल्लत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७. जो देव पक्ष्म, सुपक्ष्म, पक्ष्मावर्त, पक्ष्मप्रभ, पक्ष्मकान्त, पक्ष्मवर्ण, पक्ष्मलेश्य, पक्ष्मध्वज, पक्ष्मशृंग, पक्ष्मसृष्ट, पक्ष्मकूट, पक्ष्मोत्तरावतंसक तथा सूर्य, सुसूर्य, सूर्यावर्त, सूर्यप्रभ सूर्यकान्त, सूर्यवर्ण, सूर्यलेश्य, सूर्यध्वज, सूर्यशृंग, सूर्यसृष्ट, सूर्यकूट, सूर्योत्तरावतंसक, रुचिर, रुचिरावर्त, रुचिरप्रभ, रुचिरकान्त, रुचिरवर्ण, रुचिरलेश्य, रुचिरध्वज, रुचिरशृंग, रुचिरसृष्ट, रुचिरकूट और रुचिरोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की नौ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८. ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१८. वे देव नौ अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१९. तेसि णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१९. उन देवों के नौ हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२०. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

२०. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो नौ भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# दसमो समवाओ

१. दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा—
खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे संजमे तवे चियाए बंभचेरवासे।

२. दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—
धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जिज्जा, सव्वं धम्मं जाणित्तए।
सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, अहातच्चं सुमिणं पासित्तए।
सण्णिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, पुव्वभवे सुमरित्तए।
देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए।
ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोगं जाणित्तए।
ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोगं पासित्तए।

# दसवां समवाय

१. श्रमण-धर्म दस प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
क्षान्ति/क्षमा, मुक्ति, आर्जव/ऋजुता, मार्दव/मृदुता, लाघव/लघुता, सत्य, संयम, तप, त्याग और ब्रह्मचर्य-वास।

२. चित्त-समाधि-स्थान दस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
धर्मचिन्तन वह है, जो पूर्व में असमुत्पन्न सर्व धर्म को जानने के लिए समुत्पन्न होता है।
स्वप्न-दर्शन वह है, जो पूर्व में असमुत्पन्न यथातथ्य को स्वप्न में देखने के लिए समुत्पन्न होता है।
संज्ञी-ज्ञान वह है, जो पूर्व में असमुत्पन्न पूर्व भव का स्मरण करने से समुत्पन्न होता है।
देव-दर्शन वह है, जो पूर्व में असमुत्पन्न दिव्य देवर्धि, दिव्य देव-द्युति, दिव्य देवानुभाव को देखने के लिए समुत्पन्न होता है।
अवधि-ज्ञान वह है, जो पूर्व में असमुत्पन्न अवधि से लोक को जानने के लिए समुत्पन्न होता है।
अवधिदर्शन वह है, जो अवधि से लोक को देखने के लिए समुत्पन्न होता है।

मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, अंतो मणुस्सखेत्ते अड्ढातिज्जेसु दीव-समुद्देसु सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणित्तए ।

मनःपर्यव-ज्ञान वह है, जो असमुत्पन्न मनोगत भाव पर्यन्त जानने के लिए समुत्पन्न होता है ।

केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवलं लोगं जाणित्तए ।

केवल-ज्ञान वह है, जो असमुत्पन्न केवल लोक/त्रैलोक्य को जानने के लिए समुत्पन्न होता है ।

केवलदंसणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवलं लोयं पासित्तए ।

केवल-दर्शन वह है, जो असमुत्पन्न केवल लोक को देखने के लिए समुत्पन्न होता है ।

केवलिमरणं वा मरिज्जा, सव्व-दुक्खप्पहीणाए ।

केवलि-मरण वह है, जो सर्व दुःखों के समापन के लिए मरे ।

३. मंदरे णं पव्वए मूले दसजोयण-सहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ।

३ मन्दर/सुमेरु-पर्वत मूल में दस हजार योजन विष्कम्भक / विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

४. अरहा णं अरिट्ठनेमी दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४. अर्हत् अरिष्टनेमि ऊँचाई की दृष्टि से दस धनुष ऊँचे थे ।

५. कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

५. वासुदेव कृष्ण ऊँचाई की दृष्टि से दस धनुष ऊँचे थे ।

६. रामे णं बलदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

६. बलदेव राम ऊँचाई की दृष्टि से दस धनुष ऊँचे थे ।

७. दस नक्खत्ता नाणविद्धिकरा पण्णत्ता, तं जहा—
मिगसिरमद्दा पुस्सो,
तिण्णि अ पुव्वा मूलमस्सेसा ।
हत्थो चित्ता य तहा,
दस विद्धिकराइं नाणस्स ॥

७. ज्ञान-वृद्धिकर नक्षत्र दस प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
मृगशिर, आर्द्रा, पुष्य, तीन पूर्वा [पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वा षाढ़ा, पूर्वा भाद्रपदा] मूल, आश्लेषा, हस्त और चित्रा—ये दस [नक्षत्र] ज्ञान की वृद्धि करते हैं ।

८. अकम्मभूमियाणं मणुआणं दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पण्णत्ता, तं जहा—
मत्तंगया य भिंगा,
तुडिअंगा दीव जोय चित्तंगा।
चित्तरसा मणिअंगा,
गेहागारा अणिगणा य ॥

८. अकर्मभूमि/भोगभूमि में जन्मे मनुष्यों के उपभोग के लिए उपस्थित वृक्ष दस प्रकार के प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—मद्यांग, भृंग, तूर्यांग, ज्योतिरंग, चित्रांग, चित्तरस, मण्यंग, गेहाकार और अनग्न।

९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

९. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की जघन्यतः दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. इमीसे णं रयणप्पाहए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिकों की दस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

११. चौथी पृथिवी [ पंकप्रभा ] पर दस लाख नारक-आवास हैं।

१२. चउत्थीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. चौथी पृथिवी की उत्कृष्टतः दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. पंचमाए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३. पाँचवी पृथिवी [ धूमप्रभा ] पर नैरयिकों की जघन्यतः/न्यूनतः दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. असुरकुमाराणं देवाणं जहण्णेण्णं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

१४. असुरकुमार देवों की जघन्यतः/न्यूनतः दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. असुरिंदवज्जाणं भोमेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

१५. असुरेन्द्रों को छोड़कर भौमिज्ज/भवनवासी देवों की जघन्यतः दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१६. कुछेक असुरकुमार देवों की दस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१७. बायरवणप्फइकाइयाणं उक्को-सेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।

१७. बादर वनस्पतिकायिक की उत्कृष्टत: दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८. वाणमंतराणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।

१८. वान-व्यन्तर देवों की जघन्यत: दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१९. सौधर्म-ईशान-कल्प में कुछेक देवों की दस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२०. बंभलोए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२०. ब्रह्मलोक-कल्प में देवों की उत्कृष्टत: दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२१. लंतए कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२१. लान्तक कल्प में देवों की जघन्यत:/न्यूनत: दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२२. जे देवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्को-सेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२२. जो देव घोष, सुघोष, महाघोष, नन्दिघोष, सुस्वर, मनोरम, रम्य, रम्यक, रमणीय, मंगलावर्त और ब्रह्मलोकावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टत: दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२३. ते णं देवा दसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊस-संति वा नीससंति वा ।

२३. वे दस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते हैं, नि:श्वास छोड़ते हैं ।

२४. तेसि णं देवाणं दसहिं वाससह-स्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२४. उन देवों के दस हजार वर्ष में आहार का अर्थ समुत्पन्न होता है ।

२५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परि-निव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

२५. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो दस भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्व-दु:खान्त करेंगे ।

## एक्कारसमो समवाओ

१. एक्कारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
दंसणसावए, कयव्वयकम्मे, सामाइअकडे, पोसहोववासनिरए, दिया वंभयारी, रत्ति परिमाणकडे, दिआवि राओवि वंभयारी, असिणाई, वियडभोई, मोलिकडे, सचित्तपरिण्णाए, आरंभपरिण्णाए, पेसपरिण्णाए, उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए, समणभूए यावि भवइ समणाउसो ।

२. लोगंताओ णं एक्कारस एक्कारे जोयणसए अवाहाए जोइसंते पण्णत्ते ।

३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अवाहाए जोइसे चारं चरइ ।

४. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, तं जहा—
इंदभूती अग्गिभूती वायुभूति विअत्ते सुहम्मे मंडिए मोरियपुत्ते अकंपिए अयलभाया मेतज्जे पभासे ।

५. मूले नक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते ।

## ग्यारहवां समवाय

१. श्रमणायुष्मन् ! उपासक की प्रतिमा/अनुष्ठान ग्यारह प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
दर्शन-श्रावक, कृतव्रतकर्मा, सामायिक कृत, पौषधोपवास-निरत, दिवा-ब्रह्मचारी, रात्रि-परिमाणकृत, दिवा-ब्रह्मचारी भी, रात्रि-ब्रह्मचारी भी, अस्नायी, विकट-भोजी, मौलिकृत, सचित्त-परिज्ञात, आरम्भ-परिज्ञात, प्रेष्य-परिज्ञात, उद्दिष्ट-परिज्ञात और श्रमणभूत पर्यन्त हैं ।

२. लोकान्त से एक सौ ग्यारह योजन पर अबाधित ज्योतिष्क प्रज्ञप्त है ।

३. जम्बुद्वीप-द्वीप में मन्दर-पर्वत से ग्यारह सौ इक्कीस योजन तक ज्योतिष्क संचरण करता है ।

४. श्रमण भगवान् महावीर के ग्यारह गणधर थे । जैसे कि—
इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्म, मंडित, मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचलभ्राता, मेतार्य, प्रभास ।

५. मूल नक्षत्र के ग्यारह तारे प्रज्ञप्त है ।

६. हेट्ठिमगेविज्जयाणं देवाणं एक्कारसुत्तरं गेविज्जविमाणसतं भवइत्ति मक्खायं।

६. अधस्तन ग्रैवेयक देवों के विमान एक सौ ग्यारह हैं—ऐसा आख्यात है।

७. मंदरे णं पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

७. मन्दर-पर्वत धरणीतल से शिखर-तल तक ऊँचाई की अपेक्षा ग्यारहवें भाग से परिहीन/न्यूनतर प्रज्ञप्त है।

८. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८. इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैर-यिकों की ग्यारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

९. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९. पाँचवीं पृथिवी [धूमप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की ग्यारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. कुछेक असुरकुमार देवों की ग्यारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं एक्कारस पलिओव-माइं ठिई पण्णत्ता।

११. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की ग्यारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. लान्तक कल्प में कुछेक देवों की ग्यारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. जे देवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभं बंभकंतं बंभवण्णं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं बंभसिट्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३. जो देव ब्रह्म, सुब्रह्म, ब्रह्मावर्त, ब्रह्म-प्रभ, ब्रह्मकान्त, ब्रह्मवर्ण, ब्रह्मलेश्य, ब्रह्मध्वज, ब्रह्मशृंग, ब्रह्मसृष्ट, ब्रह्म-कूट और ब्रह्मोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः ग्यारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. ते णं देवा एक्कारसण्हं अद्ध-मासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१४. वे देव ग्यारह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं।

१५. तेसि णं देवाणं एक्कारसण्हं वास-सहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१५. उन देवों के ग्यारह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१६. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण-मंतं करिस्संति।

१६. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो ग्यारह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे।

# बारसमो समवाओ

१. बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
मासिआ भिक्खुपडिमा, दोमासिआ भिक्खुपडिमा, तेमासिआ भिक्खुपडिमा, चाउमासिआ भिक्खुपडिमा, पंचमासिआ भिक्खुपडिमा, छम्मासिआ भिक्खुपडिमा, सत्तमासिआ भिक्खुपडिमा, पढमा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, तच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, अहोराइया भिक्खुपडिमा, एगराइया भिक्खुपडिमा।

२. दुवालसविहे संभोगे पण्णत्ते, तं जहा—
उवही सुअभत्तपाणे
अंजलीपग्गहेत्ति य।
दायणे य निकाए अ,
अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे॥
कितिकम्मस्स य करणे,
वेयावच्चकरणे इअ।
समोसरणं संनिसेज्जा य,
कहाए अ पबंधणे॥

# बारहवां समवाय

१. भिक्षु-प्रतिमाएँ बारह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
[एक] मासिक भिक्षु-प्रतिमा—अभिगृहीत एक विधि से आहार, दो मासिक भिक्षु-प्रतिमा, तीन मासिक भिक्षु-प्रतिमा, चार मासिक भिक्षु-प्रतिमा, पाँच मासिक भिक्षु-प्रतिमा, छह मासिक भिक्षु-प्रतिमा, सात मासिक भिक्षु-प्रतिमा, प्रथम सप्तरात्रिदिवा भिक्षु-प्रतिमा, द्वितीय सप्तरात्रिदिवा भिक्षु-प्रतिमा, तृतीय सप्तरात्रिदिवा भिक्षु-प्रतिमा, अहोरात्रिक भिक्षु-प्रतिमा, एकरात्रिक भिक्षु-प्रतिमा।

२. सम्भोग बारह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
उपधि/उपकरण, श्रुत/आगम, भक्त-पान/भोजन-पानी, अंजली-प्रग्रह/करबद्ध नमन, दान/आदान-प्रदान, निकाचन/आमन्त्रण, अभ्युत्थान/अभिवादन, कृतिकर्म-करण/नियत वन्दन-व्यवहार, वैयावृत्यकरण/सेवाभाव, समवसरण/धर्मसभा, संनिषद्या/संपृच्छना, कथा-प्रबन्धन/प्रवचन।

३. दुवालसावत्ते कितिकम्मे पण्णत्तं, तं जहा—
दुओणयं जहाजायं,
कितिकम्मं बारसावयं।
चउसिरं तिगुत्तं च,
दुपवेसं एगनिक्खमणं॥

३. कृति-कर्म/वन्दन-क्रिया-विधि के बारह आवर्त्त प्रज्ञप्त है। जैसेकि— दो अवनत, यथाजात कृतिकर्म, बारह आवर्त्त, चार शिर, तीन गुप्ति, दो प्रवेश और एक निष्क्रमण।

४. विजया णं रायहाणी दुवालस जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता।

४. विजया राजधानी बारह शत-सहस्र/बारह लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है।

५. रामे णं बलदेवे दुवालस वास-सयाइं सव्वाउयं पालित्ता देवत्तं गए।

५. बलदेव राम ने बारह सौ वर्ष की सम्पूर्ण आयु पालकर देवत्व प्राप्त किया।

६. मंदरस्स णं पव्वयस्स चूलिआ मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

६. मन्दर-पर्वत की चूलिका का मूल-भाग बारह योजन विष्कम्भक/चौड़ा प्रज्ञप्त है।

७. जंबूदीवस्स णं दीवस्स वेइया मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

७. जम्बुद्वीप-द्वीप की वेदिका मूल में बारह योजन विष्कम्भक/चौड़ी प्रज्ञप्त है।

८. सव्वजहण्णिआ राई दुवालस-मुहुत्तिआ पण्णत्ता।

८. सर्व जघन्य/सबसे छोटी रात्रि बारह मुहूर्त की प्रज्ञप्त है।

९. सव्वजहण्णिओ दिवसो दुवालस-मुहुत्तिओ पण्णत्तो।

९. सर्व जघन्य/सबसे छोटा दिवस बारह मुहूर्त का प्रज्ञप्त है।

१०. सव्वट्ठसिद्धस्स णं महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभिअग्गाओ दुवालस जोयणाइं उड्ढं उप्पतिता ईसिपब्भारा नामं पुढवी पण्णत्ता।

१०. सर्वार्थसिद्ध महाविमान की ऊपरीतल स्तूपिका से बारह योजन ऊपर ईषत्-प्राग्भार नामक पृथिवी प्रज्ञप्त है।

११. ईसिपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा —
ईसित्ति वा ईसिपब्भारत्ति वा तणूइ वा तणुयतरित्ति वा सिद्धित्ति वा सिद्धालएत्ति वा मुत्तीति वा मुत्तालएत्ति वा बंभेत्ति वा बंभवडेंसएत्ति वा लोकपडिपूरणेत्ति वा लोगग्गचूलिआई वा।

११. ईषत्-प्राग्भार पृथिवी के बारह नाम प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
ईषत्, ईषत्-प्राग्भार, तनु, तनुतरी, सिद्धि, सिद्धालय, मुक्ति, मुक्तालय, ब्रह्म, ब्रह्मावतंसक, लोक-प्रतिपूरणा और लोकाग्रचूलिका।

१२. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की बारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३. पांचवी पृथिवी [ धूमप्रभा ] पर कुछेक नैरयिकों की बारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४. कुछेक असुरकुमार देवों की बारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१५. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की बारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१६. लान्तक कल्प में कुछेक देवों की बारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१७. जे देवा महिंदं महिंदज्झयं कंबुं कंबुग्गीवं पुंखं सुपुंखं महापुंखं पुंडं सुपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१७. जो देव माहेन्द्र, माहेन्द्रध्वज, कम्बु, कम्बुग्रीव, पुंख, सुपुंख, महापुंख, पुंड, सुपुंड, महापुंड, नरेन्द्र, नरेन्द्रकान्त और नरेन्द्रोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न है, उन देवों की उत्कृष्टतः बारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१८. ते णं देवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससति वा ।

१८. वे देव बारह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१९. तेसि णं देवाणं बारसहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१९. उन देवों के बारह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२०. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्भि-स्संति बुज्भिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण-मंतं करिस्संति ।

२० कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो बारह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# तेरसमो समवाओ

# तेरहवां समवाय

१. तेरस किरियाठाणा पण्णत्ता तं जहा—
अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दिट्ठिविप्परिआसिआ-दंडे मुसावायवत्तिए अदिण्णादाण-वत्तिए अज्झत्थिए माणवत्तिए मित्तदोसत्तिए मायावत्तिए लोभ-वत्तिए ईरियावहिए नामं तेरसमे।

१. क्रियास्थान/हिंसा-साधन तेरह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
अर्थ-दण्ड, अनर्थ-दण्ड, हिंसा-दण्ड, अकस्मात्-दण्ड, दृष्टि-विपर्यास-दण्ड, मृषावादवर्तिक, अदत्तादानवर्तिक, आध्यात्मिक, मानवर्तिक, मित्र-द्वेप-वर्तिक, मायावर्तिक, लोभवर्तिक और ईर्यापथिक नामक तेरह।

२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थडा पण्णत्ता।

२. सौधर्म-ईशान कल्प में तेरह विमान-प्रस्तर प्रज्ञप्त हैं।

३. सोहम्मवडेंसगे णं विमाणे णं अद्ध-तेरसजोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ते।

३. सौधर्मावतंसक विमान अर्ध-त्रयोदश शत-सहस्र/साढ़े बारह लाख योजन आयाम-विष्कम्भक / विस्तृत प्रज्ञप्त है।

४. एवं ईसाणवडेंसगे वि।

४. इसी प्रकार ईशानावतंसक भी है।

५. जलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्खजोणि-आणं अद्धतेरस जाइकुलकोडी-जोणीपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता।

५. जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीवों की योनि की दृष्टि से अर्द्ध-त्रयोदश शतसहस्र/साढ़े बारह लाख जाति और कुल की कोटियाँ प्रज्ञप्त हैं।

६. पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता।

६. प्राणायु-पूर्व के तेरह वस्तु/अधिकार प्रज्ञप्त हैं।

७. गब्भवक्कंति-अपंचेंदिअतिरिक्ख-जोणिआणं तेरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—
सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चा-मोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालिअसरीरकायपओगे ओरालिअ-मीससरीरकायपओगे वेउव्विअ-सरीरकायपओगे वेउव्विअमीस-सरीरकायपओगे कम्मसरीरकाय-पओगे ।

७. गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों के प्रयोग/परिस्पंदन तेरह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
सत्यमनःप्रयोग, मृषामनःप्रयोग, सत्यमृषामनःप्रयोग, असत्यामृषामनः प्रयोग, सत्यवचनप्रयोग, मृषावचन-प्रयोग, सत्यमृषावचनप्रयोग, असत्या-मृषावचनप्रयोग, औदारिकशरीर-कायप्रयोग, औदारिकमिश्रशरीर-कायप्रयोग, वैक्रियशरीरकायप्रयोग, वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग और कार्मणशरीरकायप्रयोग ।

८. सूरमंडले जोयणेणं तेरसहिं एगसट्ठिभागेहिं जोयणस्स ऊणे पण्णत्ते ।

८. सूर्यमण्डल योजन के इकसठ भागों में से तेरह न्यून अर्थात् योजन का अड़तालीसवाँ भाग प्रज्ञप्त है ।

९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. पाँचवीं पृथिवी [ धूमप्रभा ] पर कुछेक नैरयिकों की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. कुछेक असुरकुमार देवों की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. लान्तक कल्प में कुछेक देवों की तेरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. जे देवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जज्झयं वज्जसिंगं वज्जसिट्ठं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडेंसगं वइरं वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंतं वइरवण्णं वइरलेसं वइरज्झयं वइरसिंगं वइरसिट्ठं वइरकूडं वइरुत्तरवडेंसगं लोगं लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकंतं लोगवण्णं लोगलेसं लोगज्झयं लोगसिंगं लोगसिट्ठं लोगकूडं लोगुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४. जो देव वज्र, सुवज्र, वज्रावर्त, वज्रप्रभ, वज्रकान्त, वज्रवर्ण, वज्रलेश्य, वज्ररूप, वज्रशृंग, वज्रसृष्ट, वज्रकूट, वज्रोत्तरावतंसक, वैर, वैरावर्त, वैरप्रभ, वैरकान्त, वैरवर्ण, वैरलेश्य, वैररूप, वैरशृंग, वैरसृष्ट, वैरकूट, वैरोत्तरावतंसक, लोक, लोकावर्त, लोकप्रभ, लोककान्त, लोकवर्ण, लोकलेश्य, लोकरूप, लोकशृंग, लोकसृष्ट, लोककूट और लोकोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः तेरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. ते णं देवा तेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१५. वे देव तेरह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं।

१६. तेसि णं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१६. उन देवों के तेरह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१७. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१७. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो तेरह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे।

## चउद्दसमो समवाओ

१. चउद्दस भूअग्गामा पण्णत्ता, तं जहा—
सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तया, बादरा पज्जत्तया, बेइंदिया अपज्जत्तया, बेइंदिया पज्जत्तया, तेइंदिया अपज्जत्तया, तेइंदिया पज्जत्तया, चउरिंदिया अपज्जत्तया, चउरिंदिया पज्जत्तया, पंचिंदिया असण्णिअपज्जत्तया, पंचिंदिया असण्णिपज्जत्तया, पंचिंदिया सण्णिअपज्जत्तया, पंचिंदिया सण्णिपज्जत्तया।

२. चउद्दस पुव्वा पण्णत्ता, तं जहा—
उप्पायपुव्वमग्गेणियं,
च तइयं च वीरियं पुव्वं।
अत्थीनत्थिपवायं,
तत्तो नाणप्पवायं च॥
सच्चप्पवायपुव्वं,
तत्तो आयप्पवायपुव्वं च।
कम्मप्पवायपुव्वं,
पच्चक्खाणं भवे नवमं॥
विज्जाअणुप्पवायं,
अवंझपाणाउ बारसं पुव्वं।
तत्तो किरियविसालं,
पुव्वं तह बिंदुसारं च॥

## चौदहवां समवाय

१. भूतग्राम/जीव-समास चौदह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
सूक्ष्म-अपर्याप्तक/अपूर्ण, सूक्ष्म-पर्याप्तक/पूर्ण, बादर अपर्याप्तक, बादर पर्याप्तक, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक द्वीन्द्रिय पर्याप्तक, त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक, त्रीन्द्रिय पर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक, पंचेन्द्रिय असंज्ञी अपर्याप्तक, पंचेन्द्रिय असंज्ञी पर्याप्तक, पंचेन्द्रिय संज्ञी अपर्याप्तक और पंचेन्द्रिय-संज्ञी पर्याप्तक।

२. पूर्व / दृष्टिवाद-अंग-आगम-विभाग चौदह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
उत्पाद-पूर्व, अग्रायणीय-पूर्व, वीर्य-पूर्व, अस्तिनास्ति प्रवाद-पूर्व, ज्ञान-प्रवाद-पूर्व, सत्य-प्रवाद-पूर्व, आत्म-प्रवाद-पूर्व, कर्म-प्रवाद-पूर्व, प्रत्याख्यान प्रवाद-पूर्व, विद्यानुवाद/पूर्व, अवन्ध्य पूर्व, प्राणावाय-पूर्व, क्रिया-विशाल पूर्व और लोक-बिन्दुसार-पूर्व।

३. अग्गेणीअस्स णं पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पण्णत्ता।

३. अग्रायणीय-पूर्व के चौदह वस्तु/अधिकार प्रज्ञप्त है।

४. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपया होत्था।

४. श्रमण भगवान् महावीर की चौदह हजार श्रमणों की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी।

५. कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—
मिच्छदिट्ठी सासायणसम्मदिट्ठि सम्मामिच्छदिट्ठि अविरयसम्मदिट्ठि विरयाविरए पमत्तसजए अप्पमत्तसंजए नियट्टिबायरे अनियट्टिबायरे सुहुमसंपराए—उवसमए वा खवए वा, उवसंतमोहे खीणमोहे सजोगी केवली अजोगी केवली।

५. कर्म-विशुद्धि-मार्ग की अपेक्षा से जीवस्थान/गुणस्थान चौदह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, अविरत सम्यग्दृष्टि विरताविरत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, निवृत्तिबादर, अनिवृत्तिबादर, सूक्ष्मसम्पराय—उपशामक या क्षपक, उपशान्तमोह, क्षीणमोह, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली।

६. भरहेरवयाओ णं जीवाओ चउद्दस-चउद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि य एगुत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

६. भरत और ऐरवत की जीवा/लम्बाई चौदह-चौदह हजार, चार सौ एक योजन और योजन के उन्नीस भागों में से छह भाग कम आयाम/लम्बी प्रज्ञप्त हैं।

७. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउद्दस रयणा पण्णत्ता, तं जहा—
इत्थीरयणे सेणावइरयणे गाहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्डइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे दंडरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे।

७. प्रत्येक चातुरन्त/चतुर्दिक चक्रवर्ती राजा के चौदह रत्न प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
स्त्रीरत्न, सेनापतिरत्न, गृहपतिरत्न, पुरोहितरत्न, वर्धकीरत्न, अश्वरत्न, हस्तिरत्न, असिरत्न, दंडरत्न, चक्ररत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, मणिरत्न और काकिणिरत्न।

८. जंबुद्दीवे णं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेणं लवणसमुद्द समप्पेंति, तं जहा—
गंगा सिंधू रोहिआ रोहिअंसा हरी हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता नारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई।

८. जम्बुद्वीप द्वीप में चौदह महानदियाँ पूर्व तथा पश्चिम से लवण समुद्र में समर्पित होती हैं। जैसे कि—
गंगा-सिन्धु, रोहिता-रोहितांसा, हरी-हरीकान्ता सीता-सीतोदा, नरकान्ता-नारीकान्ता, सुवर्णकूला-रुप्यकूला, रक्ता और रक्तवती।

९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की चौदह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. पाँचवीं पृथिवी [धूमप्रभा] पर नैरियकों की चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११. कुछेक असुरकुमार देवों की चौदह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. सौधर्म और ईशान कल्प में कुछेक देवों की चौदह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. लंतए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३. लान्तक कल्प में कुछेक देवों की चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. महासुक्के कप्पे देवाणं जहण्णेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४. महाशुक्र कल्प में कुछेक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. जे देवा सिरिकंतं सिरिमहियं सिरिसोमनसं लंतयं काविट्ठं महिंदं महिंदोकंतं महिंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१५. जो देव श्रीकान्त श्रीमहित, श्रीसौमनस, लान्तक, कापिष्ठ, महेन्द्र, महेंद्रावकान्त और महेन्द्रोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. ते णं देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१६. वे देव चौदह अर्धमासों / पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते है । उच्छ्वास लेते है, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१७. तेसि णं देवाणं चउद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७. उन देवों के चौदह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति ।

१८. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो चौदह भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# पण्णरसमो समवाओ

१. पण्णरस परमाहम्मिआ पण्णत्ता,
तं जहा—
अंबे अंबरिसी चेव,
सामे सबलेत्ति यावरे।
रुद्दोवरुद्दकाले य,
महाकालेत्ति यावरे॥
असिपत्ते धणु कुम्भे,
वालुए वेयरणीति य।
खरस्सरे महाघोसे,
एमेते पण्णरसाहिआ॥

२. णमी णं अरहा पण्णरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३. धुवराहू णं बहुलपक्खस्स पाडिवयं पण्णरसइ भागं पण्णरसइ भागेणं चंदस्स लेसं आवरेत्ता णं चिट्ठति, तं जहा—
पढमाए पढमं भागं, बीआए बीयं भागं, तइआए तइयं भागं, चउत्थीए चउत्थं भागं, पंचमीए पंचमं भागं, छट्ठीए छट्ठं भागं, सत्तमीए सत्तमं भागं, अट्ठमीए अट्ठमं भागं, नवमीए नवमं भागं, दसमीए दसमं भागं, एक्कारसीए एक्कारसमं भागं, बारसीए बारसमं भागं, तेरसीए तेरसमं भागं, चउद्दसीए चउद्दसमं भागं, पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं।

# पन्द्रहवां समवाय

१. परमाधार्मिक देव पन्द्रह प्रज्ञप्त हैं।
जैसे कि—
अम्ब, अम्बरिषी, श्याम, शवल, रुद्र, उपरुद, काल, महाकाल, असिपत्र, धनु, कुम्भ, वालुका, वैतरणी, खरस्वर और महाघोष।

२. अर्हत् नमि ऊँचाई की दृष्टि से पन्द्रह धनुष ऊँचे थे।

३. ध्रुवराहु वहुल-पक्ष/कृष्ण-पक्ष की प्रतिपदा से चन्द्र लेश्या के पन्द्रहवें-पन्द्रहवें भाग का आवरण करता है।
जैसे कि—
प्रथमा/प्रतिपदा को प्रथम भाग, द्वितीया को दो भाग, तृतीया को तीन भाग, चतुर्थी को चार भाग, पंचमी को पांच भाग, षष्ठी को छह भाग, सप्तमी को सात भाग, अष्टमी को आठ भाग, नवमी को नौ भाग, दशमी को दश भाग, एकादशी को ग्यारह भाग, द्वादशी को बारह भाग, त्रयोदशी को तेरह भाग, चतुर्दशी को चौदह भाग, पंचदशी/अमावस्या को पन्द्रह भाग का आवरण करता है।

४. तं चेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठति, तं जहा—
पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं।

४. वही [ध्रुव-राहु] शुक्ल-पक्ष में उपदर्शन/प्रकाशित कराता रहता है। जैसे कि—
प्रथमा को प्रथम भाग से लेकर पंचदशी/पूर्णमासी को पन्द्रह भाग पर्यन्त उपदर्शन कराता रहता है।

५. छ णक्खता पण्णरसमुहुत्तसंजुत्ता पण्णत्ता, तं जहा—
सतभिसय भरणि अद्दा,
असलेसा साइ तह य जेट्ठा य।
एते छण्णक्खत्ता,
पण्णरसमुहुत्तसंजुत्ता ॥

५. पन्द्रह मुहूर्त संयुक्त नक्षत्र छह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
शतभिषक्, भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, स्वाति और ज्येष्ठा—ये छह नक्षत्र पन्द्रह मुहूर्त संयुक्त रहते हैं।

६. चेत्तासोएसु मासेसु पण्णरसमुहुत्तो दिवसो भवति।

६. चैत्र और आश्विन माह में पन्द्रह मुहूर्त का दिवस होता है।

७. एवं चेत्तासोएसु मासेसु पण्णरसमुहुत्ता राई भवति।

७. इसी प्रकार चैत्र और आश्विन माह में पन्द्रह मुहूर्त की रात्रि होती है।

८. विज्जाअणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पण्णरस वत्थू पण्णत्ता।

८. विद्यानुवाद-पूर्व के वस्तु-अधिकार पन्द्रह प्रज्ञप्त हैं।

९. मणूसाणं पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—
१. सच्चमणपओगे, २. मोसमणपओगे, ३. सच्चामोसमणपओगे, ४. असच्चामोसमणपओगे, ५. सच्चवइपओगे, ६. मोसवइपओगे, ७. सच्चामोसवइपओगे, ८. असच्चामोसवइ-पओगे, ९. ओरालियसरीरकायपओगे, १०. ओरालियमोससरीरकायपओगे, ११. वेउव्वियसरीरकायपओगे, १२. वेउव्वियमोससरीर-

९. मनुष्यों के प्रयोग/परिस्पन्दन पन्द्रह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१. सत्यमनःप्रयोग, २. मृषामनःप्रयोग ३. सत्यमृषामनःप्रयोग, ४. असत्यमृषामनःप्रयोग ५. सत्यवचनप्रयोग, ६. मृषावचनप्रयोग, ७. सत्यमृषावचनप्रयोग, ८. असत्यमृषावचनप्रयोग, ९. औदारिक शरीर-कायप्रयोग, १०. औदारिक मिश्र शरीर-कायप्रयोग, ११. वैक्रिय शरीरकायप्रयोग, १२. वैक्रियमिश्र शरीरकाय-

कायपओगे, १३. आहारयसरीर-कायपओगे, १४. आहारयमीस-सरीरकायपओगे, १५. कम्मय-सरीरकायपओगे ।

प्रयोग, १३. आहारक शरीरकाय-प्रयोग, १४. आहारकमिश्र शरीरकाय प्रयोग और १५. कार्मण शरीरकाय-प्रयोग ।

१०. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की पन्द्रह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. पाँचवीं पृथिवी [ धूमप्रभा ] पर कुछेक नैरयिकों की पन्द्रह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. कुछेक असुरकुमार देवों की पन्द्रह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं पण्णरस पलिओव-माइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की पन्द्रह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. महासुक्के कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. महाशुक्र कल्प में कुछेक देवों की पन्द्रह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. जे देवा णंदं सुणंदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंद-कूडं णंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देव-त्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. जो देव नन्द, सुनन्द, नन्दावर्त, नन्द-प्रभ, नन्दकान्त, नन्दवर्ण, नन्दलेश्य, नन्दध्वज, नन्दश्रृंग, नन्दसृष्ट, नन्द-कूट और नन्दोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः पन्द्रह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. ते णं देवा पण्णरसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊस-संति वा नीससंति वा ।

१६. वे देव पन्द्रह अर्धमासों में आन/आहार लेते हैं, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१७. तेसि णं देवाणं पण्णरसहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७. उन देवों के पन्द्रह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पण्णरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१८. कुछेक भवसिद्धिक जीव हैं, जो पन्द्रह भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# सोलसमो समवाओ

१. सोलस य गाहा-सोलसगा पण्णत्ता, तं जहा—
समए वेयालिए उवसग्गपरिण्णा इत्थिपरिण्णा निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहत्तहिए गंथे जमईए गाहा।

२. सोलस कसाया पण्णत्ता, तं जहा—
अणंताणुबंधी कोहे, अणंताणुबंधी माणे, अणंताणुबंधी माया, अणंताणुबंधी लोभे, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे, अपच्चक्खाणकसाए माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे माणे, पच्चक्खाणावरणा माया, पच्चक्खाणावरणे लोभे, संजलणे कोहे, संजलणे माणे, संजलणा माया, संजलणे लोभे।

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेया पण्णत्ता, तं जहा—
मंदर-मेरु-मणोरम,
सुदंसण सयंपभे य गिरिराया।
रयणुच्चय पियदंसण,
मज्झे लोगस्स नाभी य ॥

# सोलहवां समवाय

१. गाथा-षोडषक/सूत्रकृतांग के अध्ययन सोलह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१. समय, २. वैतालीय, ३. उपसर्ग-परिज्ञा, ४. स्त्री-परिज्ञा, ५. नरक-विभक्ति, ६. महावीरस्तुति, ७. कुशीलपरिभाषित, ८. वीर्य, ९. धर्म, १०. समाधि, ११. मार्ग, १२. समवसरण, १३. याथातथ्य, १४. ग्रन्थ, १५. यमकीय और १६. सोलहवां गाथा।

२. कषाय सोलह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
अनन्तानुबन्धी क्रोध, अनन्तानुबन्धी मान, अनन्तानुबन्धी माया, अनन्तानुबन्धी लोभ, अप्रत्याख्यानकषाय-क्रोध, अप्रत्याख्यानकषाय मान, अप्रत्याख्यानकषाय माया, अप्रत्याख्यानकषाय लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध, प्रत्याख्यानावरण मान, प्रत्याख्यानावरण माया, प्रत्याख्यानावरण लोभ, संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान, संज्वलन माया और संज्वलन लोभ।

३. मन्दर-पर्वत के सोलह नाम प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१. मन्दर, २. मेरु, ३. मनोरम, ४. सुदर्शन, ५. स्वयम्प्रभ, ६. गिरिराज, ७. रत्नोच्चय, ८. प्रियदर्शन, ९.

अत्थे अ सूरियावत्ते,
सूरियावरणेत्ति य ।
उत्तरे य दिसाई य,
वडेंसे इअ सोलसे ।।

लोकमध्य, १०. लोकनाभि, ११. अर्थ, १२. सूर्यावर्त, १३. सूर्यावरण, १४. उत्तर, १५. दिशादि और १६. अवतंस ।

४. पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-संपदा होत्था ।

४. पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व की सोलह हजार श्रमणों की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी ।

५. आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ।

५. आत्म-प्रवाद पूर्व के वस्तु/अधिकार सोलह प्रज्ञप्त हैं ।

६. चमरबलीणं ओवारियालेणे सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

६. चमर-बली का अवतारिकालयन सोलह हजार योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

७. लवणे णं समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्ढीए पण्णत्ते ।

७. लवण-समुद्र में उत्सेध/उफान की वृद्धि सोलह हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

८. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की सोलह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. पाँचवीं पृथिवी [ धूमप्रभा ] पर कुछेक नैरयिकों की सोलह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. कुछेक असुरकुमार देवों की सोलह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की सोलह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइ-याणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. महाशुक्र कल्प में कुछेक देवों की सोलह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. जे देवा आवत्तं वियावत्त नंदियावत्त महाणंदियावत्तं अंकुसं अंकुसपलव भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. जो देव आवर्त, व्यावर्त, नन्द्यावर्त, महानन्द्यावर्त, अंकुश, अंकुशप्रलम्ब, भद्र, सुभद्र, महाभद्र, सर्वतोभद्र और भद्रोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः सोलह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. ते णं देवा सोलसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१४. वे देव सोलह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१५. तेसि णं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५. उन देवों को सोलह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१६. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१६. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो सोलह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# सत्तरसमो समवाओ

१. सत्तरसविहे असंजमे पण्णत्ते तं जहा—
पुढवीकायअसंजमे, आउकाय-असंजमे, तेउकायअसंजमे, वाउकायअसंजमे, वणस्सइकायअसंजमे, बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसंजमे, चउरिंदियअसंजमे, पंचिंदियअसंजमे, अजीवकायअसंजमे, पेहाअसंजमे, उपेहाअसंजमे, अवहट्टुअसंजमे, अप्पमज्जणाअसंजमे मणअसंजमे, वइअसंजमे, काय-असंजमे।

२. सत्तरसविहे संजमे पण्णत्ते तं जहा—
पुढवीकायसंजमे, आउकायसंजमे, तेउकायसंजमे, वाउकायसंजमे, वणस्सइकायसंजमे, बेइंदियसंजमे, तेइंदियसंजमे, चउरिंदियसंजमे, पंचिंदियसंजमे, अजीवकायसंजमे, पेहासंजमे, उपेहासंजमे, अवहट्टु-संजमे, पमज्जणासंजमे, मणसंजमे, वइसंजमे, कायसंजमे।

# सतरहवां समवाय

१. असंयम सतरह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१. पृथिवीकाय-असंयम, २. अप्काय-असंयम, ३. तेजस्काय-असंयम, ४. वायुकाय-असंयम, ५. वनस्पति-काय-असंयम, ६. द्वीन्द्रिय-असंयम, ७. त्रीन्द्रिय-असंयम, ८. चतुरिन्द्रिय-असंयम, ९. पंचेन्द्रिय-असंयम, १०. अजीवकाय-असंयम, ११. प्रेक्षा-असंयम, १२. उपेक्षा-असंयम, १३. अपहृत्य-असंयम, १४. अप्रमार्जना-असंयम, १५. मनः असंयम, १६. वचन-असंयम, १७. काय-असंयम।

२. संयम सतरह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१. पृथिवीकाय-संयम, २. अप्काय-संयम, ३. तेजस्काय-संयम, ४. वायु-काय-संयम, ५. वनस्पतिकाय-संयम, ६. द्वीन्द्रिय-संयम, ७. त्रीन्द्रिय-संयम, ८. चतुरिन्द्रिय-संयम, ९. पंचेन्द्रिय-संयम, १०. अजीवकाय-संयम, ११. प्रेक्षा-संयम, १२. उपेक्षा-संयम, १३. अपहृत्य-संयम, १४. प्रमार्जना-संयम, १५. मनः संयम, १६. वचन-संयम, १७. काय-संयम।

३. माणुसुत्तरे णं पव्वए सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

३. मानुषोत्तर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है।

४. सव्वेसिपि णं वेलंधर-अणुवेलंधर-णागराईणं आवासपव्वया सत्तरस-एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

४. सर्व वेलन्धर और अनुवेलन्धर नाग-राजाओं के आवास-पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं।

५. लवणे णं समुद्दे सत्तरस जोयण-सहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

५. लवण-समुद्र का सर्वाग्र/शिखर सतरह हजार योजन प्रज्ञप्त है।

६. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सारिरेगाइं सत्तरस जोयणसह-स्साइं उड्ढं उप्पतित्ता ततो पच्छा चारणाणं तिरियं गती पवत्तति।

६. इस रत्नप्रभा पृथिवी में वहुसम/प्रायः रमणीय भूमि भाग से सतरह हजार योजन से अधिक ऊपर उठकर तत्पश्चात् चारण की तिर्यक् गति प्रवर्तित होती है।

७. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुर रण्णो तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

७. असुरराज असुरेन्द्र चमर का तिगिं-छिकूट-उत्पात-पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है।

८. वलिस्स णं वतिरोयणिंदस्स वति-रोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

८. असुरेन्द्र वलि का रुचकेन्द्र-उत्पात-पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है।

९. सत्तरसविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—
आवीईमरणे ओहिमरणे आयं-तियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बाल-मरणे पंडितमरणे बालपंडितमरणे

९. मरण सतरह प्रकार का प्रज्ञप्त है जैसे कि—
आवीचि-मरण / अविच्छेद-मरण, अवधि-मरण/मर्यादा-मरण, आत्य-न्तिक-मरण/अद्यतन-मरण, वलन्-मरण/अव्रत-मरण, अन्तःशल्य-

छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहास-मरणे गिद्धपट्ठमरणे भत्तपच्च-क्खाणमरणे इंगिणिमरणे पाओ-वगमणमरणे।

मरण/संकल्पपूर्वक-मरण, तद्भव-मरण/तात्कालिक-मरण, बाल-मरण-अज्ञान-मरण, पण्डित-मरण/समाधि-मरण, बाल-पण्डित-मरण/देशविरत-मरण, छद्मस्थ-मरण, केवलि-मरण, वैहायस-मरण/अकाल-मरण, गृद्ध्र-पृष्ठ-मरण/गलित-मरण, भक्त-प्रत्याख्यान-मरण/संलेखना, इंगिनी-मरण/स्वावलम्बी-मरण, पादो-पगमन-मरण/ध्यानस्थ-मरण।

१०. सुहुमसंपराए णं भगवं सुहुमसंप-रायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्म-पगडीओ णिबंधति, तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणे, सुय-णाणावरणे, ओहिणाणावरणे, मणपज्जवणाणावरणे, केवल-णाणावरणे, चक्खुदंसणावरणे, अचक्खुदंसणावरणे, ओहीदंसणा-वरणे, केवलदंसणावरणे, साया-वेयणिज्जं, जसोकित्तिनामं, उच्चागोयं, दाणंतरायं, लाभंत-रायं, भोगंतरायं, उवभोगंतरायं, वीरिअअंतरायं।

१०. सूक्ष्म-सम्पराय-भाव में वर्तमान सूक्ष्म-सम्पराय भगवान् सतरह कर्म-प्रकृतियों का बन्धन करते हैं। जैसे कि—
१. आभिनिबोधिक-ज्ञानावरण, २. श्रुतज्ञानावरण, ३. अवधिज्ञाना-वरण, ४. मनःपर्ययज्ञानावरण, ५. केवलज्ञानावरण, ६. चक्षुर्दर्शना-वरण, ७. अचक्षुर्दर्शनावरण, ८. अवधिदर्शनावरण, ९. केवल-दर्शनावरण, १०. सातावेदनीय, ११. यशस्कीर्तिनामकर्म, १२. उच्च-गोत्र, १३. दानान्तराय, १४. लाभा-न्तराय, १५. भोगान्तराय, १६. उप-भोगान्तराय और १७. वीर्यान्तराय।

११. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की सतरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. पंचमाए पुढवीए नेरइयाणं उक्को-सेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. पाँचवीं पृथिवी [ धूमप्रभा ] पर कुछेक नैरयिकों की जघन्यतः सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. छठी पृथिवी [तमःप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की जघन्यतः सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. कुछेक असुरकुमार देवों की सतरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की सतरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. महासुक्के कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६. महाशुक्र कल्प में देवों की उत्कृष्टतः सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७. सहस्सारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१७. सहस्रार कल्प में देवों की जघन्यतः सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८. जे देवा सामाणं, सुसामाणं, महासामाणं, पउमं, महापउमं, कुमुदं, महाकुमुदं, नलिणं, महानलिणं, पोंडरीअं, महापोंडरीअं, सुक्कं, महासुक्कं, सीहं, सीहोकंतं, सीहवीअं, भाविअं, विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१८. जो देव सामान, सुसामान, महासामान, पद्म, महापद्म, कुमुद, महाकुमुद, नलिन, महानलिन, पौण्डरीक, महापौण्डरीक, शुक्र, महाशुक्र, सिंह, सिंहकान्त, सिंहवीज और भावित विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९. ते णं देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१९. वे देव सतरह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं. पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

२०. तेसि णं देवाणं सत्तरसहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२०. उन देवों के सतरह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२१. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

२१. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो सतरह भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# अट्ठारसमो समवाओ

१. अट्ठारसविहे बंभे पण्णत्ते, तं जहा—

ओरालिए कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ, नोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।

ओरालिए कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ, नोवि अण्णं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।

ओरालिए कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ, नोवि अण्णं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।

दिव्वे कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ, नोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।

दिव्वे कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ, नोवि अण्णं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ।

# अठारहवां समवाय

१. ब्रह्मचर्य अठारह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

औदारिक/शारीरिक काम-भोगों का न तो स्वयं मन से सेवन करता है, न ही अन्य को मन से सेवन कराता है और न मन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

औदारिक/शारीरिक काम-भोगों का न तो स्वयं वचन से सेवन करता है, न ही अन्य को वचन से सेवन कराता है और न वचन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

औदारिक/शारीरिक काम-भोगों का न तो स्वयं काया से सेवन करता है, न ही अन्य को काया से सेवन कराता है और न काया से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

दिव्य/दैविक काम-भोगों का न तो स्वयं मन से सेवन करता है, न ही अन्य को मन से सेवन कराता है और न मन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

दिव्य/दैविक काम-भोगों का न तो स्वयं वचन से सेवन करता है, न ही अन्य को वचन से सेवन कराता है और न वचन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

| | |
|---|---|
| दिव्वे कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ, नोवि अण्णं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ। | दिव्य/दैविक काम-भोगों का न तो स्वयं काया से सेवन करता है, न ही अन्य को काया से सेवन कराता है और न काया से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है। |
| २. अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था। | २. अर्हत् अरिष्टनेमि की अठारह हजार साधुओं की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी। |
| ३. समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं सखुड्डयविअत्ताणं अट्ठारस ठाणा पण्णत्ता। तं जहा—<br>वयछक्कं कायछक्कं,<br>अकप्पो गिहिभायणं।<br>पलियंक निसिज्जा य,<br>सिणाणं सोभवज्जणं॥ | ३. श्रमण भगवान् महावीर द्वारा सक्षुद्रक-व्यक्त श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए अठारह स्थान प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—<br>छह व्रत, छह काय, अकल्प, गृहिभाजन, पर्यंक, निषद्या, स्नान, शोभा-वर्जन। |
| ४. आयारस्स णं भगवतो सचूलिआगस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं। | ४. भगवान् की आचार-चूलिका के अठारह हजार पद प्रज्ञप्त हैं। |
| ५. बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तं जहा—<br>१. बंभी, २. जवणालिया, ३. दोसऊरिया, ४. खरोट्ठिया, ५. खरसाहिया, ६. पहाराइया, ७. उच्चत्तरिया, ८. अक्खरपुट्ठिया ९. भोगवइया, १०. वेणइया, ११. णिण्हइया, १२. अंकलिवी, १३. गणियलिवी, १४. गंधव्वलिवी, १५. आयंसलिवी, १६. माहेसरी, १७. दामिली, १८. पोलिंदी। | ५. ब्राह्मी-लिपि के लेख-विधान अठारह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—<br>१. ब्राह्मी, २. यावनी, ३. दोषउपरिका, ४. खरोष्ट्रिका, ५. खरशाविका, ६. प्रहारातिका, ७. उच्चत्तरिका, ८. अक्षरपृष्ठिका, ९. भोगवतिका, १०. वैनतिका, ११. निह्नविका, १२. अंकलिपि, १३. गणितलिपि, १४. गन्धर्वलिपि, १५. आदर्शलिपि, १६. माहेश्वरी, १७. दामिली और १८. पोलिन्दी। |

६. अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता ।

६. अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व के वस्तु/अधिकार अठारह प्रज्ञप्त हैं ।

७. धूमप्पहा णं पुढवी अट्ठारसुत्तरं जोयणसयसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।

७. धूमप्रभा पृथिवी का बाहुल्य एक शत-सहस्र/एक लाख अठारह हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

८. पोसासाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवइ ।

८. पौष और आषाढ़ माह में दिवस उत्कृष्टतः अठारह मुहूर्त का होता है और रात उत्कृष्टतः अठारह मुहूर्त की होती है ।

९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की उत्कृष्टतः अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. छठी पृथिवी [तमःप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. कुछेक असुरकुमार देवों की अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. सहस्रार कल्प में देवों की उत्कृष्टतः अठारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. आणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. आनत कल्प में कुछेक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः अठारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. जो देव काल, सुकाल, महाकाल, अंजन, रिष्ट, शाल, समान, द्रुम, महाद्रुम, विशाल, सुशाल, पद्म, पद्मगुल्म, कुमुद, कुमुदगुल्म, नलिन, नलिनगुल्म, पुण्डरीक, पुण्डरीकगुल्म और सहस्रारावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः अठारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. ते णं देवा अट्ठारसहिं अद्ध-मासेहिं आणमंति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससंति वा ।

१६. वे देव अठारह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते है ।

१७. तेसि णं देवाणं अट्ठारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समु-प्पज्जइ ।

१७. उन देवों के अठारह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्संति बुज्झिस्सति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण-मतं करिस्संति ।

१८. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो अठारह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## एगूणवीसमो समवाओ

१. एगूणवीसं णायज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—
उक्खित्तणाए संघाडे,
अडे कुम्मे य सेलए।
तु विय रोहिणी मल्ली,
मागंदी चंदिमाति य ॥
दावद्दवे उदगणाए,
मडुक्के तेतलीइ य।
नदीफले अवरकका,
आइण्णे सु सुमाइ य ॥
अवरे य पोंडरीए,
णाए एगूणवीसइमे।

२. जंबुद्दीवे ण दीवे सूरिआ उक्कोसेणं एगूणवीसं जोयणसयाइं उड्ढमहो तवंति।

३. सुक्केण महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एगूणवीसं णक्खत्ताइं समं चार चरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ।

४. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स कलाओ एगूणवीस छेयणाओ पण्णत्ताओ।

५. एगूणवीसं तित्थयरा अगार-मज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइया।

## उन्नीसवां समवाय

१ ज्ञाता-सूत्र के उन्नीस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१. उत्क्षिप्तज्ञात, २. संघाट, ३. अंड, ४. कूर्म, ५. शैलक, ६. तुम्ब, ७. रोहिणी, ८. मल्ली, ९. माकंदी, १०. चन्द्रमा, ११. दावद्रव, १२. उदकज्ञात, १३. मंडूक, १४. तेतली, १५. नन्दिफल, १६. अपरकंका, १७. आकीर्ण, १८. सुंसुमा और उन्नीसवां/१९. पुण्डरीकज्ञात।

२. जम्बुद्वीप द्वीप में सूर्य उत्कृष्टतः एक हजार नौ सौ योजन ऊर्ध्व और अधो तपते हैं।

३. शुक्र महाग्रह पश्चिम में उदित होकर उन्नीस नक्षत्रों के साथ सहगमन करता हुआ पश्चिम में अस्त होता है।

४. जम्बुद्वीप द्वीप की कलाएँ उन्नीस छेदक/विभाग प्रज्ञप्त हैं।

५. उन्नीस तीर्थंकरों ने अगार-वास के मध्य रहकर पश्चात् मुण्डित होकर अगार से अनगारित प्रव्रज्या ली।

| | |
|---|---|
| ६. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । | ६. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की उन्नीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| ७. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । | ७. छठी पृथिवी [तमःप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| ८. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । | ८. कुछेक असुरकुमार देवों की उन्नीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| ९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । | ९. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की उन्नीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| १०. आणयकप्पे देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । | १०. आनत कल्प में कुछेक देवों की उत्कृष्टतः उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| ११. पाणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता । | ११. प्राणत कल्प में कुछेक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| १२. जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदकंतं इंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । | १२. जो देव आनत, प्राणत, नत, विनत, घन, शुषिर, इन्द्र, इन्द्रकान्त और इन्द्रोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है । |
| १३. ते णं देवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । | १३. वे देव उन्नीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं । |

१४. तेसि णं देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१४. उन देवों के उन्नीस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१५. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो उन्नीस भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे।

## वीसइमो समवाओ

१. वीसं असमाहिठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. दवदवचारि यावि भवइ, २. अपमज्जियचारि यावि भवइ ३. दुप्पमज्जियचारि यावि भवइ, ४. अतिरित्तसेज्जासणिए, ५. रातिणियपरिभासी, ६. थेरोवघातिए, ७. भूओवघातिए, ८. संजलणे, ९. कोहणे, १०. पिट्ठिमंसिए, ११. अभिक्खणं-अभिक्खणं, ओहारइत्ता भवए, १२. णवाणं अधिकरणाणं अणुप्पण्णाणं उप्पाएत्ता भवइ, १३. पोराणाणं अधिकरणाणं खामिय-विओसवियाणं पुणोदीरेत्ता भवइ, १४. ससरक्खपाणिपाए, १५. अकालसज्झायकारए यावि भवइ, १६. कलहकरे, १७. सद्दकरे, १८. झंझकरे, १९. सूरप्पमाणभोई, २०. एसणाऽसमिते आवि भवइ।

२. मुणिसुव्वए णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

## बीसवां समवाय

१. असमाधि के बीस स्थान प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—

१. दव-दव-चारी/शीघ्रगामी होता है, २. अप्रमार्जितचारी होता है, ३. दुष्प्रमार्जितचारी होता है, ४. अतिरिक्त शय्या-आसन रखता है, ५. रत्निक परिभाषा/वाणी-असंयम, ६. स्थविर-उपघात/वृद्ध-उपेक्षा, ७. भूत-उपघात/स्थावर-हिंसा, ८. संज्वलन, ९. क्रोध, १०. पृष्टिमंसा/निन्दा, ११. प्रतिक्षण आरोप लगाता है, १२. अनुत्पन्न नये अधिकरणों को उत्पन्न करना, १३. क्षमित और उपशान्त पुराने अधिकरणों को पुनः तैयार करता है, १४. हाथ-पैर रजसहित रखता है, १५. अकाल/असमय में स्वाध्याय करता है, १६. कलह करता है, १७. शब्द/शोरगुल करता है, १८. झंझट करता है, १९. सूर्य-प्रमाण भोजन/दिनभर खाते-पीते रहता है, २०. एषणा-समिति का पालन नहीं करता है।

२. अर्हत् मुनिसुव्रत ऊँचाई की दृष्टि से बीस धनुष ऊँचे थे।

३. सव्वेवि णं घणोदही वीसं जोयण-सहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।

३. समस्त घनोदधिवातवलयों का बाहुल्य बीस हजार योजन प्रज्ञप्त हैं ।

४. पाणयस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वीसं सामाणिअसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

४. प्राणत देवराज देवेन्द्र के सामानिक देव बीस हजार प्रज्ञप्त हैं ।

५. णपुंसयवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधओ बंधठिई पण्णत्ता ।

५. नपुंसक वेदनीय कर्म का बीस कोटा-कोटि स्थिति-बन्ध प्रज्ञप्त है ।

६. पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ।

६. प्रत्याख्यान पूर्व के वस्तु/अधिकार बीस प्रज्ञप्त है ।

७. ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिमंडले वीसं सागरोवम-कोडाकोडीओ कालो पण्णत्ता ।

७. उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी-मंडल/कालचक्र बीस कोटाकोटि सागरोपम काल परिमित प्रज्ञप्त है ।

८. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेर-इयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. छठी पृथिवी [तमःप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. कुछेक असुरकुमार देवों की बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. सौधर्म ईशान कल्प में कुछेक देवों की बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. पाणते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. प्राणत कल्प में देवों की उत्कृष्टतः बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३. आरण कल्प में देवों की जघन्यतः बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. जे देवा सातं विसातं सुविसातं सिद्धत्थं उप्पलं रुइलं तिगिच्छं दिसासोवत्थिय-वद्धमाणयं पलंबं पुप्फं सुपुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपभं पुप्फकंतं पुप्फवण्णं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिट्ठं पुप्फकूडं पुप्फुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४. जो देव सात, विसात, सुविसात, सिद्धार्थ, उत्पल, रुचिर, तिगिंछ, दिशासौवस्तिक, प्रलम्ब, पुष्प, सुपुष्प, पुष्पावर्त, पुष्पप्रभ, पुष्पकान्त, पुष्पवर्ण, पुष्पलेश्य, पुष्पध्वज, पुष्पश्रृंग, पुष्पसिद्ध, पुष्पसृष्ट और पुष्पोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. ते णं देवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१५. वे देव बीस अर्धमासों / पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते है।

१६. तेसि णं देवाणं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१६. उन देवों के बीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१७. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१७. कुछेक भवसिद्धिक जीव है, जो वीस भव-ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे।

# एक्कवीसइमो समवाओ

१. एक्कवीस सबला पण्णत्ता, तं जहा—

१. हत्थकम्मं करेमाणे सबले, २. मेहुणं पडिसेवमाणे सबले, ३. राइभोयणं भुंजमाणे सबले, ४. आहाकम्मं भुंजमाणे सबले, ५. सागारियपिंडं भुंजमाणे सबले, ६. उद्देसियं, कीयं, आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले, ७. अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ता णं भुंजमाणे सबले, ८. अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे सबले, ९. अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणं सबले, १०. अंतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले, ११. रायपिंडं भुंजमाणे सबले, १२. आउट्टिआए पाणाइवायं करेमाणे सबले, १३. आउट्टिआए मुसावायं वदमाणे सबले, १४. आउट्टिआए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे सबले, १५. आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले। १६. आऊट्टिआए चित्तमंताए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलूए, कोलावासंसि वा दारुए अण्णयरे वा तहप्पगारे

# इक्कीसवां समवाय

१. शवल/प्रदूषित इक्कीस प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

१. हस्त-कर्म/हस्त-मैथुन करने वाला शवल, २. मैथुन प्रतिसेवन करने वाला शवल, ३. रात्रि-भोजन करने वाला शवल, ४. आधाकर्म/अपक्व भोजन करने वाला शवल, ५. सागारिक पिंड खाने वाला शवल, ६. औद्देशिक, क्रीत, आहृत, प्रदत्त भोजन करने वाला शवल, ७. पुनः पुनः प्रतियाचना कर भोजन करने वाला शवल, ८. छह माह के अन्तर्गत गण से गण में संक्रमण करने वाला शवल, ९. एक माह के अन्तर्गत तीन वार द्रगलेप/प्रक्षालन करने वाला शवल, १०. एक माह के अन्तर्गत तीन वार मायी-स्थान/कपट-व्यवहार का सेवन करने वाला शवल, ११. राजपिण्ड/गरिष्ठ भोजन करने वाला शवल, १२. आवर्तिक/निरन्तर प्राणातिपात करने वाला शवल, १३. आवर्तिक/निरन्तर मृषावाद वोलने वाला शवल, १४. आवर्तिक / निरन्तर अदत्तदान ग्रहण करने वाला शवल, १५. आवर्तिक/निरन्तर अनन्तर्हित / सजीव पृथिवी पर स्थान/निवास, निषद्या/शय्या का चित्तपूर्वक उपयोग करने वाला शवल, १६. आवर्तिक/निरन्तर

चेतेमाणे सबले, १७. जीवपइ-ट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिंगे पणग-दगमट्टी-मक्कडासंताणए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले, १८. आउट्टिआए मूलभोयणं वा कंद-भोयणं वा खंधभोयणं वा तया-भोयणं वा पवालभोयणं वा पत्त-भोयणं वा पुप्फभोयणं वा फल-भोयणं वा बीयभोयणं वा हरिय-भोयणं वा भुंजमाणे वा, १९. अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले, २०. अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं सेव-माणे सबले, २१. अभिक्खणं-अभिक्खणं सीतोदय-वियड-वग्घा-रिय-पाणिणा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहित्ता भुंजमाणे सबले।

सचित्त पृथिवी पर या आवर्तिक सचित्त शिला पर या कोलावास/वृक्ष-कोठरवास या उसी प्रकार की अन्यतर लकड़ी के स्थान, शय्या, निषद्या का चित्तपूर्वक उपयोग करने वाला शबल, १७. जीव-प्रतिष्ठित, प्राणसहित, बीज-सहित, हरित-सहित, उदक-सहित, पनक/सप्राण, द्रग/मिट्टी, मकड़ीजाल एवं इसी प्रकार के अन्य स्थान पर निवास, शय्या, निषद्या करने वाला शबल, १८. आवर्तिक/निरन्तर मूल-भोजन, कन्द-भोजन, त्वक्-भोजन, प्रवाल-भोजन, पुष्प-भोजन, फल-भोजन और हरित-भोजन करने वाला शबल, १९. एक संवत्सर/वर्ष में दश बार उदक-लेप करने वाला शबल, २०. एक संवत्सर/वर्ष के अन्तर्गत दश बार मायावी स्थानों का सेवन करने वाला शबल, २१. पुनः पुनः शीतल जल से लिप्त हाथों से अशन, पान, खादिम/खाद्य और स्वादिम/स्वाद्य का परिग्रहण कर खाने वाला शबल।

२. मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा—
अपच्चक्खाणकसाए कोहे,
अपच्चक्खाणकसाए माणे,
अपच्चक्खाणकसाए माया,
अपच्चक्खाणकसाए लोभे।
पच्चक्खाणावरणे कोहे,
पच्चक्खाणावरणे माणे,
पच्चक्खाणावरणा माया,

२. मोहनीय कर्म की सात प्रकृतियों का क्षयकर कर्म-सत्ता के कर्मांश/कर्म-प्रकृतियाँ इक्कीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
अप्रत्याख्यान-कषाय क्रोध, अप्रत्याख्यान-कषाय मान, अप्रत्याख्यान-कषाय माया, अप्रत्याख्यान-लोभ, प्रत्याख्यानावरण-कषाय क्रोध, प्रत्याख्यानावरण-कषाय मान, प्रत्याख्यानावरण-कषाय माया, प्रत्या-

पच्चक्खाणावरणे लोभे।
संजलणे कोहे, संजलणे माणे, संजलणा माया, संजलणे लोभे, इत्थिवेदे, पुंवेदे, नपुंसयवेदे. हासे, अरति, रति, भय, सोग दुगुंछा।

ख्यानावरण-कषाय माया, संज्वलन-कषाय क्रोध, संज्वलन-कषाय मान, संज्वलन-कषाय माया, संज्वलन-कषाय लोभ, स्त्रीवेद, पुंवेद/पुरुष-वेद, नपुंवेद/नपुंसक-वेद, हास्य, अरति, रति, भय, शोक, दुगुंछा/जुगुप्सा।

३. एकमेक्काए णं ओसप्पिणीए पंचमछट्ठाओ समाओ एक्कवीसं-एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तं जहा—
दूसमा दूसम-दूसमा य।

३. प्रत्येक अवसर्पिणी का पाँचवाँ-छठा आरा / कालखण्ड इक्कीस-इक्कीस हजार वर्ष काल का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
दुःषमा, दुःषम-दुःषमा।

४. एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढम-वितियाओ समाओ एक्कवीसं-एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तं जहा—
दूसम-दूसमा दूसमा य।

४. प्रत्येक उत्सर्पिणी का पहला-दूसरा आरा इक्कीस-इक्कीस हजार वर्ष काल का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
दुःषमा-दुःषमा, दुःषमा।

५. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

५. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की इक्कीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

६. छट्ठीय पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

६. छठी पृथिवी [तमःप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की इक्कीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

७. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

७. कुछेक असुरकुमार देवों की इक्कीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

८. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की इक्कीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

९. आरणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. आरण कल्प में देवों की उत्कृष्टतः इक्कीस सागरोपम की स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. अच्चुते कप्पे देवाणं जहण्णेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. अच्युत कल्प में देवों की जघन्यतः/न्यूनतः इक्कीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामगंडं मल्लं किट्टिं चावोण्णतं आरण्णवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. जो देव श्रीवत्स, श्रीदामकाण्ड, माल्य, कृष्ट, चापोन्नत और आरण्यावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः इक्कीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. ते णं देवा एक्कवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१२. वे देव इक्कीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१३. तेसि णं देवाणं एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३. उन देवों के इक्कीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१४. कुछेक भवसिद्धिक जीव हैं, जो इक्कीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## बावीसइमो समवाओ

१. बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा—
दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे नाणपरीसहे दंसणपरीसहे पण्णापरीसहे ।

२. बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—
कालवण्णपरिणामे नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किलवण्णपरिणामे सुब्भिगंधपरिणामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे महुररसपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणामे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे

## बाईसवां समवाय

१. परीषह/सहिष्णु-धर्म बाईस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
दिगिछा/क्षुधा-परीषह, पिपासा-परीषह, शीत-परीषह, उष्ण-परीषह, दंशमशक-परीषह, अचेल-परीषह, अरति-परीषह, स्त्री-परीषह, चर्या-परीषह, निषद्या-परीषह, शय्या-परीषह, आक्रोश-परीषह, वध-परीषह, याचना-परीषह, अलाभ-परीषह, रोग-परीषह, तृण-स्पर्श-परीषह, जल्ल-परीषह, सत्कार-पुरस्कार-परीषह, प्रज्ञा-परीषह, अज्ञान-परीषह, अदर्शन-परीषह ।

२. पुद्गल-परिणाम बाईस प्रकार के प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१. कृष्णवर्णपरिणाम, २. नीलवर्णपरिणाम, ३. लोहितवर्णपरिणाम, ४. हारिद्रवर्णपरिणाम, ५. शुक्लवर्णपरिणाम, ६. सुरभिगन्धपरिणाम, ७. दुरभिगन्धपरिणाम, ८. तिक्तरसपरिणाम, ९. कटुकरसपरिणाम, १०. कषायरसपरिणाम, ११. आम्लरसपरिणाम, १२. मधुररसपरिणाम, १३. कर्कशस्पर्शपरिणाम, १४. मृदुस्पर्शपरिणाम, १५. गुरुस्पर्शपरिणाम, १६. लघुस्पर्शपरिणाम, १७. शीतस्पर्शपरि-

गरुलहुफासपरिणामे अगरुलहु-फासपरिणामे ।

णाम, १८. उष्णस्पर्शपरिणाम, १९. स्निग्धस्पर्शपरिणाम, २०. रूक्षस्पर्श-परिणाम, २१. अगुरुलघुस्पर्शपरि-णाम और २२. गुरुलघुस्पर्शपरिणाम।

३. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

३. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की बाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४. छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

४. छठी पृथिवी [तमःप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

५. अहेसत्तमाए पुढवीए नेरयाणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

५. अधस्तन सातवीं पृथिवी [महातमः-प्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की जघन्यतः बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

६. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं बावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६. कुछेक असुरकुमार देवों की बाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

७. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं बावीसं पलिओव-माइं ठिई पण्णत्ता ।

७. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की बाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. अच्चुते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. अच्युत कल्प में देवों की बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाणं देवाणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. अधस्तन-अधोवर्ती ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. जे देवा महितं विसुतं विमलं पभासं वणमालं अच्चुतवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. जो देव महित, विश्रुत, विमल, प्रभास, और वनमाल, अच्युतावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. ते णं देवा बावीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

११. वे देव बाईस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१२. ते णं देवाणं बावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१२. उन देवों के बाईस हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१३. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१३. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो बाईस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# तेवीसइमो समवाश्रो

१. तेवीसं सुयगडज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—
समए वेतालिए उवसग्गपरिण्णा थीपरिण्णा नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे श्राहत्तहिए गंथे जमईए गाहा पुंडरीए किरियठाणा श्राहारपरिण्णा श्रपच्चक्खाणकिरिया श्रणगारसुयं श्रद्दइज्जं णालंदइज्जं।

२. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे श्रोसप्पिणीए तेवीसाए जिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे।

३. जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे श्रोसप्पिणीए तेवीसं तित्थयरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था, तं जहा—
श्रजिए संभवे श्रभिणंदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले श्रणंते धम्मे संती कुंथू श्ररे मल्ली मुणिसुव्वए णमी श्ररिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे य।

# तेईसवां समवाय

१. सूत्रकृत के तेइस श्रध्ययन प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१. समय, २. वैतालिक, ३. उपसर्गपरिज्ञा, ४. स्त्रीपरिज्ञा, ५. नरकविभक्ति, ६. महावीरस्तुति, ७. कुशीलपरिभाषित, ८. वीर्य, ९. धर्म, १०. समाधि, ११. मार्ग, १२. समवसरण, १३. यथातथ्य, १४. ग्रन्थ, १५. यमकीय, १६. गाथा, १७. पुण्डरीक, १८. क्रियास्थान, १९. श्राहारपरिज्ञा, २०. श्रप्रत्याख्यानक्रिया, २१. श्रनगारश्रुत, २२. श्रार्द्रकीय, २३. नालन्दीय।

२. जम्बुद्वीप द्वीप में भारतवर्ष की इसी श्रवसर्पिणी में तेईस जिन/तीर्थकरों को सूर्य के उदीयमान मुहूर्त में प्रवर केवलज्ञान श्रौर प्रवर केवल-दर्शन समुत्पन्न हुश्रा।

३. जम्बुद्वीप द्वीप में इस श्रवसर्पिणी के तेईस तीर्थंकर पूर्वभव में ग्यारह श्रंगधारी थे। जैसे कि—
श्रजित, संभव, श्रभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, श्रनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, श्रर, मल्ली, मुनिसुव्रत, नमि, श्ररिष्टनेमि, पार्श्व श्रौर वर्धमान।

उसभे णं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था ।

अर्हत् कौशलिक ऋषभ चौदह पूर्वी थे ।

४. जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थगरा पुव्वभवे मंडलियरायाणो होत्था, तं जहा—
अजिए संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे य ।

४. जम्बुद्वीप द्वीप में इस अवसर्पिणी के तेईस तीर्थंकर पूर्वभव में मांडलिक राजा थे । जैसे कि—
अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्ली, मुनिसुव्रत, नमि, अरिष्टनेमि, पार्श्व और वर्धमान ।

उसभे णं अरहा कोसलिए चक्कवट्टी होत्था ।

अर्हत् कौशलिक ऋषभ पूर्वभव में चक्रवर्ती थे ।

५. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

५. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की तेईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

६. अहेसत्तमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी [महातमः प्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की तेईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

७. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७. कुछेक असुरकुमार देवों की तेईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की तेईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्जाणं देवाणं जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. अधस्तन-मध्यवर्ती ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः तेईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. जे देवा हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. जो देव अधस्तन ग्रैवेयक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः तेईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. ते णं देवा तेवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

११. वे देव तेईस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते है।

१२. तेसि णं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१२. उन देवों के तेईस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१३. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१३. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो तेईस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे।

## चउव्वीसइमो समवाओ

१. चउव्वीसं देवाहिदेवा पण्णत्ता, तं जहा—
उसभे अजिते संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे।

२. चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहर-पव्वयाणं जीवाओ चउव्वीसं-चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णव-बत्तीसे जोयणसए एगं च अट्ठत्तीसइं भागं जोयणस्स किंचिविसेसाहिआओ आयामेणं पण्णत्ताओ।

३. चउवीसं देवट्ठाणा सइंदया पण्णत्ता, सेसा अहमिंदा—अनिंदा अपुरोहिआ।

४. उत्तरायणगते णं सूरिए चउ-वीसंगुलियं पोरिसियछायं णिव्वत्त-इत्ता णं णिअट्टति।

५. गंगासिधूओ णं महाणईओ पवहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ताओ।

## चौबीसवां समवाय

१. देवाधिदेव चौबीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्ली, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व और वर्धमान।

२. क्षुल्ल/हिमवन्त और शिखरी वर्षधर पर्वतों की जीवा/परिधि चौबीस-चौबीस हजार नौ सौ बत्तीस योजन और योजन के अड़तीस भागों में से एक भाग (अर्थात् २४९३२$\frac{1}{38}$ योजन) से कुछ अधिक लम्बी प्रज्ञप्त है।

३. इन्द्र-सहित देवों के स्थान चौबीस प्रज्ञप्त हैं। शेष अहमिन्द्र, इन्द्र-रहित, पुरोहित-रहित हैं।

४. उत्तरायणगत सूर्य चौबीस अंगुल की पौरुषी-छाया पार कर निवृत्त होता है।

५. गंगा-सिन्धु महानदियों का प्रवाह चौबीस कोस से अधिक विस्तृत प्रज्ञप्त है।

६. रत्तारत्तवतीओ णं महाणदीओ पवहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ताओ।

६. रक्ता-रक्तवती का प्रवाह चौबीस कोश से अधिक प्रज्ञप्त है।

७. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

७. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की चौबीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी [महातमः-प्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की चौबीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९. कुछेक असुरकुमार देवों की चौबीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की चौबीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जाणं जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११. अधोवर्ती एवं ऊर्ध्ववर्ती ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः चौबीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. जे देवा हेट्ठिम-मज्झिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. जो देव अधस्तन-मध्यवर्ती ग्रैवेयक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः चौबीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. ते णं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१३. वे देव चौबीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं।

१४. ते णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१४. उन देवों के चौबीस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१५. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो चौवीस भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## पणवीसइमो समवाओ

१. पुरिमपच्छिमताणं तित्थगराणं पंचजामस्स पणवीसं भावणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
१. इरियासमिई, २. मणगुत्ती, ३. वयगुत्ती, ४. आलोय-भायण-भोयणं, ५. आदाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिई, ६. अणुवीति-भासणया, ७. कोहविवेगे, ८. लोभविवेगे, ९. भयविवेगे, १०. हासविवेगे, ११. उग्गह-अणुण्ण-वणता, १२. उग्गह-सीमजाण-णता, १३. सयमेव उग्गहअण-गेण्हणता, १४. साहम्मियउग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणता, १५. साधारणभत्तपाणं अणुण्णविय परिभुंजणता, १६. इत्थी-पसु-पंडग-संसत्त-सयणासणवज्जणया १७. इत्थी-कहविवज्जणया, १८. इत्थीए इंदियाण आलोयण-वज्जणया, १९. पुव्वरय-पुव्व-कीलिआणं अणणुसरणया, २०. पणीताहार-विवज्जणया, २१. सोइंदियरागोवरई, २२. चक्खि-दियरागोवरई, २३. घाणिंदिय-रागोवरई, २४. जिब्भिदियरागो-वरई, २५. फासिंदियरागोवरई।

२. मल्ली णं अरहा पणवीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

## पच्चीसवां समवाय

१. पूर्व-पश्चिम प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरों के पंचयाम की पच्चीस भावनाएँ प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१. ईर्यासमिति, २. मनोगुप्ति, ३. वचनगुप्ति, ४. आलोकितपान-भोजन, ५. आदानभांड-मात्रनिक्षेप-णासमिति, ६. अनुवीचिभाषण, ७. क्रोध-विवेक, ८. लोभ-विवेक, ९. भय-विवेक, १०. हास्य-विवेक ११. अवग्रह-अनुज्ञापनता, १२. अव-ग्रहसीम-ज्ञापनता, १३. स्वयमेव अव-ग्रहअनुग्रहणता, १४. साधर्मिक अव-ग्रहअनुज्ञापनता, १५. साधारण भक्त-पानअनुज्ञाप्य परिभुंजनता, १६. स्त्री-पशुनपुंसक-संसक्त शयन-आसन वर्ज-नता १७. स्त्रीकथाविवर्जनता, १८. स्त्रीइन्द्रिय-अवलोकनवर्जनता १९. पूर्वरतपूर्वक्रीडा-अननुस्मरणता, २०. प्रणीत-आहार-विवर्जनता। २१. श्रोत्रेन्द्रियरागोपरति, २२. चक्षु-रिन्द्रिय-रागोपरति, २३. घ्राणेन्द्रिय-रागोपरति, २४. जिह्वेन्द्रिय-रागो-परति और २५. स्पर्शनेन्द्रिय-रागो-परति।

२. अर्हत् मल्ली ऊँचाई की दृष्टि से पच्चीस धनुष ऊँचे थे।

३. सव्वेवि णं दीहवेयड्डपव्वया पणवीसं-पणवीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं-पणवीसं गाउयाणि उव्वेहेणं पण्णत्ता।

३. समस्त दीर्घ वैताढ्य पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से पच्चीस धनुष ऊँचे और पच्चीस-पच्चीस गाऊ/कोष गहरे प्रज्ञप्त हैं।

४. दोच्चाए णं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

४. दूसरी पृथिवी [शर्करा-प्रभा] पर पच्चीस लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं।

५. आयारस्स णं भगवओ सचूलियायस्स। तं जहा—
सत्थ-परिण्णा लोगविजओ
सीओ सणीअ सम्मत्तं।
आवंति धुअविमोह उवहाण-
सुयं महापरिण्णा॥
पिंडेसण सिज्ज रिआ
भासज्झयणा य वत्थ पाएसा।
उग्गहपडिमा सत्तिक्क-
सत्तया भावण विमुत्ती॥

५. भगवान् के चूलिका सहित आचार के पच्चीस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१. स्त्री-परीज्ञा, २. लोकविजय, ३. शीतोष्णीय, ४. सम्यक्त्व, ५. आवन्ती ६. धूत, ७. विमोह, ८. उपधानश्रुत, ९. महापरिज्ञा, १०.पिण्डैषणा, ११.शय्या, १२.ईर्या, १३. भाषाध्ययन, १४. वस्त्रैषणा, १५. पात्रैषणा १६. अवग्रहप्रतिमा, १७-२३.सप्तैकक [१७. स्थान, १८. निषीधिका, १९. उच्चारप्रस्रवण, २०. शब्द, २१. रूप, २२. परक्रिया, २३. अन्योन्य क्रिया], २४. भावना और २५. विमुक्ति।

६. निसीहज्झयणं पणवीसइमं।

६. निशीथ अध्ययन पच्चीसवाँ है।

७. मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए णं अपज्जत्तए संकिलिट्ठपरिणामे नामस्स कम्मस्स पणवीसं उत्तरपयडीओ णिबंधति, तं जहा— तिरियगतिनामं विगलिंदियजातिनामं ओरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मगसरीरनामं हुंडसठाणनामं ओरालियसरीरंगोवगनामं सेवट्ठसंघयणनामं

७. अपर्याप्तक मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय जीव संक्लिष्ट परिणाम से नामकर्म की पच्चीस उत्तर प्रकृतियों का बन्धन करते हैं। जैसे कि— १. तिर्यग्गतिनाम, २. विकलेन्द्रिय जातिनाम, ३. औदारिकशरीरनाम, ४. तैजसशरीरनाम, ५.कार्मणशरीरनाम, ६. हुंडकसंस्थान नाम, ७. औदारिकशरीराङ्गोपाङ्गनाम, ८. सेवार्त्त-

वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगरुयलहुयनामं उवघायनामं तसनामं बादरनामं अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनामं दुभगनामं अणादेज्जनामं अजसोवित्तिनामं निम्माणंनामं।

संहनननाम, ९. वर्णनाम १०. गन्धनाम, ११. रसनाम, १२. स्पर्शनाम, १३.तिर्यंचानुपूर्वीनाम, १४.अगुरुलघुनाम,१५. उपघातनाम, १६.त्रसनाम, १७. बादरनाम, १८.अपर्याप्तकनाम, १९. प्रत्येकशरीरनाम, २०. अस्थिनाम, २१. अशुभनाम, २२. दुर्भगनाम, २३.अनादेयनाम, २४.अयशः-कीर्तिनाम और २५.निर्माणनाम।

८. गंगासिंधूओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेण दुहओ घटमुह-पवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं पवातेणं पवडंति।

८. गंगा और सिन्धु महानदियां पच्चीस गव्यूति/कोश विस्तृत दो मुँहे घटमुख में प्रवेश कर मुक्तावली हार के रूप में प्रपात में गिरती है।

९. रत्तारत्तवतीओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं दुहओ मकरमुह-पवित्तिएणं मुत्तावलि-हार-संठिएणं पवातेणं पवडंति।

९. रक्ता और रक्तवती महानदियां पच्चीस गव्यूति/कोश पृथुल/विस्तृत मकर-मुख की प्रवृति कर मुक्तावली हार के रूप में प्रपात में गिरती हैं।

१०. लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता।

१०. लोक बिन्दुसार पूर्व के वस्तु/अधिकार पच्चीस प्रज्ञप्त है।

११. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की पच्चीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी [महातमः-प्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की पच्चीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३. कुछेक असुरकुमार देवों की पच्चीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१४. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की पच्चीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५. मध्यम-अधस्तन ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः पच्चीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. जे देवा हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्ज-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१६. जो देव अधोवर्ती एवं ऊर्ध्ववर्ती ग्रैवेयक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः पच्चीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७. ते णं देवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१७. वे देव पच्चीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१८. तेसि णं देवाणं पणवीसाए वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८. उन देवों के पच्चीस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१९. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण-मंतं करिस्संति ।

१९. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो पच्चीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## छव्वीसइमो समवाओ

१. छव्वीसं दस-कप्प-ववहाराणं उद्देसणकाला पण्णत्ता, तं जहा—
दस दसाणं, छ कप्पस्स, दस ववहारस्स।

२. अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा—
मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलस कसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति भयं सोगो दुगुंछा।

३. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

४. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

५. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

६. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

## छब्बीसवां समवाय

१. दश (दशाश्रुतस्कन्ध) बृहत्कल्प और व्यवहार के छब्बीस उद्देशनकाल प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
दशा के दश, कल्प के छह और व्यवहार के दश।

२. अभव-सिद्धिक जीवों के मोहनीय कर्म की कर्मसत्ता के कर्मांश/कर्म-प्रकृतियाँ छब्बीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
मिथ्यात्व मोहनीय, सोलह कषाय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, हास्य, अरति, रति, भय, शोक, दुगुंछा/जुगुप्सा।

३. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की छब्बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

४. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी [महातमः-प्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की छब्बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

५. कुछेक असुरकुमार देवों की छब्बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

६. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की छब्बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

७. मज्झिम - मज्झिम - गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७. मध्यवर्ती-मध्यम ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः छव्वीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. जे देवा मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. जो देव मध्यवर्ती-अधस्तन ग्रैवेयक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः छव्वीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. ते णं छव्वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

९. वे देव छव्वीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१०. तेसि णं देवाणं छव्वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१०. उन देवों के छव्वीस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

११. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छव्वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति करिस्संति ।

११. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो छव्वीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# सत्तावीसइमो समवाओ

१. सत्तावीसं अणगारगुणा पण्णत्ता, तं जहा—
पाणातिवायवेरमणे, मुसावायवेरमणे, अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे, परिग्गहवेरमणे, सोइंदियनिग्गहे, चक्खिदियनिग्गहे, घाणिंदियनिग्गहे, जिब्भिंदियनिग्गहे, फासिंदियनिग्गहे, कोहविवेगे, माणविवेगे, मायाविवेगे, लोभविवेगे, भावसच्चे, करणसच्चे, जोगसच्चे, खमा, विरागता, मणसमाहरणता, वतिसमाहरणता, कायसमाहरणता, णाणसंपण्णया, दंसणसंपण्णया, चरित्तसंपण्णया, वेयणअहियासणया, मारणंतियअहियासणया।

२. जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति।

३. एगमेगे णं णक्खत्तमासे सत्तावीसं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते।

# सत्ताईसवां समवाय

१. अनगार के गुण सत्ताईस हैं। जैसे कि—
१. प्राणातिपात-विरमण, २. मृषावाद विरमण, ३. अदत्तादान-विरमण, ४. मैथुन विरमण, ५. परिग्रह विरमण, ६. श्रोत्रेन्द्रियनिग्रह, ७. चक्षुइन्द्रियनिग्रह, ८. घ्राणेन्द्रियनिग्रह, ९. रसनेन्द्रियनिग्रह, १०. स्पर्शनेन्द्रियनिग्रह, ११. क्रोधविवेक, १२. मानविवेक, १३. मायाविवेक, १४. लोभविवेक, १५. भाव-सत्य, १६. करण-सत्य, १७. योग-सत्य, १८. क्षमा, १९. वैराग्य २०. मन-समाहरण, २१. वचन-समाहरण, २२. काय-समाहरण, २३. ज्ञान-सम्पन्नता, २४. दर्शन-सम्पन्नता, २५. चरित्र-सम्पन्नता, २६. वेदना-अधिसहन और २७. मारणान्तिक अधिसहन।

२. जम्बुद्वीप द्वीप में अभिजित को छोड़ कर सत्ताईस नक्षत्रों का संव्यवहार चलता है।

३. प्रत्येक नक्षत्र-मास रात-दिन की दृष्टि से सत्ताईस रात-दिन का प्रज्ञप्त है।

४. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाण-पुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।

४. सौधर्म-ईशान कल्प में विमान की पृथिवी का सत्ताईस सौ योजन बाहुल्य प्रज्ञप्त है ।

५. वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता ।

५. वेदक सम्यक्त्व बन्ध से उपरत जीव की मोहनीय कर्म की कर्मसत्ता की सत्ताईस उत्तर प्रकृतियाँ प्रज्ञप्त हैं ।

६. सावण-सुद्ध-सत्तमीए णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं निवड्ढेमाणे रयणिखेत्तं अभिणिवड्ढेमाणे चारं चरइ ।

६. श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सूर्य सत्ताईस अंगुल की पौरुषी छाया से निवृत्त होकर दिवस-क्षेत्र की ओर निवर्तन करता हुआ रजनी-क्षेत्र की ओर प्रवर्तमान संचरण करता है ।

७. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की सत्ताईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी [महातमः प्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की सत्ताईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. कुछेक असुरकुमार देवों की सत्ताईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगईयाण देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. सौधर्म ईशान कल्प में कुछेक देवों की सत्ताईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. मज्झिम - उवरिम - गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेण सत्तावीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११. मध्यवर्ती उपरिम ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः सत्ताईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. जं देवा मज्झिम मज्झिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. जो देव मध्यम ग्रैवेयक विमान में देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत: सत्ताईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. ते णं देवा सत्तावीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१३. वे देव सत्ताईस अर्धमासों/पक्षो में आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि:श्वास छोड़ते है।

१४. तेसि णं देवाणं सत्तावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१४. उन देवों के सत्ताईस हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१५. कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो सत्ताईस भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदु:खान्त करेंगे।

# अट्ठावीसइमो समवाओ

१. अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते, तं जहा—
१. मासिया आरोवणा, २. सपंचरायमासिया आरोवणा, ३. सदसरायमासिया आरोवणा, ४. सपण्णरसरायमासिया आरोवणा, ५. सवीसइरायमासिया आरोवणा, ६. सपंचवीसरायमासिया आरोवणा, ७. दोमासिया आरोवणा, ८. सपंचरायदोमासिया आरोवणा, ९. सदसरायदोमासिया आरोवणा, १०. सपण्णरसरायदोमासिया आरोवणा, ११.सवीसइरायदोमासिया आरोवणा, १२. सपंचवीसरायदोमासिया आरोवणा, १३. तेमासिया आरोवणा, १४. सपंचरायतेमासिया आरोवणा, १५. सदसरायतेमासिया आरोवणा, १६. सपण्णरसरायतेमासिया आरोवणा, १७. सवीसइरायतेमासिया आरोवणा, १८. सपंचवीसरायतेमासिया आरोवणा, १९. चउमासिया आरोवणा, २०. सपचरायचउमासिया आरोवणा, २१. सदसरायचउमासिया आरोवणा, २२. सपण्णरसरायचउमासिया आरोवणा, २३. सवीस-

# अठाईसवां समवाय

१. आचार-प्रकल्प अठाईस प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१. एक मास की आरोपणा (आरोपणा=प्रायश्चित्त), २. एक मास पांच दिन की आरोपणा, ३. एक मास दस दिन की आरोपणा, ४. एक मास पन्द्रह दिन की आरोपणा, ५. एक मास वीस दिन की आरोपणा, ६. एक मास पचीस दिन की आरोपणा, ७. दो मास की आरोपणा, ८. दो मास पांच दिन की आरोपणा, ९. दो मास दस दिन की आरोपणा, १०. दो मास पन्द्रह दिन की आरोपणा, ११. दो मास वीस दिन की आरोपणा, १२. दो मास पचीस दिन की आरोपणा, १३. तीन मास की आरोपणा, १४. तीन मास पांच दिन की आरोपणा, १५. तीन मास दस दिन की आरोपणा, १६. तीन मास पन्द्रह दिन की आरोपणा, १७. तीन मास वीस दिन की आरोपणा, १८. तीन मास पच्चीस दिन की आरोपणा, १९. चार मास की आरोपणा, २०. चार मास पांच दिन की आरोपणा, २१. चार मास दस दिन की आरोपणा, २२. चार मास पन्द्रह दिन की आरोपणा, २३. चार मास

इरायचउमासिया आरोवणा, २४. सपंचवीसरायचउमासिया आरोवणा, २५. उग्घातिया आरोवणा, २६. अणुग्घातिया आरोवणा २७. कसिणा आरोवणा २८. अकसिणा आरोवणा—

बीस दिन की आरोपणा, २४. चार मास पच्चीस दिन की आरोपणा, २५. उद्घातिकी आरोपणा—लघु प्रायश्चित्त, २६. अनुद्घातिकी आरोपणा—विशेष प्रायश्चित्त, २७. कृत्स्ना आरोपणा—पूर्ण प्रायश्चित्त, २८. अकृत्स्ना आरोपणा अपूर्ण प्रायश्चित्त।

एत्ताव ताव आयारपकप्पे एत्ताव ताव आयरियव्वे।

इतना ही आचार-प्रकल्प है। इतना ही आचरणीय है।

२. भवसिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा—
सम्मत्तवेअणिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलस कसाया णव णोकसाया।

२. कुछेक भवसिद्धिक जीवों के मोहनीय कर्म के अट्ठाईस कर्मांश—प्रकृतियाँ सत्कर्म/सत्तावस्था में प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
सम्यक्त्व वेदनीय, मिथ्यात्व वेदनीय, सम्यक्-मिथ्यात्व वेदनीय, सोलह कषाय और नौ नो-कषाय।

३. आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा—

सोइंदियत्थोग्गहे चक्खिंदियत्थोग्गहे घाणिंदियत्थोग्गहे जिब्भिंदियत्थोग्गहे फासिंदियत्थोग्गहे णोइंदियत्थोग्गहे।

सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदियवंजणोग्गहे जिब्भिंदियवंजणोग्गहे फासिंदियवंजणोग्गहे।

सोइंदियईहा चक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा णोइंदियईहा।

३. आभिनिबोधिक ज्ञान अट्ठाईस प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—

श्रोत्रेन्द्रिय-अर्थावग्रह, चक्षुरिन्द्रिय-अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय-अर्थावग्रह, रसनेन्द्रिय-अर्थावग्रह, स्पर्शनेन्द्रिय-अर्थावग्रह, नोइन्द्रिय-अर्थावग्रह।

श्रोत्रेन्द्रिय-व्यञ्जनावग्रह, घ्राणेन्द्रिय-व्यञ्जनावग्रह, रसनेन्द्रिय-व्यञ्जनावग्रह, स्पर्शनेन्द्रिय-व्यञ्जनावग्रह।

श्रोत्रेन्द्रिय-ईहा, चक्षुरिन्द्रिय-ईहा, घ्राणेन्द्रिय-ईहा, रसनेन्द्रिय-ईहा, स्पर्शनेन्द्रिय-ईहा, नोइन्द्रिय-ईहा।

सोइंदियावाते चक्खिदियावाते फासिंदियावाते णोइंदियावाते ।

श्रोत्रेन्द्रिय-अवाय, चक्षुरिन्द्रिय-अवाय, घ्राणेन्द्रिय-अवाय, रसनेन्द्रिय-अवाय, स्पर्शनेन्द्रिय-अवाय, नो-इन्दिय-अवाय ।

सोइंदियधारणा चक्खिदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा णोइंदियधारणा ।

श्रोत्रेन्द्रिय-धारणा, चक्षुरिन्द्रिय-धारणा, घ्राणेन्द्रिय-धारणा, रसनेन्द्रिय-धारणा, स्पर्शनेन्द्रिय-धारणा, और नो-इन्द्रिय-धारणा ।

४. ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

४ ईशानकल्प में विमानावास अट्ठाईस शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त हैं ।

५. जीवे णं देवगतिं णिबंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ णिबधति, त जहा—
देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेययसरीरनामं कम्मगसरीरनामं समचउरंससंठाणनामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगरुयलहुयनामं उवघायनामं पराघायनामं ऊसासनामं पसत्थविहायगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणं दोण्हमण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, सुभासुभाणं दोण्हमण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, सुभगनाम सुस्सरनामं, आएज्ज-अणाएज्जाणं दोण्हं अण्णयरं एगं नामं णिबंधइ, जसोकित्तिनामं निम्माणनामं ।

५. जीव देवगति का बंध करता हुआ नाम कर्म की अट्ठाईस उत्तरप्रकृतियों को बांधता है, जैसे कि—
देवगतिनाम, पंचेन्द्रियजातिनाम, वैक्रियशरीरनाम, शरीरनाम, तैजसशरीरनाम, कार्मणशरीरनाम, समचतुरस्रसंस्थाननाम, वैक्रियशरीर-अंगोपांगनाम, वर्णनाम, गंधनाम, रसनाम, स्पर्शनाम, देवानुपूर्वीनाम, अगुरुलघुनाम, उपघातनाम, पराघातनाम, उच्छ्वासनाम, प्रशस्तविहायोगनाम, त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, प्रत्येकशरीरनाम, स्थिरनाम और अस्थिरनाम—दोनों में से एक का बंध करता है शुभनाम और अशुभनाम—दोनों में से एक बंध का करता है, सुभगनाम, सुस्वरनाम, आदेयनाम और अनादेयनाम—दोनों में से एक का बंध करता है यशःकीर्त्तिनाम और निर्माणनाम ।

६. एवं चेव नेरइयेवि, नाणत्तं अप्प-सत्थविहायगइनामं हुंडसंठाण-नामं अथिरनामं दुब्भगनाम असुभनामं दुस्सरनामं अणादेज्ज-नामं अजसोकित्तीनामं ।

६ इसी प्रकार नैरयिक भी [विविध अट्ठाईस कर्म-प्रकृतियों का बंध करता है।] अस्थिरनाम, दुर्भगनाम, अशुभनाम, दुःस्वरनाम, अनादेयनाम, अयश· कीर्त्तिनाम और निर्माणनाम ।

७. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों को अट्ठाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइ-याणं नेरयाणं अट्ठावीसं सागरो-वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी [महातमः प्रभा] के कुछेक नैरयिकों की अट्ठा-ईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. कुछेक असुरकुमार देवों की अट्ठाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओ-माइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की अट्ठाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाणं देवाणं जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. उपरिम-अधस्तन ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः अट्ठाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. जे देवा मज्झिम-उवरिम-गेवेज्ज-एसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठा-वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. जो देव मध्यम-उपरिम विमानों में उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः अट्ठाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमा-सेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१३. वे देव अट्ठाईस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१४. तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४. उन देवों के अट्ठाईस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१५. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो अट्ठाईस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्व दुःखान्त करेंगे ।

## एगूणतीसइमो समवाओ

१. एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे णं पण्णत्ते तं जहा—
भोमे उप्पाए सुमिणे अंतलिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे ।

भोमे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—
सुत्ते वित्ती वत्तिए, एवं एक्केक्कं तिविहं ।

विकहाणुजोगे विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे ।

२. आसाढे णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

३. भद्दवए णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

४. कत्तिए णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

५. पोसे णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

६. फग्गुणे णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

## उनतीसवां समवाय

१. पाप-श्रुत के प्रसंग उनतीस प्रकार के प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१. भौम, २. उत्पात, ३. स्वप्न, ४. अन्तरिक्ष, ५. अंग, ६. स्वर, ७. व्यंजन, ८. लक्षण ।

भौम तीन प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
सूत्र, वृत्ति, वार्त्तिक ।

इस प्रकार एक-एक के तीन प्रकार [८ × ३ = २४ भेद] २५. विकथानुयोग, २६. विद्यानुयोग, २७. मंत्रानुयोग, २८. योगानुयोग, २९. अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग ।

२. आषाढ़ मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

३. भाद्रपद मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

४. कार्त्तिक मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

५. पौष मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

६. फाल्गुन मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

७. वइसाहे णं मासे एगूणतीसरा-
इंदिआइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते।

७. वैशाख मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है।

८. चंददिणे णं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ते।

८. चन्द्र दिन मुहुर्त्त-परिमाण की अपेक्षा से उनतीस मुहूर्त्त से कुछ अधिक प्रज्ञप्त है।

९. जीवे णं पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थयरनाम-सहियाओ नामस्स कम्मस्स णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ।

९. प्रशस्त अध्यवसाय-युक्त भविक सम्यग्दृष्टि जीव तीर्थंकर नामसहित नामकर्म की नियमतः उनतीस प्रकृतियों का बंध कर वैमानिक देवों में देवत्व से उपपन्न होता है।

१०. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूण-तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१०. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की उनतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइ-याणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की उनतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२. कुछेक असुरकुमार देवों की उनतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओ-माइं ठिई पण्णत्ता।

१३. सौधर्म-ईशानकल्प के कुछेक देवों की उनतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. उवरिम - मज्झिम - गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४. उपरिम-मध्यम ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः उनतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. जे देवा उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूण-तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१५. जो देव उपरिम-अधस्तन ग्रैवेयक विमानों में देवत्व से उपपन्न होते हैं, उनदेवों की उत्कृष्टतः उनतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१६. वे देव उनतीस अर्द्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्‌वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं।

१७. तेसि णं देवाणं एगूणतीसाए वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१७. उन देवों के उनतीस हजार वर्षों में आहार करने की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१८. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चि-स्संति परिनिव्वाइस्सति सव्व-दुक्खाणमंतं करिस्संति।

१८. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो उनतीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्व दुःखान्त करेंगे।

## तीसइमो समवाओ

१. तीसं मोहणीयठाणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. जे यावि तसे पाणे,
वारिमज्झे विगाहिया।
उदएणक्कम्म मारेइ,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२. सीसावेढेण जे केई,
आवेढेइ अभिक्खणं।
तिव्वासुभसमायारे,
महामोहं पकुव्वइ ॥

३. पाणिणा संपिहित्ताणं,
सोयमावरिय पाणिणं।
अंतोनदंतं मारेई,
महामोहं पकुव्वइ ॥

४. जायतेयं समारब्भ,
बहुं ओरुंभिया जणं।
अंतोधूमेण मारेई,
महामोहं पकुव्वइ ॥

५. सिस्सम्मि जे पहणइ,
उत्तमंगम्मि चेयसा।
विभज्ज मत्थयं फाले,
महामोहं पकुव्वइ ॥

६. पुणो पुणो पणिहिए,
हणित्ता उवहसे जणं।
फलेण अदुव दडेणं,
महामोहं पकुव्वइ ॥

## तीसवां समवाय

१. मोहनीय-स्थान तीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—

१. जो किसी त्रस प्राणी को पानी के वीच ले जाकर पानी से आक्रमण कर मारता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

२. जो तीव्र अशुभ समाचरणपूर्वक किसी के मस्तक को बन्धनों से निरन्तर वांधता है, वह महा-मोह का प्रवर्तन करता है।

३. जो प्राणी को हाथ से बांधकर, बंदकर अन्तर्विलाप करते हुए को मारता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

४. जो अनेक जीवों को अवरुद्ध कर, अग्नि जलाकर उसके धुंए से मारता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

५. जो किसी प्राणि के शीर्ष उत्तम अंग पर प्रहार करता है, मस्तक का विभाजन कर फोड़ देता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

६. जो पुनः पुनः मनुष्य का घात करता है, दण्ड या फरशे से हनन कर उपहास करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

७. गूढायारी निगूहेज्जा,
मायं मायाए छायए।
असच्चवाई णिण्हाई,
महामोहं पकुव्वइ ॥

७. जो गूढ़ाचारी माया से माया को छिपाकर असत्यवादी प्रलाप करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

८. धंसेइ जो अभूएणं,
अकम्मं अत्तकम्मुणा।
अदुवा तुम कासित्ति,
महामोहं पकुव्वइ ॥

८. 'तुम कौन हो' यह कहकर जो अपने अकर्म/दुष्कर्म के कर्म का धौंस/कलंक दूसरों पर जमाता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

९. जाणमाणो परिसओ,
सच्चामोसाणि भासइ।
अज्झीणझंझे पुरिसे,
महामोहं पकुव्वइ ॥

९. जो कलहकारी-पुरुष परिषद को जानता हुआ सत्यमृषा/सफेद झूठ बोलता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१०. अणायगस्स नयवं,
दारे तस्सेव धंसिया।
विउलं विक्खोभइत्ताणं,
किच्चा णं पडिबाहिरं ॥
उवगसंतंपि झंपित्ता,
पडिलोमाहिं वग्गुहिं।
भोगभोगे वियारेई,
महामोहं पकुव्वइ ॥

१०. जो मन्त्री नायक/नरेश की अनुपस्थिति में धौंस जमाता है, विपुल विक्षोभ/आतंक और अधिकार जमाता है, विलोम वचनों से निकटवर्तियों का भी तिरस्कार कर उनके भोग-उपभोग का विदारण कर देता है, वह महामोह का प्रवर्तत करता है।

११. अकुमारभूए जे केई,
कुमारभूएत्तहं वए।
इत्थीहिं गिद्धे वसए,
महामोहं पकुव्वइ ॥

११. जो कुंवारा न होते हुए भी स्वयं को कुंवारा कहता है, पर स्त्रियों में गृद्ध रहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१२. अबंभयारी जे केई,
बंभयारीत्तहं वए।
गद्दभेव्व गवां मज्झे,
विस्सरं नयई नंद ॥
अप्पणो अहिए बाले,
मायामोसं बहुं भसे।

१२. जो कोई ब्रह्मचारी न होते हुए भी स्वयं को ब्रह्मचारी कहता है, उसका कहना सांडों के बीच गधे की तरह रेंकना है; अत्यधिक मायामृषा बोलने वाला अज्ञानी अपना अहित

इत्थीविसयगेहीए,
महामोहं पकुव्वइ ।।

करता है और स्त्री-विषय के प्रति गृद्ध होता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१३. जं निस्सिए उव्वहइ,
जससाअहिगमेण वा ।
तस्स लुब्भइ वित्तम्मि,
महामोहं पकुव्वइ ।।

१३. जो यश का लाभ होने से आश्रित जीवन व्यतीत करता है, वह धन-लुब्ध महामोह का प्रवर्तन करता है।

१४. ईसरेण अदुवा गामेणं,
अणिस्सरे ईसरीकए ।
तस्स सपग्गहीयस्स,
सिरी अतुलमागया ।।
ईसादोसेण आइट्ठे,
कलुसाविलचेयसे ।
जे अंतरायं चेएइ,
महामोहं पकुव्वइ ।।

१४ उस सम्पदाहीन के पास अतुल श्री/धन-सम्पत्ति आती है, जो ऐश्वर्य से कम या अनैश्वर्य से ऐश्वर्य प्राप्त करता है। किन्तु जो ईर्ष्या-द्वेष से आविष्ट/आक्रान्त पुरुष कलुष-चित्त से अन्तराय उत्पन्न करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१५. सप्पी जहा अंडउडं,
भत्तारं जो विहिंसइ ।
सेणावइं पसत्थारं,
महामोहं पकुव्वइ ।।

१५. जिस प्रकार सर्पिणी अण्डपुट/अण्डराशि का हनन करती है, उसी प्रकार जो भर्तार, सेनापति और प्रशास्ता/प्रशासक का हनन करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१६. जे नायगं व रट्ठस्स,
नेयारं निगमस्स वा ।
सेट्ठिं बहुरवं हंता,
महामोहं पकुव्वइ ।।

१६. जो राष्ट्र-नायक, निगम-नेता और प्रमुख/नगरसेठ का हनन करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१७. बहुजणस्स णेयारं,
दीवं ताणं च पाणिणं ।
एयारिसं नरं हंता,
महामोहं पकुव्वइ ।।

१७ जो पुरुष प्राणी-बहुल के लिए द्वीप/दीप, त्राण और नेता है, उसका हनन महामोह का प्रवर्तन करता है।

१८. उवट्ठियं पडिविरयं,
संजयं सुतवस्सियं ।

१८. जो धर्म-उपक्रम में उपस्थित, प्रतिविरत, संयत, सुतपस्वी का

वोकम्म धम्माओ भंसे,
महामोहं पकुव्वइ ॥

भ्रंश करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१९. तहेवाणंतणाणीणं,
जिणाणं वरदंसिणं।
तेसिं अवण्णवं बाले,
महामोहं पकुव्वइ ॥

१९. अनन्त ज्ञानी, वरदर्शी/पारदर्शी जिनेश्वरों का अवर्णक/निन्दक बाल-पुरुष महामोह का प्रवर्तन करता है।

२०. नेयाउअस्स मग्गस्स,
दुट्ठे अवयरई बहुं।
तं तिप्पयंतो भावेइ,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२०. जो दुष्ट न्याय-मार्ग का अपकार/उल्लंघन करता है, उसी में तृप्ति का भाव करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

२१. आयरियउवज्झाएहिं,
सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिसई बाले,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२१. जो श्रुत और विनय-ग्राहित/शिक्षित बाल-पुरुष आचार्य और उपाध्याय पर खीजता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

२२. आयरियउवज्झायाणं,
सम्मं नो पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२२. जो अप्रतिपूजक और स्तब्ध/अभिमानी व्यक्ति आचार्य उपाध्याय को सम्यक् प्रकार से परितृप्त नहीं करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

२३. अबहुस्सुए य जे केई,
सुएण पविकत्थइ।
सज्झायवायं वयइ,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२३. जो कोई अल्पज्ञ श्रुत से आत्म-प्रशंसा करता हैं, स्वयं को स्वाध्यायवादी कहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

२४. अतवस्सीए य जे केई,
तवेण पविकत्थइ।
सव्वलोयपरे तेणे,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२४. जो कोई अतपस्वी होते हुए भी सम्पूर्ण लोक में उत्कृष्ट तप से आत्म-प्रशंसा करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

२५. साहारणट्ठा जे केई,
गिलाणम्मि उवट्ठिए।
पहू ण कुणई किच्चं,
मज्झंपि से न कुव्वइ ॥

२५. जो कोई ग्लान/रुग्ण के उपस्थित होने पर साधारणतः बहुत या थोड़ी—कुछ भी सेवा नहीं करता, आत्म-अबोधिक

सढे नियडीपण्णाणे,
कलुसाउलचेयसे ।
अप्पणो य अबोहीए,
महामोहं पकुव्वइ ॥

शठ-पुरुष कलुष-लिप्त चित्त से स्वयं की नियति को प्रज्ञापूर्ण कहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२६. जे कहाहिगरणाइं,
संपउंजे पुणो पुणो ।
सव्वतित्थाण भेयाय,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२६. जो समस्त तीर्थों/धर्मों के [गुप्त] भेदों/रहस्यों को कथाओं के माध्यम से संप्रयुक्त करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२७. जे य आहम्मिए जोए,
संपउंजे पुणो पुणो ।
सहाहेउं सहीहेउं,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२७. जो अधार्मिक योग को श्लाघा या मित्रगण के लिए पुनः पुनः सम्प्रयुक्त करता है, वह महा-मोह का प्रवर्तन करता है ।

२८. जे य माणुस्सए भोए,
अदुवा पारलोइए ।
तेऽतिप्पयंतो आसयइ,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२८. जो अतृप्त मानुषिक और पार-लौकिक भोगों का आश्रय लेता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२९. इड्ढी जुई जसो वण्णो,
देवाणं वलवीरियं ।
तेसिं अवण्णवं वाले,
महामोहं पकुव्वइ ॥

२९. जो बाल-पुरुष देवों के बल-वीर्य, ऋद्धि, द्युति, यश और वर्ण का अवर्णक/निन्दक है, वह महा-मोह का प्रवर्तन करता है ।

३०. अपस्समाणो पस्सामि,
देवे जक्खे य गुज्झगे ।
अण्णाणि जिणपूयट्ठी,
महामोहं पकुव्वइ ॥

३०. जो अज्ञानी जिन की तरह स्वयं की पूजा का इच्छुक होकर देव, यक्ष और गुह्यक को न देखता हुआ भी 'देखता हूँ' कहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२. थेरे णं मंडियपुत्ते तीसं वासाइ सामण्णपरियायं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२. स्थविर मंडितपुत्र तीस वर्ष तक श्रामण्य-पर्याय पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत और सर्व दुःख रहित हुए ।

३. एगमेगे णं अहोरत्ते तीसं मुहुत्ता मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ते। एएसि णं तीसाए मुहुत्ताणं तीसं नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—
रोद्दे सेते मित्ते वाऊ सुपीए अभियंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे आणंदे विजए वीससेणे वायावच्चे उवसमे ईसाणे तिट्ठे भावियप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवं आवधं तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे।

३. प्रत्येक अहोरात्र मुहूर्त्त के परिमाण से तीस मुहूर्त्त का होता है। इन तीस मुहूर्त्तों के तीस नाम प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
रौद्र, श्रेयान्, मित्र, वायु, सुपीत, अभिचन्द्र, माहेन्द्र, प्रलम्ब, सत्य, आनन्द, विजय, विश्वसेन, प्राजापत्य, उपशम, ईशान, त्वष्टा, भावितात्मा, वैश्रमण, वरुण, शतऋषभ, गन्धर्व, अग्निवैश्यायन, आतप, आव्यध, तष्टप, भूमह, ऋपभ, सर्वार्थसिद्ध, राक्षस।

४. अरे णं अरहा तीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

४. अर्हत् अर ऊँचाई की दृष्टि से तीस धनुष ऊँचे थे।

५. सहस्सारस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तीसं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

५. सहस्रार के देवेन्द्र देवराज के तीस हजार सामानिक देव प्रज्ञप्त थे।

६. पासे णं अरहा तीसं वासाइं अगार मज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

६. अर्हत् पार्श्व ने तीस वर्ष तक अगार-मध्य रहकर, अगार से अनगार-प्रव्रज्या ली।

७. समणे भगवं महावीरे तीसं वासाइं आगारमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

७. श्रमण भगवान महावीर ने तीस वर्ष तक अगारमध्य रहकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

८. रयणप्पहाए णं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

८. रत्नप्रभा पृथ्वी पर तीस शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं।

९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की तीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी [महातमःप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की तीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. कुछेक असुरकुमार देवों की तीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. उवरिम - उवरिम - गेविज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१२. ऊर्ध्ववर्ती ऊपरी ग्रैवेयक देवों की जघन्यतः/न्यूनतः तीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. जे देवा उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१३. जो देव ऊपरी मध्यम ग्रैवेयक विमानों में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः तीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. ते णं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१४. वे देव तीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते है, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१५. तेसि णं देवाणं तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५. उन देवों के तीस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१६. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ।

१६. कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो तीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

## एक्कतीसइमो समवाओ

१. इक्कतीसं सिद्धाइगुणा पण्णत्ता, तं जहा—
खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे, खीणे ओहिणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे, खीणे केवलणाणावरणे, खीणे चक्खुदंसणावरणे, खीणे ओहिदंसणावरणे, खीणे केवलदंसणावरणे, खीणा निद्दा, खीणा णिद्दाणिद्दा, खीणा पयला, खीणा पयलापयला, खीणा थीणगिद्धी, खीणे सायावेयणिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे, खीणे दंसणमोहणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे, खीणे नेरइयाउए, खीणे तिरियाउए, खीणे मणुस्साउए, खीणे देवाउए, खीणे उच्चागोए, खीणे नियागोए, खीणे सुभणामे, खीणे असुभणामे, खीणे दाणंतराए, खीणे लाभंतराए, खीणे भोगंतराए, खीणे उवभोगंतराए, खीणे वीरियंतराए।

## इकतीसवां समवाय

१. सिद्ध आदि के गुण इकतीस प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
१. आभिनिवोधिक ज्ञानावरण का क्षय, २. श्रुतज्ञानावरण का क्षय, ३. अवधि ज्ञानावरण का क्षय, ४. मनःपर्याय ज्ञानावरण का क्षय, ५. केवल ज्ञानावरण का क्षय, ६. चक्षु दर्शनावरण का क्षय, ७. अचक्षु दर्शनावरण का क्षय, ८. अवधि दर्शनावरण का क्षय, ९. केवल दर्शनावरण का क्षय, १०. निद्रा का क्षय, ११. निद्रा-निद्रा का क्षय, १२. प्रचला का क्षय, १३. प्रचला-प्रचला का क्षय, १४. स्त्यानगृद्धि का क्षय, १५. सात-वेदनीय का क्षय, १६. असात-वेदनीय का क्षय, १७. दर्शन मोहनीय का क्षय, १८. चरित्र मोहनीय का क्षय, १९. नैरयिक का क्षय, २०. तिर्यञ्च आयुष्य का क्षय, २१. मनुष्य आयुष्य का क्षय, २२. देवायु का क्षय, २३. उच्चगोत्र का क्षय, २४. नीचगोत्र का क्षय, २५. शुभनाम का क्षय, २६. अशुभनाम का क्षय, २७. दानान्तराय का क्षय, २८. लाभान्तराय का क्षय, २९. भोगान्तराय का क्षय, ३०. उपभोगान्तराय का क्षय, ३१. वीर्यान्तराय का क्षय।

२. मंदरे णं पव्वए धरणितले एक्क-तीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणे परिक्खे-वेणं पण्णत्ते ।

२. मंदर पर्वत की धरणीतल पर इकतीस हजार छः सौ तेवीस योजन से कुछ कम परिधि प्रज्ञप्त है।

३. जया णं सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि य एक्कतीसेहिं जोयणस-एहिं तीसाए सट्ठिभागेहिं जोयण-स्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमा-गच्छइ ।

३. जब सूर्य सर्व-बाह्य-मंडल में उप-संक्रमण कर विचरण करता है, तब इस पृथिवी पर मनुष्य को इकतीस हजार आठ सौ इकतीस और एक योजन के साठ भागों में से तीस भाग (३१८३१$\frac{१}{२}$ योजन) दूर से आँखों से दिखाई दे जाता है।

४. अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाणि राइंदियाणि राइं-दियग्गेणं पण्णत्ते ।

४. अभिवर्द्धित मास रात-दिन के परि-माण से इकतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त हैं।

५. आइच्चे णं मासे एक्कतीसं राइं-दियाणि किंचि विसेसूणाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

५. सूर्यमास रात-दिन के परिमाण से कुछ-विशेष-न्यून इकतीस दिन-रात का प्रज्ञप्त हैं।

६. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं इक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६. इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की इकतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

७. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं इक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की इकतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

८. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं इक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. कुछेक असुरकुमार देवों की इकतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं जहण्णेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की इकतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. विजय - वेजयंत - जयंत - अपरा-जियाणं देवाणं जहण्णेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित देवों की जघन्यतः इकतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. जे देवा उवरिम-उवरिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ जो देव ऊर्ध्ववर्ती ग्रैवेयक विमानों में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः इकतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. ते णं इक्कतीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१२. वे देव इकतीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते है, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते है और निःश्वास छोड़ते हैं ।

१३. तेसि णं देवाणं इक्कतीसाए वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३. उन देवों के इकतीस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे इक्कतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति करिस्संति ।

१४. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो इकतीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्व दुःखान्त करेंगे ।

# बत्तीसइमो समवाओ

# बत्तीसवां समवाय

१. बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता, तं जहा—

१. आलोयणा निरवलावे,
आवईसु दढधम्मया।
अणिस्सिओवहाणे य,
सिक्खा निप्पडिकम्मया॥

२. अण्णतता अलोभे य,
तितिक्खा अज्जवे सुती।
सम्मदिट्ठी समाही य,
आयारे विणओवए॥

३. धिईमई य संवेगे,
पणिही सुविहि संवरे।
अत्तदोसोवसंहारे,
सव्वकामविरत्तया॥

४. पच्चक्खाणे विउस्सग्गे,
अप्पमादे लवालवे।
झाणसंवरजोगे य,
उदए मारणंतिए॥

५. संगाणं च परिण्णा,
पायच्छित्तकरणेत्ति य।
आराहणा य मरणंते,
बत्तीसं जोगसंगहा॥

१. योग-संग्रह बत्तीस प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—

१. आलोचना, २. निरपलाप, ३. आपत्ति में दृढ़धर्मता, ४. अनिश्रितोपधान/अनाश्रित तप ५. शिक्षा, ६. निष्प्रतिकर्मता, ७. अज्ञातता, ८. अलोभ, ९. तितिक्षा, १०. आर्जव, ११. शुचि, १२. सम्यग्दृष्टि, १३. समाधि, १४. आचार, १५. विनयोपग/निरहंकारिता, १६. धृतिमति, १७. संवेग, १८. प्रणिधि, १९. सुविधि, २०. संवर, २१. आत्मदोषोपसंहार, २२. सर्वकामविरक्तता, २३. प्रत्याख्यान, २४. व्युत्सर्ग, २५. अप्रमाद, २६. लवालव—समय-प्रेक्षा, २७. ध्यान, २८. संवर योग, २९. मारणान्तिक उदय, ३०. संग-परिज्ञा, ३१. प्रायश्चित्तकरण, ३२. मारणान्तिक आराधना।
—ये बत्तीस योग-संग्रह हैं।

२. बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता, तं जहा—
चमरे बली धरणे भूयाणंदे वेणुदेवे वेणुदाली हरि हरिस्सहे अग्गिसिहे अग्गिमाणवे पुण्णे

२. देवेन्द्र बत्तीस प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
चमर, बली, धरण, भूतानन्द, वेणुदेव, वेणुदाली, हरि, हरिस्सह, अग्निशिख, अग्निमाणव, पूर्ण, विशिष्ट, जलकान्त, जलप्रभ, अमितगति,

विसिट्ठे जलकंते जलप्पभे अमियगती अमितवाहणे वेलंबे पभंजणे घोसे महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे माहिंदे बंभे लंतए महासुक्के सहस्सारे पाणए अच्चुए ।

अमितवाहन, वैलंब, प्रभंजन, घोष, महाघोष, चन्द्र, सूर्य, शक्र, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, प्राणत और अच्युत ।

३. कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया बत्तीसं जिणसया होत्था ।

३. अर्हत् कुन्थु के बत्तीस सौ बत्तीस जिन थे ।

४. सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

४. सौधर्मकल्प में बत्तीस शत-सहस्र/लाख विमान प्रज्ञप्त हैं ।

५. रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे पण्णत्ते ।

५. रेवती नक्षत्र के बत्तीस तारे प्रज्ञप्त हैं ।

६. बत्तीसतिविहे णट्टे पण्णत्ते ।

६. नाट्य बत्तीस प्रकार का प्रज्ञप्त है ।

७. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की बत्तीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८ अधोवर्ती सातवीं पृथिवी के कुछेक नैरयिकों की बत्तीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

९. कुछेक असुरकुमार देवों की बत्तीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की बत्तीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. जे देवा विजय - वेजयंत - जयंत अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं अत्थे-गइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. जो देव विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमानों में देवत्व से उप-पन्न हैं, उन देवों की बत्तीस सागरो-पम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. ते णं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊस-संति वा नीससंति वा ।

१२. वे देव बत्तीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं ।

१३. ते णं देवाणं बत्तीसाए वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३. उन देवों के बत्तीस हजार वर्षों से आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण-मंतं करिस्संति ।

१४. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो बत्तीस भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

# तेत्तीसइमो समवाओ

१. तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. सेहे राइणियस्स आसन्नं गंता भवइ—आसायणा सेहस्स।

२. सेहे राइणियस्स पुरओ गंता भवइ—आसायणा सेहस्स।

३. सेहे राइणियस्स सपक्खं गंता भवइ—आसायणा सेहस्स।

४. सेहे राइणियस्स आसन्नं ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स।

५. सेहे राइणियस्स पुरओ ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स।

६. सेहे राइणियस्स सपक्खं ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स।

७. सेहे राइणियस्स आसन्नं निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

८. सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

# तेतीसवां समवाय

१. आशातनाएं तेतीस हैं, जैसे कि—

१. शैक्ष (शिक्षित / नवदीक्षित) रात्निक/पर्याय-ज्येष्ठ से सटकर चलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

२. शैक्ष रात्निक से आगे चलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

३. शैक्ष रात्निक के बराबर चलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

४. शैक्ष रात्निक से सटकर खड़ा रहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

५. शैक्ष रात्निक के आगे खड़ा रहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

६. शैक्ष रात्निक के बराबर खड़ा रहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

७. शैक्ष रात्निक से सटकर बैठता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

८. शैक्ष रात्निक के आगे बैठता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

९. सेहे राइणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

९. शैक्ष रात्निक के बराबर बैठता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१०. सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खंते समाणे पुव्वामेव सेहतराए आयामेइ पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

१०. शैक्ष रात्निक के साथ बाहर विचार-भूमि/शौच-भूमि जाने पर शैक्ष पहले ही आचमन/शौच कर लेता है, किन्तु रात्निक उसके पश्चात्, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

११. सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति, पच्छा राइणिए—आसासणा सेहस्स।

११. शैक्ष रात्निक के साथ बाहर विहार-भूमि (स्वाध्याय-भूमि) या विचार-भूमि जाने पर शैक्ष पहले (गमनागमन विषयक) आलोचना कर लेता है, किन्तु रात्निक उसके पश्चात्, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१२. सेहे राइणियस्स रातो वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो के सुत्ते? के जागरे? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिसुणेत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।

१२. शैक्ष को रात्निक द्वारा रात्रि या विकाल में यह पूछे जाने पर—'आर्य! कौन सोया है और कौन जगा है?' शैक्ष जागृत होते हुए भी अनसुना कर देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१३. केइ राइणियस्स पुव्वं संलवित्तए सिया, तं सेहे पुव्वतरागं आलवेति, पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स।

१३. रात्निक को किसी से कुछ कहना है, किन्तु शैक्ष उससे पहले ही कह देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१४. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स आलोएइ, पच्छा

१४. शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर पहले शैक्षतर के सामने [आहार-चर्या विषयक] आलोचना करता है, फिर

राइणियस्स — आसायणा सेहस्स ।

१५. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स उवदंसेति, पच्छा राइणियस्स — आसायणा सेहस्स ।

१६. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागं उवणिमंतेइ, पच्छा राइणियं आसायणा सेहस्स ।

१७. सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं राइणियं अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं दलयइ— आसायणा सेहस्स ।

१८. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता राइणिएण सद्धिं आहरेमाणे तत्थ सेहे खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं रसितं-रसितं मणुण्णं-मणुण्णं मणामं-मणामं निद्धं-निद्धं लुक्खं-लुक्खं आहरेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

१९. सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

रात्निक के सामने, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१५. शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर पहले शैक्षतर को दिखाता है, पश्चात् रात्निक को, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१६. शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर पहले शैक्षतर को निमंत्रित करता है, फिर रात्निक को, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१७. शैक्ष रात्निक के साथ अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर उनसे बिना पूछे, जिस-जिस को चाहता है उस-उस को 'खाओ-खाओ' कहता हुआ देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१८. शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर रात्निक के साथ आहार करता हुआ उच्छ्रित रसित, मनोज्ञ, मनोनुकूल, स्निग्ध और रूक्ष—उत्तम भोज्य पदार्थों को डाय-डाय/जल्द-जल्दी खद्ध-खद्ध/बड़े-बड़े कवलों से खाता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१९. शैक्ष रात्निक के वचन-व्यवहार को अनसुना कर देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२०. सेहे राइणियस्स खद्धं-खद्धं वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स ।

२०. शैक्ष रात्निक को 'खाओ-खाओ' ऐसी उपेक्षणीय बात बोलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२१. सेहे राइणियस्स 'किं' ति वइत्ता भवति आसायणा सेहस्स ।

२१. शैक्ष रात्निक को 'क्या है' ऐसा बोलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२२. सेहे राइणियं 'तुम'ति वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स ।

२२. शैक्ष रात्निक को 'तू' कहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२३. सेहे राइणियं तज्जाएण-तज्जाएण पडिभणित्ता भवइ— आसायणा सेहस्स ।

२३. शैक्ष रात्निक को उन्हीं के कहे हुए को प्रत्युत्तर में कह देता है—चिड़ाता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२४. सेहे राइणियस्स कहं कहे-माणस्स 'इति एवं'ति वत्ता न भवति—आसायणा सेहस्स ।

२४. शैक्ष रात्निक कथा को 'ऐसा ही है, नहीं कहता', यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२५. सेहे राइणियस्स कहं कहे-माणस्स 'नो सुमरसी'ति वत्ता भवत्ति—आसायणा सेहस्स ।

२५. शैक्ष रान्निक को कथा कहते समय 'यह भी स्मरण नहीं है'—ऐसा कहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२६. सेहे राइणियस्स कहं कहे-माणस्स कहं अच्छिदित्ता भवति—आसायणा सेहस्स ।

२६. शैक्ष रात्निक द्वारा कही जा रही कथा को रोकता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२७. सेहे राइणियस्स कहं कहे परिसं माणस्स भेत्ताभवति —आसायणा सेहस्स ।

२७. शैक्ष रात्निक द्वारा कथा कहते समय परिषद् को भंग करता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२८. सेहे राइणियस्स कहं कहे-माणस्स तीसे परिसाए अणु-ट्ठिताए अभिन्नाए अवुच्छि-न्नाए अव्वोगडाए दोच्चं पि तमेव कहं कहित्ता भवति—आसायणा सेहस्स ।

२८. शैक्ष रात्निक द्वारा कथा कहते समय परिषद् के अनुत्थित, अमित्र, अव्युवच्छिन्न, अव्या-कृत, अभंग रहने पर दूसरी बार उसी कथा को कहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२९. सेहे राइणियस्स सेज्जा-संथारगं पाएणं संघट्टित्ता, हत्थेणं अणणुण्णवेत्ता गच्छ-ति—आसायणा सेहस्स ।

२९. शैक्ष रात्निक के शय्या-संस्तारक (बिछौना) का पाँवों से संघट्टन कर हाथ से अनुज्ञापित किये बिना जाता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

३०. सेहे राइणियस्स सेज्जा-संथारए चिट्ठित्ता वा निसी-इत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवइ—आसायणा सेहस्स ।

३०. शैक्ष रात्निक के शय्या-संस्तारक पर खड़ा होता है, बैठता है या सोता है, यह शैक्ष-कृत आशा-तना है ।

३१. सेहे राइणियस्स समासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स ।

३१ शैक्ष रात्निक से ऊँचे आसन पर खड़ा रहता है, बैठता है या सोता है, यह शैक्ष-कृत आशा-तना है ।

३२. सेहे राइणियस्स समासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स ।

३२. शैक रात्निक के बराबर आसन पर खड़ा रहता है, बैठता है या सोता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

३३. सेहे राइणियस्स आलव-माणस्स तत्थगते चिय पडि-सुणित्ता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

३३. शैक्ष रात्निक के वक्तव्य का अपने आसन पर बैठे-बैठे ही प्रतिश्रोता होता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुर-रण्णो चमरचंचाए राय-हाणीए एक्कमेक्के बारे तेत्तीसं-तेत्तीसं भोमा पण्णत्ता ।

२. चमर असुरेन्द्र असुरराज की चमर-चंचा राजधानी के प्रत्येक द्वार पर तेतीस-तेतीस भौम/भवन हैं ।

३. महाविदेहे णं वासं तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खभेणं पण्णत्ते ।

३. महाविदेह-वर्ष/क्षेत्र तेतीस हजार योजन से कुछ अधिक विष्कम्भ/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

४. जया णं सूरिए वाहिराणं अंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता णं

४. जब सूर्य बाह्य-मंडल से अन्तर्वर्ती तीसरे मंडल में उपसंक्रमण कर

चारं चरइ, तया णं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयण-सहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खु-प्फासं हव्वमागच्छइ ।

विचरण करता है, तब भरतक्षेत्रगत मनुष्य को वह कुछ विशेष न्यून तेतीस हजार योजन की दूरी से चक्षु-स्पर्श होता है ।

५. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

५. इस रत्नप्रभा पृथिवी के कुछेक नैर-यिकों की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

६. अहेसत्तमाए पुढवीए काल-महा-काल-रोरुय-महारोरुएसु नेर-याणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६. अधोवर्ती सातवीं पृथिवी के काल, महाकाल, रोरुक और महारोरुक—नरकावासों के नैरयिकों की उत्कृष्टतः तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

७. अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाणं अजह-ण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरो-वमाइं ठिई पण्णत्ता ।

७. अप्रतिष्ठान-नरक के नैरयिकों की अजघन्यतः-अनुत्कृष्टतः / सामान्यतः तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

८. कुछेक असुरकुमार देवों की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं तेत्तीसं पलिओ-माइं ठिई पण्णत्ता ।

९. सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. विजय-वेजयंत जयंत-अपराजि-एसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१०. विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपरा-जित विमानों में उत्कृष्टतः तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. जे देवा सव्वट्ठसिद्धं महाविमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११. जो देव सर्वार्थसिद्ध महाविमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की अजघन्यतः अनुत्कृष्टतः अर्थात् सामान्यतः तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. ते णं देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१२. वे देव तेंतीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं।

१३. तेसि णं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१३. उन देवों के तेंतीस हजार वर्षों में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१४. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१४. कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो तेंतीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे।

## चोत्तीसइमो समवाओ

1. चोत्तीसं बुद्धाइसेसा पण्णत्ता, तं जहा—
   1. अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे।
   2. निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी।
   3. गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए।
   4. पउमुप्पलगंधिए उस्सास-निस्सासे।
   5. पच्छन्ने आहारनीहारे, अद्दिस्से मंसचक्खुणा।
   6. आगासगयं चक्कं।
   7. आगासगयं छत्तं।
   8. आगासियाओ सेयवरचामराओ।
   9. आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं।
   10. आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ।

## चौतीसवां समवाय

1. बुद्ध/तीर्थंकर के अतिशेष/अतिशय चौतीस प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
   1. केश, श्मश्रु/दाढ़ी-मूछ, रोम, नख अवस्थित रहते हैं।
   2. निरामय/रोगरहित और निरुपलेप / मल-स्वेद-रहित शरीर होता है।
   3. मांस और शोणित/रक्त दूध के समान पाण्डुर/श्वेत होता है।
   4. पद्मकमल की तरह सुगन्धित उच्छ्वास-निःश्वास होते हैं।
   5. आहार और नीहार प्रच्छन्न होते हैं, मांस-चक्षु द्वारा अदृश्य रहते हैं।
   6. आकाशगत [धर्म] चक्र चलता है।
   7. आकाशगत छत्र होता है।
   8. आकाश में श्रेष्ठ श्वेत चामर ढुलते हैं।
   9. आकाशवत्, स्फटिकमय पाद-पीठ सहित सिंहासन होता है।
   10. आगे-आगे आकाश में हजारों लघुपताकाओं से अभिमण्डित सुन्दर इन्द्रध्वज चलता है।

११. जत्थ जत्थवि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयंति वा तत्थ तत्थवि य णं तक्खणादेव संछन्नपत्तपुप्फ-पल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपडागो असोगवरपायवो अभिसंजायइ।

११. जहां-जहां अर्हन्त भगवन्त ठहरते या बैठते हैं, वहां-वहां तत्क्षण समाच्छादित पुष्प और पल्लव से व्याकुल, छत्र-सहित ध्वज-सहित, घंट-सहित पताका-सहित अशोकवृक्ष उत्पन्न हो जाता है।

१२. ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि तेयमंडलं अभिसंजायइ, अंधकारेवि य णं दस दिसाओ पभासेइ।

१२. मुकुट-स्थान से कुछ पीछे तेज-मंडल/आभामंडल होता है जो अन्धकार में भी दसों दिशाओं को प्रभासित करता है।

१३. बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे।

१३. भूमिभाग विशेष सम और रमणीय होता है।

१४. अहोसिरा कंटया भवंति।

१४. कण्टक अधोमुख हो जाते हैं।

१५. उडुविवरीया सुहफासा भवंति।

१५. ऋतुएँ अविपरीत/अनुकूल और सुखस्पर्शी/सुखदायी हो जाती है।

१६. सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जति।

१६. शीतल, सुखदायी, सुरभित वायु द्वारा एक योजन तक परिमण्डल/पर्यावरण का सर्व ओर से सम्प्रमार्जन होता है।

१७. जुत्त-फुसिएण य मेहेण निहय-रय-रेणुयं कज्जइ।

१७. विन्दु-पात युक्त मेघ द्वारा रज-रेणु को निहत/उपशान्त किया जाता है।

१८. जल-थलय - भासुर - पभूतेणं विंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाण-मित्ते पुप्फोवयारे कज्जइ।

१८. जलज, स्थलज, प्रभूत/प्रस्फुटित, वृन्त-स्थायी/पत्रपूरित, पंच-वर्णी कुसुमों द्वारा घुटने जितने प्रमाण तक पुष्पोपचार होता है।

१६. अमणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं अवकरिसो भवइ ।

१६. अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध का अपकर्ष होता है ।

२०. मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं पाउब्भावो भवइ ।

२०. मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध का प्रादुर्भाव होता है ।

२१. पच्चाहरओवि य णं हियय-गमणीओ जोयणनीहारी सरो ।

२१. प्रत्याहर/उपदेश के समय हृदयंगम और योजनगामी स्वर होता है ।

२२. भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।

२२. भगवान् अर्द्धमागधी भाषा में धर्म का आख्यान करते हैं ।

२३. सावि य णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेंसि सव्वेंसि आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पय - मिस - पसु-पक्खि-सिरी-सिवाणं अप्पणो हिय-सिव - सुहदाभासत्ताए परिणमइ ।

२३. वह भाष्यमाण अर्द्धमागधी भाषा सुनने वाले आर्य, अनार्य, द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी, सरीसृप आदि की अपनी-अपनी हित, शिव और सुखद भाषा में परिणत हो जाती है ।

२४. पुव्वबद्धवेरावि य णं देवा-सुर - नाग - सुवण्ण - जक्ख-रक्खस - किन्नर - किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगा अर-हओ पायमूले पसंतचित्त-माणसा धम्मं निसामंति ।

२४. पूर्वबद्ध वैर वाले भी और देव, असुर, नाग, सुपर्ण, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गन्धर्व और महोरग अर्हत के समीप प्रशांत चित्त और प्रशान्त मन से धर्म को श्रवण करते हैं ।

२५. अण्णउत्थिय - पावयणियावि य ण मागया वंदंति ।

२५. अन्ययूथिक/तीर्थिक प्रावचनिक भी आकर वन्दन करते हैं ।

२६. आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणा हवंति ।

२६. अर्हत् के सामने समागत [अन्य-तीर्थिक] निरुत्तर हो जाते हैं ।

२७. *जओ जओवि य णं अरहंतो* भगवंतो विहरंति तओ

२७. *जहां-जहां अर्हत् भगवान्* विह-रण करते हैं, वहां-वहां पचीस

तत्रोवि य णं जोयणपण-
वीसाएणं ईती न भवइ ।

योजन में ईति / भीति नहीं
होती ।

२८. मारी न भवइ ।

२८. मारी नहीं होती ।

२९. सचक्कं न भवइ ।

२९. स्वचक्र/सैन्य-विद्रोह नहीं होता ।

३०. परचक्कं न भवइ ।

३०. परचक्र/परकीय विद्रोह नहीं
होता ।

३१. अइवुट्ठी न भवइ ।

३१. अतिवृष्टि नहीं होती ।

३२. अणावुट्ठी न भवइ ।

३२. अनावृष्टि नहीं होती ।

३३. दुब्भिक्खं न भवइ ।

३३. दुर्भिक्ष नहीं होता ।

३४. पुव्वुप्पण्णावि य णं उप्पा-
इया वाही खिप्पामेव उव-
समंति ।

३४. पूर्व उत्पन्न औत्पातिक व्याधियां
शीघ्र शान्त हो जाती हैं ।

२. जंबुद्दीवे णं दीवे चउत्तीसं चक्क-
वट्टिविजया पण्णत्ता, तं
जहा—बत्तीसं महाविदेहे,
दो भरहेरवए ।

२. जम्बुद्वीप-द्वीप में चौंतीस चक्रवर्ती-
विजय प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
महाविदेह में बत्तीस, दो भरत
और ऐरवत एक ।

३. जंबुद्दीवे णं दीवे चोत्तीसं
दीहवेयड्ढा पण्णत्ता ।

३. जम्बूद्वीप द्वीप में चौंतीस दीर्घवैताढ्य
प्रज्ञप्त है ।

४. जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसपए
चोत्तीसं तित्थंकरा समुप्प-
ज्जंति ।

४. जम्बूद्वीप द्वीप में उत्कृष्टतः चौंतीस
तीर्थंकर समुत्पन्न होते हैं ।

५. चमरस्स णं असुरिंदस्स
असुररण्णो चोत्तीसं भवणा-
वाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

५. चमर असुरेन्द्र असुरराज के भवना-
वास चौंतीस शत-सहस्र / लाख
प्रज्ञप्त हैं ।

६. पढमपंचमछट्ठीसत्तमासु—
चउसु पुढवीसु चोत्तीसं
निरयावास-सयसहस्सा पण्णत्ता ।

६. पहली, पांचवीं, छठी और सातवीं—
इन चार पृथ्वियों में चौंतीस शत-
सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त है ।

## पणतीसइमो समवाओ

१. पणतीसं सच्चवयणाइसेसा पण्णत्ता।

२. कुंथू णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३. दत्ते णं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

४. नंदणे णं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

५. सोहम्मे कप्पे सुहम्माए सभाए माणवए चेइयक्खंभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस-अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसं जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिण-सकहाओ पण्णत्ताओ।

६. बितियचउत्थीसु—दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

## पैंतीसवां समवाय

१. सत्य-वचन के अतिशेष / अतिशय पैंतीस प्रज्ञप्त हैं।

२. अर्हत् कुन्थु ऊँचाई की दृष्टि से पैंतीस धनुष ऊँचे थे।

३. वासुदेव दत्त ऊँचाई की दृष्टि से पैंतीस धनुष ऊँचे थे।

४. बलदेव नन्दन ऊँचाई की दृष्टि से पैंतीस धनुष ऊँचे थे।

५. सौधर्म कल्प की सुधर्मा सभा में माणवक चैत्यस्तम्भ के नीचे और ऊपर साढ़े बारह योजनों को छोड़कर मध्य के पैंतीस योजन में वज्रमय गोलवृत्त में जिन/अर्हत् की अस्थियां हैं।

६. दूसरी और चौथी—इन दो पृथ्वियों में पैंतीस शत-सहस्र / लाख नरकावास है।

# छत्तीसइमो समवाओ

१. छत्तीसं उत्तरज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—
विणयसुयं परीसहो चाउरंगिज्जं असंखयं अकाममरणिज्जं पुरिसविज्जा उरब्भिज्जं काविलिज्जं नमिपव्वज्जा दुमपत्तयं बहुसुयपूया हरिएसिज्जं चित्तसंभूयं उसुकारिज्जं सभिक्खुगं समाहिठाणाइं पावसमणिज्जं संजइज्जं मिगचारिया अणाहपव्वज्जा समुद्दपालिज्जं रहणेमिज्जं गोयमकेसिज्जं समितीओ जण्णइज्जं सामायारी खलुंकिज्जं मोक्खमग्गगई अप्पमाओ तवोमग्गो चरणविही पमायठाणाइं कम्मपगडी लेसज्झयणं अणगारमग्गे जीवाजीवविभत्ती य।

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था।

४. चेत्तासोएसु णं मासेसु सइ छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तइ।

# छत्तीसवां समवाय

१. उत्तर के अध्ययन (उत्तराध्ययन-सूत्र के अध्ययन) छत्तीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
विनयश्रुत, परीषह, चातुरंगीय, असंस्कृत, अकाममरणीय, पुरुषविद्या, उरभ्रीय, कापिलीय, नमिप्रव्रज्या, द्रुमपत्रक, बहूश्रुतपूजा, हरिकेशीय, चित्रसंभूत इषुकारीय, सभिक्षुक, समाधिस्थान, पापश्रमणीय, संयतीय, मृगचारिका, अनाथप्रव्रज्या, समुद्रपालीय, रथनेमीय, गौतमकेशीय, समिति, यज्ञीय, सामाचारी, क्षुल्लकीय, मोक्षमार्गगति, अप्रमाद, तपोमार्ग, चरणविधि, प्रमादस्थान, कर्मप्रकृति, लेश्याध्ययन, अनगारमार्ग तथा जीवाजीवविभक्ति।

२. असुरेन्द्र असुरराज चमर की सुधर्मा सभा ऊँचाई की दृष्टि से छत्तीस योजन ऊँची है।

३. श्रमण भगवान् महावीर के छत्तीस हजार आर्याएँ थीं।

४. चैत्र-आश्विन मास में सूर्य एक वार छत्तीस अंगुल की पौरुषी छाया निष्पन्न करता है।

## सत्ततीसइमो समवाओ

१. कुंथुस्स णं अरहओ सत्ततीसं गणा, सत्ततीसं गणहरा होत्था ।

२. हेमवय-हेरण्णवइयाओ णं जीवाओ सत्ततीसं-सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्च चोवत्तरे जोयणसए सोल-सयएगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं पण्णत्ताओ ।

३. सव्वासु णं विजय - वेजयत - जयत-अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्ततीसं-सत्ततीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

४. खुड्डियाए णं विमाणप्पविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

५. कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसिच्छायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरइ ।

## सैंतीसवां समवाय

१. अर्हत् कुन्थु के सैंतीस गण और सैंतीस गणधर थे ।

२. हैमवत और हैरण्यवत की जीवाओं का सैंतीस हजार छह सौ चौहत्तर योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से सोलह भाग विशेष न्यून (३७६७४ $\frac{१६}{१९}$) आयाम प्रज्ञप्त है ।

३. विजय, वैजयन्त, जयंत और अपरा-जित—इन सभी राजधानियों के प्राकार ऊँचाई की दृष्टि से सैंतीस-सैंतीस योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है ।

४. क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग में सैंतीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

५. कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन सूर्य सैंतीस अंगुल की पौरुषी छाया का निवर्तन कर संचरण करता है ।

## अट्ठतीसइमो समवाओ

१. पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था।

२. हेमवत-हेरण्णवतियाणं जीवाणं धणुपट्ठे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

३. अत्थस्स णं पव्वयण्णो वितिए कंडे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

४. खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए वितिए वग्गे अट्ठतीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

## अड़तीसवां समवाय

१. पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व की साध्वी-सम्पदा अड़तीस हजार साध्वियों की थी।

२. हैमवत और हैरण्यवत की जीवा के धनुःपृष्ठ का अड़तीस हजार सात सौ चालीस योजन और योजन के उन्नीस भागों में से दस भाग ( ३८७४० $\frac{१०}{१९}$ योजन ) से कुछ विशेष न्यून प्रज्ञप्त है।

३. पर्वतराज अस्त/मेरु का द्वितीय काण्ड ऊँचाई की दृष्टि से अड़तीस हजार योजन ऊँचा है।

४. क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग में अड़तीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं।

# एगूणचत्तालीसइमो समवाओ

१. नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था।

२. समयखेत्ते णं एगूणचत्तालीसं कुलपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—
तीसं वासहरा, पंच मंदरा, चत्तारि उसुकारा।

३. दोच्चचउत्थपंचमछट्ठसत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

४. नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउस्स—एयासि णं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

# उनतालीसवं समवाय

१. अर्हत् नमि के उनतालीस सौ अवधि-ज्ञानी थे।

२. समय-क्षेत्र में उनतालीस कुल-पर्वत प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
तीस वर्षधर, पांच मंदर और चार इषुकार।

३. दूसरी, चौथी, पांचवीं, छठी और सातवीं—इन पांच पृथ्वियों में उनतालीस शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं।

४. ज्ञानावरणीय, मोहनीय, गोत्र और आयुष्य—इन चार कर्म-प्रकृतियों की उनतालीस उत्तर-प्रकृतियां प्रज्ञप्त हैं।

# चत्तालीसइमो समवाओ

# चालीसवां समवाय

१. अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था।

१. अर्हत् अरिष्टनेमि के चालीस हजार आर्यिकाएँ/साध्वियाँ थी।

२. मंदरचूलिया णं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

२. मन्दरपर्वत की चूलिका ऊँचाई की दृष्टि से चालीस योजन ऊँची है।

३. संती अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३. अर्हत् शान्ति ऊँचाई की दृष्टि से चालीस धनुष ऊँचे थे।

४. भूयाणंदस्स णं नागरण्णो चत्तालीसं भवणावास-सयसहस्सा पण्णत्ता।

४. नागराज भूतानंद के चालीस शत-सहस्र/एक लाख भवनावास प्रज्ञप्त हैं।

५. खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे चत्तालीसं उद्देसण-काला पण्णत्ता।

५. क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के तीसरे वर्ग में चालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं।

६. फग्गुणपुण्णिमासिणीए णं सूरिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसिच्छायं निव्वट्टइत्ता णं चारं चरइ।

६. फाल्गुन-पूर्णिमा को सूर्य चालीस अंगुल की पौरुषी छाया निष्पन्न कर संचरण करता है।

७. एवं कत्तियाएवि पुण्णिमाए।

७. इसी प्रकार कार्तिक-पूर्णिमा को।

८. महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता।

८. महाशुक्रकल्प में चालीस हजार विमानावास प्रज्ञप्त हैं।

# एक्कचत्तालीसइमो समवाओ

१. नमिस्स णं अरहओ एक्कचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था।

२. चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, तं जहा—
रयणप्पहाए पंकप्पहाए तमाए तमतमाए।

३. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एक्कचत्तालीसं उद्देसण काला पण्णत्ता।

# इकतालीसवां समवाय

१. अर्हत् नमि के इकतालीस हजार आर्यिकाएँ/साध्वियां थीं।

२. चार पृथिवियों में इकतालीस शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
रत्नप्रभा, पंकप्रभा, तमा और तमतमा।

३. महती-विमान-प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग में इकतालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं।

## बायालीसइमो समवाओ

१. समणे भगवं महावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे-बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

२. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं बायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहए अंतरे पण्णत्ते।

३. एवं चउद्दिसिं पि दओभासे संखे दयसीमे य।

४. कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा बायालीसं सूरिया पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा।

५. संमुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

६. नामे णं कम्मे बायालीसविहे पण्णत्ते, तं जहा—
गइनामे जाइनामे सरीरनामे

## बयालीसवां समवाय

१. श्रमण भगवान् महावीर बयालीस से कुछ अधिक वर्षों तक श्रामण्य-पर्याय पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

२. जम्बूद्वीप-द्वीप के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अन्तर अबाधतः बयालीस हजार योजन प्रज्ञप्त है।

३. इसी प्रकार चारों दिशाओं में भी उदकभास-शंख और उदकसीम का [ अन्तर ज्ञातव्य है। ]

४. कालोद समुद्र में बयालीस चन्द्रमाओं ने उद्योत किया था, करते हैं और करेंगे। इसी प्रकार बयालीस सूर्यो ने प्रकाश किया था, प्रकाश करते है और प्रकाश करेंगे।

५. सम्मूर्च्छिम भुजपरिसर्प की उत्कृष्टतः बयालीस हजार वर्ष की स्थिति प्रज्ञप्त है।

६. नाम कर्म बयालीस प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
गतिनाम, जातिनाम, शरीरनाम,

सरीरंगोवंगनामे सरीरबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे वण्णनामे गंधनामे रसनामे फासनामे अगरुयलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आतवनामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साधारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दूभगनामे सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे ।

शरीरांगोपांगनाम, शरीरबंधननाम, शरीरसंघातनाम, संहनननाम, संस्थाननाम, वर्णनाम, गंधनाम, रसनाम, स्पर्शनाम, अगुरुलघुनाम, उपघातनाम, पराघातनाम, आनुपूर्वीनाम, उच्छ्वासनाम, आतपनाम, उद्योतनाम, विहगगतिनाम, त्रसनाम, स्थावरनाम, सूक्ष्मनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, अपर्याप्तनाम, साधारणशरीरनाम, प्रत्येकशरीरनाम, स्थिरनाम, अस्थिरनाम, शुभनाम, अशुभनाम, सुभगनाम, दुर्भगनाम, सुस्वरनाम, दुःस्वरनाम, आदेयनाम, अनादेयनाम, यशःकीर्तिनाम, अयशःकीर्तिनाम, निर्माणनाम, तीर्थङ्करनाम ।

७. लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भितरियं वेलं धारेंति ।

७. लवणसमुद्र की आभ्यन्तर वेला के बयालीस हजार नाग धारण करते हैं ।

८. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे बायालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

८. महती-विमान-प्रविभक्ति के दूसरे वर्ग में बयालीस हजार उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

९. एगमेगाए ओसप्पिणीए पंचमछट्ठीओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ ।

९. प्रत्येक अवसर्पिणी का पांचवां और छठा आरा बयालीस हजार वर्ष के कालमान का प्रज्ञप्त है ।

१०. एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढमबीयाओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ ।

१०. प्रत्येक उत्सर्पिणी का पहला और दूसरा आरा बयालीस हजार वर्ष के कालमान का प्रज्ञप्त है ।

# तेयालीसइमो समवाओ

१. तेयालीसं कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता ।

२. पढमचउत्थपंचमासु—तीसु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

३. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४. एवं चउद्दिसिंपि दओभासे संखे दयसीमे ।

५. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए ततिये वग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

# तेयालीसवां समवाय

१. कर्मविपाक के तेयालीस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं ।

२. पहली, चौथी और पांचवीं—इन तीन पृथिवियों में तेयालीस शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं ।

३. जम्बूद्वीप द्वीप के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अन्तर अबाधतः तेयालीस हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

४. इसी प्रकार चारों दिशाओं में भी उदकावभास, शंख और उदकसीम का [अन्तर ज्ञातव्य है ।]

५. महती-विमान-प्रविभक्ति के तीसरे वर्ग में तेयालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

# चोयालीसइमो समवाओ

१. चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुयाभासिया पण्णत्ता ।

२. विमलस्स णं अरहतो चोयालीसं पुरिसजुगाइं अणुपिट्ठिं सिद्धाइं बुद्धाइं मुत्ताइं अंतगडाइं परिणिव्वुयाइं सव्वदुक्खप्पहीणाइं ।

३. धरणस्स णं नागिंदस्स नागरण्णो चोयालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

४. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए चउत्थे वग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ते ।

# चौवालीसवां समवाय

१. देवलोक से च्युत / अवतरित [ऋपियों] द्वारा भाषित 'ऋषिभाषित' के चवालीस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं ।

२. अर्हत् विमल के चौवालीस पुरुषयुग अनुक्रमशः सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए ।

३. नागराज नागेन्द्र धरण के चौवालीस शत-सहस्र/लाख भवनावास प्रज्ञप्त हैं ।

४. महती-विमान-प्रविभक्ति के चौथे वर्ग में चौवालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

# पणयालीसइमो समवाओ

१. समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयण-सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

२. सीमंतए णं नरए पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खं-भेणं पण्णत्ते ।

३. एवं उडुविमाणे पण्णत्ते ।

४. ईसिपब्भारा णं पुढवी पण्णत्ता एवं चेव ।

५. धम्मे णं अरहा पणयालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

६. मंदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिंपि पणयालीसं-पणयालीसं जोयण-सहस्साइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते ।

७. सव्वेवि णं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा ।
तिन्नेव उत्तराइं,
पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।
एए छ नक्खत्ता,
पणयाल-मुहुत्त-संजोगा ॥

# पैंतालीसवां समवाय

१. समयक्षेत्र/ढाई द्वीप पैंतालीस शत-सहस्र/लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२. सीमंतक नरक पैंतालीस शत-सहस्र/लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

३. इसी प्रकार उडुविमान प्रज्ञप्त है ।

४. और इसी प्रकार ईषत् प्राग्भारा पृथिवी प्रज्ञप्त है ।

५. अर्हत् धर्म ऊंचाई की दृष्टि से पैंतालीस धनुष ऊंचे थे ।

६. मन्दर पर्वत का चारों दिशाओं में पैंतालीस-पैंतालीस हजार योजन का अबाधतः अन्तर प्रज्ञप्त है ।

७. द्व्यर्धक्षेत्र (डेढ़ समक्षेत्र) के सर्व नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त तक चन्द्र के साथ योग करते थे, योग करते हैं और योग करेंगे ।
तीनों उत्तरा, पुनर्वसु, रोहिणी, और विशाखा—ये छह नक्षत्र चन्द्र के साथ पैंतालीस मुहूर्त्त तक संयोग करते हैं ।

८. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पंचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

८. महती-विमान-प्रविभक्ति के पांचवें वर्ग में पैंतालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

## छायालीसइमो समवाओ

१. दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया पण्णत्ता ।

२. बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा पण्णत्ता ।

३. पभंजणस्स णं वातकुमारिंदस्स छायालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

## छियालीसवां समवाय

१. दृष्टिवाद के मातृकापद छियालीस प्रज्ञप्त हैं ।

२. ब्राह्मी-लिपि के मातृकाक्षर छियालीस प्रज्ञप्त हैं ।

३. वायुकुमारेन्द्र प्रभंजन के छियालीस शत-सहस्र / लाख भवनावास प्रज्ञप्त हैं ।

# सत्तचालीसइमो समवाओ

१. जया णं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ ।

२. थेरे णं अग्गिभूई सत्तालीसं वासाइं अगारमज्भा वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

# सैंतालीसवां समवाय

१. जब सूर्य सर्व-आभ्यन्तर मण्डल का उपसंक्रमण कर सञ्चरण करता है तब भरतक्षेत्रगत मनुष्य को वह सैंतालीस हजार दो सौ तिरेसठ योजन और एक योजन के साठ भागों में से इक्कीस भाग (४७२६३ $\frac{२१}{६०}$ योजन) की दूरी से दिखाई देता है ।

२. स्थविर अग्निभूति सैंतालीस वर्ष तक अगार-मध्य रहकर मुंड हुए और अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

# अडयालीसइमो समवाओ

१. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंत-चक्क वट्टिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा पण्णत्ता ।

२. धम्मस्स णं अरहओ अडयालीसं गणा अडयालीसं गणहरा होत्था ।

३. सूरमंडले णं अडयालीसं एकसट्ठि-भागे जोयणस्स विक्खंभेणं पण्णत्ते ।

# अड़तालीसवां समवाय

१. प्रत्येक चातुरंत चक्रवर्ती के अड़तालीस हजार पत्तन प्रज्ञप्त हैं ।

२. अर्हत् धर्म के अड़तालीस गण और अड़तालीस गणधर थे ।

३. सूर्यमण्डल का एक योजन के इकसठ भागों में से अड़तालीस भाग-परिमित ( $\frac{48}{61}$ योजन ) विष्कम्भ/विस्तार प्रज्ञप्त है ।

# एगूरापण्णासइमो समवाश्रो

१. सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा एगूरापण्णाए राइंदिएहिं छन्न-उएणं भिक्खासएणं ग्रहासुत्तं ग्रहाकप्पं ग्रहामग्गं ग्रहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया ग्राणाए ग्राराहिया यावि भवइ।

२. देवकुरु-उत्तरकरासु णं मणुया एगूणपण्णाए राइंदिएहिं संपत्त-जोव्वरणा भवंति।

३. तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूरापण्णं राइंदिया ठिई पण्णत्ता।

# उनचासवां समवाय

१. सप्तसप्तमिका भिक्षुप्रतिमा उनचास रात-दिन में एक सौ छियानवे भिक्षा-[-दत्तियों] से सूत्र के ग्रनुरूप, कल्प के ग्रनुरूप, मार्ग के ग्रनुरूप तथा तथ्य के ग्रनुरूप काया से सम्यक् स्पृष्ट, पालित, शोधित, पारित, कीर्तित और ग्राज्ञा से ग्राराधित होती है।

२. देवकुरु और उत्तरकुरु के मनुज उनचास रात-दिन में यौवन-सम्पन्न हो जाते हैं।

३. त्रीन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट स्थिति उनचास रात-दिन की प्रज्ञप्त है।

## पण्णासइमो समवाओ

१. मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पंचासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था।

२. अणंते णं अरहा पण्णासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३. पुरिसोत्तमे णं वासुदेवे पण्णासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

४. सव्वेवि णं दीहवेयड्ढा मूले पण्णासं-पण्णासं जोयणाणि विक्खंभेणं पण्णत्ता।

५. लंतए कप्पे पण्णासं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता।

६. सव्वाओ णं तिमिस्सगुहाखंडगप्पवायगुहाओ पण्णासं-पण्णासं जोयणाइं आयामेणं पण्णत्ता।

७. सव्वेवि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पण्णासं-पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

## पचासवां समवाय

१. अर्हत् मुनिसव्रत के पचास हजार आर्यिकाएँ/साध्वियां थीं।

२. अर्हत् अनन्त ऊँचाई की दृष्टि से पचास धनुष ऊँचे थे।

३. वासुदेव पुरुषोत्तम ऊँचाई की दृष्टि से पचास धनुष ऊँचे थे।

४. सर्व दीर्घ-वैताढ्य पर्वत मूल में पचास-पचास योजन विष्कम्भक/चौड़े प्रज्ञप्त हैं।

५. लान्तक कल्प में पचास हजार विमानावास प्रज्ञप्त हैं।

६. सर्व तमिस्रगुफाएँ एवं खंडप्रपात-गुफाएँ पचास-पचास योजन आयाम की—लम्बी प्रज्ञप्त हैं।

७. सभी कांचनक-पर्वत शिखरतल पर पचास-पचास योजन विष्कम्भक/चौड़े प्रज्ञप्त हैं।

# एगपण्णासइमो समवाओ

# इक्यावनवां समवाय

१. नवण्हं बंभचेराणं एकावण्णं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

१. नौ ब्रह्मचर्य [अध्ययनों] के इक्यावन उद्देशन-काल प्रज्ञप्त है।

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुधम्मा एकावण्णखंभसयसंनिविट्ठा पण्णत्ता।

२. असुरराज असुरेन्द्र चमर की सुधर्मा सभा इक्यावन सौ स्तम्भों पर सन्निविष्ट है।

३. एवं चेव बलिस्सवि।

३. इसी प्रकार बली की [सभा भी।]

४. सुप्पभे णं बलदेवे एकावण्णं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

४. बलदेव सुप्रभ इक्यावन शत-सहस्र/लाख वर्ष की परम आयु पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत और सर्व दुःख-मुक्त हुए।

५. दंसणावरणनामाणं—दोण्हं कम्माणं एकावण्ण उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

५. दर्शनावरण और नाम—इन दो कर्मों की इक्यावन उत्तर-प्रकृतियाँ प्रज्ञप्त हैं।

# बावण्णइमो समवाओ

# बावनवां समवाय

१. मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स बावन्नं नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—
कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए; माणे मदे दप्पे थंभे अत्तुक्कोसे गव्वे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे; माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्हे किब्बिसिए अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकंचणया सातिजोगे; लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे।

१. मोहनीय कर्म के बावन नाम प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
क्रोध, कोप, रोष, अक्षमा, संज्वलन, कलह, चांडिक्य, मंडन, विवाद; मान, मद, दर्प, स्तंभ, आत्मोत्कर्ष, गर्व, परपरिवाद, उत्कर्ष, अपकर्ष, उन्नत, उन्नाम; माया, उपधि, निकृति, वलय, गहन, नूम, कल्क, कुरुक, दंभ, कूट, जैह्म, किल्विषिक, अनाचरण, गूहन, वंचन, परिकुंचन, सातियोग; लोभ, इच्छा, मूर्च्छा, कांक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भिध्या, अभिध्या, कामाशा, भोगाशा, जीवितांशा, मरणाशा, नंदी, राग।

२. गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं बावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

२. गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त से वडवामुख महापाताल के पश्चिमी चरमान्त का अबाधतः अन्तर बावन हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

३. एवं दओभासस्स णं केउकस्स संखस्स जूयकस्स, दयसीमस्स ईसरस्स।

३. इसी प्रकार दकभास केतुक का, शंख यूप का और दकसीम ईश्वर महापाताल का [अन्तर ज्ञातव्य है।]

४. नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंत-रातियस्स—एतासि णं तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपय-डीओ पण्णत्ताओ ।

४. ज्ञानावरणीय, नाम एवं अंतराय—इन तीन कर्म-प्रकृतियों की बावन उत्तर-प्रकृतियां प्रज्ञप्त हैं ।

५. सोहम्म-सणंकुमार-माहिंदेसु—तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता ।

५. सौधर्म, सनत्कुमार और माहेन्द्र—इन तीन कल्पों में बावन शत-सहस्र/लाख विमानावास प्रज्ञप्त हैं ।

# तेवण्णइमो समवाओ

१. देवकुरुउत्तरकुरियातो णं जीवाओ तेवन्नं - तेवन्नं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पण्णत्ताओ ।

२. महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं - तेवन्नं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एक्कूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ ।

३. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ।

४. संमुच्छिम-उरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई पण्णत्ता ।

# तिरपनवां समवाय

१. देवकुरु और उत्तरकुरु की जीवा तिरपन-तिरपन हजार योजन से कुछ अधिक आयाम की—लम्बी प्रज्ञप्त है ।

२. महाहिमवान और रुक्मी वर्षधर पर्वतों की जीवाएँ तिरपन-तिरपन हजार नौ सौ इकत्तीस योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से छह भाग कम (५३९३१ ६/१९ योजन) आयाम की—लम्बी प्रज्ञप्त है ।

३. श्रमण भगवान् महावीर के एक संवत्सर/एक वर्षीय श्रमण-पर्याय वाले तिरपन अनगार अति विशिष्ट पांच अनुत्तर महाविमानों में देवत्व से उपपन्न हुए ।

४. सम्मूर्च्छिम उरपरिसृप जीवों की उत्कृष्टतः तिरपन हजार वर्ष की स्थिति प्रज्ञप्त है ।

## चउवण्णइमो समवाओ

१. भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणीए एगमेगाए उस्सप्पिणीए चउप्पण्णं-चउप्पण्णं उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्सति वा, तं जहा—
चउवीसं तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा ।

२. अरहा णं अरिट्ठनेमी चउप्पण्णं राइंदियाइं छउमत्थपरियागं पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी ।

३. समणे भगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसेज्जाए चउप्पण्णाइं वागरणाइं वागरित्था ।

४. अणंतस्स णं अरहओ चउप्पण्णं गणा चउप्पण्णं गणहरा होत्था ।

## चौपनवां समवाय

१. भरत-ऐरवत वर्षो/क्षेत्रों में प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में चौपन-चौपन उत्तम पुरुष उत्पन्न हुए थे उत्पन्न होते है और उत्पन्न होंगे । जैसे कि—
चौवीस तीर्थङ्कर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलदेव और नौ वासुदेव ।

२. अर्हत् अरिष्टनेमि चौपन रात-दिन तक छद्मस्थ-पर्याय पालकर जिन, केवली, सर्वज्ञ, सर्वभावदर्शी हुए ।

३. श्रमण भगवान् महावीर ने एक दिन में एक ही आसन पर बैठे हुए चौपन व्याकरण कहे ।

४. अर्हत् अनन्त के चौपन गण और चौपन गणधर थे ।

# पणपण्णइमो समवाओ

१. मल्ली णं अरहा पणपण्णं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं पणपण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३. एवं चउद्दिसिंपि विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियंति ।

४. समणे भगवं महावीरे अंतिमराइयंसि पणपण्णं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं, पणपण्णं अज्झयणाणि पावफलविवागाणि वागरित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५. पढमबिइयासु—दोसु पुढवीसु पणपण्णं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

६. दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणपण्णं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

# पचपनवां समवाय

१. अर्हत् मल्ली पचपन हजार वर्ष की परम-आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत्त और सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

२. मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से विजयद्वार के पश्चिमी चरमान्त का अबाधतः अन्तर पचपन हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

३. इसी प्रकार चारों दिशाओं में विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित [द्वारों का अन्तर ज्ञातव्य है ।]

४. श्रमण भगवान् महावीर अंतिम रात्रि में कल्याणफलविपाक के पचपन अध्ययन और पापफलविपाक के पचपन अध्ययनों की देशना देकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत और सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

५. पहली और दूसरी—इन दो पृथ्वियों में पचपन शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं ।

६. दर्शनावरणीय, नाम तथा आयुष्य—इन तीन कर्म-प्रकृतियों की पचपन उत्तर-प्रकृतियां प्रज्ञप्त हैं ।

## छप्पण्णइमो समवाओ

१. जंबुद्दीवे णं दीवे छप्पण्णं नक्खत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ।

२. विमलस्स णं अरहओ छप्पण्णं गणा छप्पण्णं गणहरा होत्था ।

## छप्पनवां समवाय

१. जम्बूद्वीप द्वीप में छप्पन नक्षत्रों ने चन्द्रमा के साथ योग किया था, योग करते हैं और योग करेंगे । (जम्बूद्वीप में दो चन्द्रमा; प्रत्येक चन्द्रमा के साथ अट्ठाईस नक्षत्रों का योग २८ × २ = ५६)

२. अर्हत् विमल के छप्पन गण और छप्पन गणधर थे ।

## सत्तावण्णइमो समवाओ

१. तिण्हं गणिपिडगाणं आयार-चूलियावज्जाणं सत्तावण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—
आयारे सूयगडे ठाणे ।

२. गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहु-मज्झदेसभाए, एस णं सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३. एवं दओभासस्स केउयस्स य, संखस्स जूयकस्स य, दयसीमस्स ईसरस्स य ।

४. मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावण्णं मणपज्जवनाणिसया होत्था ।

५. महाहिमवंतरुप्पीणं वासधरपव्व-याणं जीवाणं धणुपट्ठा सत्तावण्णं-सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परि-क्खेवेणं पण्णत्ता ।

## सत्तावनवां समवाय

१. आचारचूलिका को छोड़ कर तीन गणिपिटकों के सत्तावन अध्ययन हैं, जैसे कि—
आचार, सूत्रकृत, स्थान । [—तीन गणिपिटक]

२. गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त से वडवामुख महापाताल के वहुमध्यदेशभाग का अवाधतः अन्तर सत्तावन हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

३. इसी प्रकार दकभास केतुक का, शंख यूप का और दकसीम ईश्वर का [अन्तर ज्ञातव्य है ।]

४. अर्हत् मल्ली के सत्तावन सौ मनःपर्यवज्ञानी थे ।

५. महाहिमवान और रुक्मीवर्षधर पर्वतों की जीवा के धनुःपृष्ठ का सत्तावन हजार दो सौ तेरानवे योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से दश भाग परिमित (५७२९३$\frac{10}{19}$) का परिक्षेप (परिधि) प्रज्ञप्त है ।

# अट्ठाण्णइमो समवाओ

१. पढमदोच्चपंचमासु — तिसु पुढवीसु अट्ठावण्णं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

२. नाणावरणिज्जस्स वेयणिज्जस्स आउयनामअंतराइयस्स य— एयासि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं अट्ठावण्णं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

३. गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए, एस णं अट्ठावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४. एवं दओभासस्स णं केउकस्स संखस्स जूयकस्स दयसीमस्स ईसरस्स।

# अट्ठावनवां समवाय

१. पहली, दूसरी एवं पांचवीं—इन तीनों पृथिवियों में अट्ठावन शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं।

२. ज्ञानावरणीय, वेदनीय, आयुष्य, नाम और अन्तराय—इन पांच कर्म-प्रकृतियों की अट्ठावन उत्तर-प्रकृतियां प्रज्ञप्त है।

३. गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से वडवामुख महापाताल के बहुमध्यदेशभाग का अबाधतः अन्तर अट्ठावन हजार योजन प्रज्ञप्त है।

४. इसी प्रकार दकावभास केतुक का, शंख यूप का और दकसीम का भी [अन्तर ज्ञातव्य है।]

# एगूणसट्ठिमो समवाओ

१. चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उदू एगूणसट्ठिं राइंदियाणि राइंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

२. संभवे णं अरहा एगूणसट्ठिं पुव्वसय सहस्साइं अगारमज्झावसित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए ।

३. मल्लिस्स णं अरहओ एगूणसट्ठिं ओहिनाणिसया होत्था ।

# उनसठवां समवाय

१. चन्द्र-संवत्सर की प्रत्येक ऋतु रात-दिन की दृष्टि से उनसठ रात-दिन की प्रज्ञप्त है ।

२. अर्हत् संभव ने उनसठ शत-सहस्र/लाख पूर्व तक अगार-मध्य रहकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

३. अर्हत् मल्ली के उनसठ सौ अवधि-ज्ञानी थे ।

## सट्ठिमो समवाओ

१. एगमेगे णं मंडले सूरिए सट्ठिए-सट्ठिए मुहुत्तेहिं संघाएइ ।

२. लवणस्स णं समुद्दस्स सट्ठिं नाग-साहस्सीओ अग्गोदयं धारेंति ।

३. विमले णं अरहा सट्ठिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्ण-त्ताओ ।

५. बंभस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्ण-त्ताओ ।

६. सोहम्मीसाणेसु—दोसु कप्पेसु सट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

## साठवां समवाय

१. सूर्य एक-एक मंडल को साठ-साठ मुहूर्त्तों से संघात/पूर्ण करता है ।

२. लवण-समुद्र के अग्रोदक/जलशिखा को साठ हजार नाग धारण करते हैं ।

३. अर्हत् विमल ऊँचाई की दृष्टि से साठ धनुष ऊँचे थे ।

४. वैरोचनेन्द्र बली के साठ हजार सामानिक देव प्रज्ञप्त हैं ।

५. देवराज देवेन्द्र ब्रह्म के साठ हजार सामानिक देव प्रज्ञप्त हैं ।

६. सौधर्म व ईशान—दो कल्पों में साठ शत-सहस्र/लाख विमानावास प्रज्ञप्त है ।

## एगसट्ठिमो समवाओ

१. पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स एगसट्ठि उउमासा पण्णत्ता ।

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स पढमे कंडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ।

३. चंदमंडलेणं एगसट्ठिविभाग-विभाइए समंसे पण्णत्ते ।

४. एवं सूरस्सवि ।

## इकसठवां समवाय

१. ऋतुमास के परिमाण से पंच-सांवत्सरिक युग के इकसठ ऋतुमास प्रज्ञप्त हैं ।

२. मन्दर पर्वत का प्रथम काण्ड ऊँचाई की दृष्टि से इकसठ हजार योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है ।

३. चन्द्रमण्डल योजन के इकसठवें भाग से विभाजित होने पर समांश प्रज्ञप्त है ।

४. इसी प्रकार सूर्य भी [ ज्ञातव्य है । ]

## बावट्ठिमो समवाओ

१. पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठि पुण्णिमाओ बावट्ठि अमावसाओ पण्णत्ताओ।

२. वासुपुज्जस्स णं अरहओ बावट्ठि गणा बावट्ठि गणहरा होत्था।

३. सुक्कपक्खस्स णं चंदे बावट्ठि भागे दिवसे-दिवसे परिवड्ढइ, ते चेव बहुलपक्खे दिवसे - दिवसे परिहायइ।

४. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बावट्ठि-बावट्ठि विमाणा पण्णत्ता।

५. सव्वे वेमाणियाणं बावट्ठि विमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं पण्णत्ता।

## बासठवां समवाय

१. पंच सांवत्सरिक युग में बासठ पूर्णिमाएँ और बासठ अमावस्याएँ प्रज्ञप्त हैं।

२. अर्हत् वासुपूज्य के बासठ गण और बासठ गणधर प्रज्ञप्त थे।

३. शुक्लपक्ष का चन्द्र दिन-प्रतिदिन बासठ भाग बढ़ता है और बहुलपक्ष/कृष्णपक्ष में चन्द्र दिन-प्रतिदिन बासठ भाग घटता है।

४. सौधर्म-ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तर की प्रथम आवलिका की एक-एक दिशा में बासठ-बासठ विमान प्रज्ञप्त हैं।

५. सर्व वैमानिकों के प्रस्तर की दृष्टि से विमान-प्रस्तर बासठ प्रज्ञप्त हैं।

## तेंवट्ठिमो समवाओ

१. उसभे णं अरहा कोसलिए तेसट्ठि पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

२. हरिवासरम्मयवासेसु मणुस्सा तेवट्ठिए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति।

३. निसहे णं पव्वए तेवट्ठि सूरोदया पण्णत्ता।

४. एवं नीलवंतेवि।

## तिरसठवां समवाय

१. अर्हत् कौशलिक ने ऋषभ तिरसठ शत-सहस्र/लाख पूर्वों तक महाराज के रूप में गृहवास में रहकर मुंड होकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

२. हरिवर्ष एवं रम्यकवर्ष के मनुष्य तिरसठ रात-दिन में यौवन-दशा को प्राप्त होते हैं।

३. निषध पर्वत पर तिरसठ सूर्योदय प्रज्ञप्त हैं।

४. इसी प्रकार नीलवंत पर भी [ज्ञातव्य है।]

## चउसट्ठिमो समवाओ

१. अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए आराहिया यावि भवइ।

२. चउसट्ठि असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

३. चमरस्स णं रण्णो चउसट्ठि सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

४. सव्वेवि णं दधिमुहा पव्वया पल्ला-संठाण-संठिया सव्वत्थ समा दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उस्सेहेणं, चउसट्ठि-चउसट्ठि जोयणसहस्साइं पण्णत्ता।

५. सोहम्मीसाणेसु बंभलोए य—तिसु कप्पेसु चउसट्ठि विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

६. सव्वस्सवि य णं रण्णो चाउरंत-चक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घे मुत्तामणिमए हारे पण्णत्ते।

## चौसठवां समवाय

१. अष्टअष्टमिका भिक्षु-प्रतिमा चौसठ रात-दिन में दो सौ अठासी भिक्षा [-दत्तियों] से सूत्र के अनुरूप, कल्प के अनुरूप, मार्ग के अनुरूप और तथ्य के अनुरूप काया से सम्यक् स्पृष्ट, पालित, शोधित, पारित, कीर्तित और आज्ञा से आराधित होती है।

२. असुरकुमारावास चौसठ शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त हैं।

३. राजा चमर के चौसठ हजार सामानिक प्रज्ञप्त हैं।

४. समस्त दधिमुख पर्वत पल्य-संस्थान से संस्थित हैं, सर्वत्र सम हैं, दस हजार योजन विष्कम्भक/चौड़े हैं, उनका उत्सेध (ऊँचाई) चौसठ-चौसठ हजार योजन प्रज्ञप्त है।

५. सौधर्म, ईशान और ब्रह्मलोक—इन तीनों कल्पों में चौसठ शत-सहस्र/एक लाख विमानावास प्रज्ञप्त हैं।

६. समस्त चातुरन्त चक्रवर्ती राजाओं के चौसठ लड़ियों वाला महार्घ्य/बहुमूल्य मुक्तामणियों का हार प्रज्ञप्त है।

## पणसट्ठिमो समवाओ

१. जंबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठि सूर-मंडला पण्णत्ता।

२. थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठि-वासाइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

३. सोहम्मवडेंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठि-पण-सट्ठि भोमा पण्णत्ता।

## पैंसठवां समवाय

१. जम्बूद्वीप-द्वीप में पैंसठ सूर्यमण्डल प्रज्ञप्त हैं।

२. स्थविर मौर्यपुत्र ने पैंसठ वर्ष तक अगार-मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

३. सौधर्मावतंसक विमान की प्रत्येक बाहु/दिशा में पैंसठ-पैंसठ भौम प्रज्ञप्त हैं।

# छावट्ठिमो समवाश्रो

१. दाहिणड्ढमणुस्सखेत्ता णं छावट्ठि चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, छावट्ठि सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा।

२. उत्तरड्ढमणुस्सखेत्ता णं छावट्ठि चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, छावट्ठि सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा।

३. सेज्जंसस्स णं अरहश्रो छावट्ठि गणा छावट्ठि गणहरा होत्था।

४. आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

# छासठवां समवाय

१. दक्षिणार्द्ध मनुष्य-क्षेत्र को छासठ चन्द्र प्रकाशित करते थे, प्रकाशित करते हैं और प्रकाशित करेंगे। इसी प्रकार छासठ सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपेंगे।

२. उत्तरार्द्ध मनुष्य-क्षेत्र को छासठ चन्द्र प्रकाशित करते थे, करते हैं और प्रकाशित करेंगे। इसी प्रकार छासठ सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपेंगे।

३. अर्हत् श्रेयांस के छासठ गण और छासठ गणधर थे।

४. आभिनिबोधिक ज्ञान की उत्कृष्टतः छासठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

# सत्तसट्ठिमो समवाओ

१. पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठि नक्खत्तमासा पण्णत्ता।

२. हेमवत-हेरण्णवतियाओ णं वाहाओ सत्तसट्ठि-सत्तसट्ठि जोयण-सयाइं पणपण्णाइं तिण्णि य भागा जोयणस्स आयामेणं पण्ण-त्ताओ।

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थि-मिल्लाओ चरिमंताओ गोयमस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरि-मंते, एस णं सत्तसट्ठि जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४. सव्वेसिंपि णं नक्खत्ताणं सीमा-विक्खंभेणं सत्तसट्ठि भागं विभाइए समंसे पण्णत्ते।

# सड़सठवां समवाय

१. नक्षत्रमास की गणना से पंच-सांवत्सरिक युग के सड़सठ नक्षत्र-मास प्रज्ञप्त हैं।

२. हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र की वाहुएँ/भुजाएँ सड़सठ-सड़सठ सौ पचपन योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से तीन भाग (६७५५$\frac{3}{19}$ योजन) आयाम की—लम्बी प्रज्ञप्त है।

३. मन्दर पर्वत के पूर्वी चरमान्त से गौतम द्वीप के पूर्वी चरमान्त का अबाधतः अन्तर सड़सठ हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

४. समस्त नक्षत्रों का सीमा-विष्कंभ/विस्तार सड़सठ भागों से विभाजित करने पर समांश प्रज्ञप्त है।

## अट्ठसट्ठिमो समवाओ

१. धायइसंडे णं दीवे अट्ठसट्ठि चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ।

२. धायइसंडे णं दीवे उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहंता समुप्पज्जिंसु वा समुप्पज्जंति वा समुप्पज्जिस्संति वा।

३. एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा।

४. पुक्खरवरदीवड्ढे णं अट्ठसट्ठि चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ।

५. पुक्खरवरदीवड्ढे णं उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहंता समुप्पज्जिंसु वा समुप्पज्जंति वा समुप्पज्जिस्संति वा।

६. एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा।

७. विमलस्स णं अरहओ अट्ठसट्ठि समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था।

## अड़सठवां समवाय

१. धातकीखंड द्वीप में अड़सठ चक्रवर्ती-विजय और अड़सठ राजधानियां प्रज्ञप्त हैं।

२. धातकीखंड द्वीप में उत्कृष्टतः अड़सठ अर्हत् उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे।

३. इसी प्रकार चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव भी [ज्ञातव्य हैं।]

४. अर्द्धपुष्करवरद्वीप में अड़सठ चक्रवर्ती-विजय और अड़सठ राजधानियां प्रज्ञप्त हैं।

५. अर्द्धपुष्करवरद्वीप में उत्कृष्टतः अड़सठ अर्हत् उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे।

६. इसी प्रकार चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव भी [ज्ञातव्य हैं।]

७. अर्हत् विमल के अड़सठ हजार श्रमणों की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी।

## एगूणसत्तरिमो समवाओ

१. समयखेत्ते णं मंदरवज्जा एगूण-सत्तरिं वासा वासधरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—
पणतीसं वासा, तीसं वासहरा, चत्तारि उसुयारा।

२. मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोयमदीवस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणसत्तरिं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

३. मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्माणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

## उनहत्तरवां समवाय

१. समयक्षेत्र/अढ़ाई द्वीप में उनहत्तर वर्ष/क्षेत्र और मेरुवर्जित उनहत्तर वर्षधर पर्वत प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
पैंतीस वर्ष, तीस वर्षधर और चार इषुकार।

२. मन्दर-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गौतम द्वीप के पश्चिमी चरमान्त का अबाधत: अन्तर उनहत्तर हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

३. मोहनीय-वर्जित शेष सात कर्मों की उनहत्तर उत्तर-प्रकृतियां प्रज्ञप्त हैं।

## सत्तरिमो समवाओ

१. समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वीतिक्कंते सत्तरिए राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ ।

२. पासे णं अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइं बहुपडिपुण्णाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३. वासुपुज्जे णं अरहा सत्तरिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४. मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मणिसेगे पण्णत्ते ।

५. माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्तरिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

## सत्तरवां समवाय

१. श्रमण भगवान् महावीर ने वर्षा ऋतु के पचास रात-दिन बीत जाने तथा सत्तर रात-दिन शेष रहने पर वर्षावास के लिए परिवास किया ।

२. पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व सम्पूर्ण सत्तर वर्षों तक श्रामण्य-पर्याय पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

३. अर्हत् वासुपूज्य ऊँचाई की दृष्टि से सत्तर धनुष ऊँचे थे ।

४. मोहनीय कर्म की सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपम की अबाधतः कर्मस्थिति एवं कर्म-निषेक/कर्म-उदयकाल प्रज्ञप्त है ।

५. देवेन्द्र देवराज माहेन्द्र के सत्तर हजार सामानिक प्रज्ञप्त हैं ।

## एक्कसत्तरिमो समवाओ

१. चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्कसत्तरीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं सव्वबाहिराओ मंडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ।

२. वीरियप्पवायस्स णं एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता।

३. अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए।

४. सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए।

## इकहत्तरवां समवाय

१. चतुर्थ चन्द्र-संवत्सर की हेमन्त-ऋतु के इकहत्तर रात-दिन व्यतीत होने पर सूर्य सर्व-बाह्यमण्डल से आवृत्ति (दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर गमन) करता है।

२. वीर्यप्रवाद के प्राभृत/अधिकार इकहत्तर प्रज्ञप्त हैं।

३. अर्हत् अजित ने इकहत्तर शत-सहस्र/लाख पूर्वो तक अगार-मध्य रहकर मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

४. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा सगर ने इकहत्तर शत-सहस्र/लाख पूर्वो तक अगार-मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

## बावत्तरिमो समवाओ

१. बावत्तरिं सुवण्णकुमारावाससय-सहस्सा पण्णत्ता ।

२. लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारेंति ।

३. समणे भगवं महावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४. थेरे णं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५. अब्भंतरपुक्खरद्धे णं बावत्तरिं चंदा पभासिसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बावत्तरिं सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ।

६. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंत-चक्कवट्टिस्स बावत्तरिं पुरवर-साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

७. बावत्तरिं कलाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
१. लेहं, २. गणियं, ३. रूवं, ४. नट्टं, ५. गीयं, ६. वाइयं,

## बहत्तरवां समवाय

१. सुपर्णकुमार देवों के बहत्तर शत-सहस्र/लाख आवास प्रज्ञप्त हैं ।

२. लवण-समुद्र की बाहरी वेला को बहत्तर हजार नाग धारण करते हैं ।

३. श्रमण भगवान् महावीर बहत्तर वर्ष की सर्वायु पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःखरहित हुए ।

४. स्थविर अचलभ्राता बहत्तर वर्ष की सर्वायु पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए ।

५. आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध में बहत्तर चन्द्र प्रभासित हुए थे, प्रभासित होते हैं, प्रभासित होंगे । आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध में बहत्तर सूर्य तपे थे, तपते हैं, तपेंगे ।

६. प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के बहत्तर हजार उत्तम पुर/नगर प्रज्ञप्त हैं ।

७. कलाएँ बहत्तर प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
१. लेख, २. गणित, ३. रूप, ४. नाट्य, ५. गीत, ६. वाद्य, ७. स्वरगत/स्वर, ८. पुष्करगत/वाद्य-

७. सरगयं, ८. पुक्खरगयं, ९. समतालं, १०. जूयं, ११. जणवायं, १२. पोरेकव्वं, १३. अट्ठावयं, १४. दगमट्टियं, १५. अण्णविहिं. १६. पाणविहिं, १७. लेणविहिं, १८. सयणविहिं, १९. अज्जं, २०. पहेलियं, २१. मागहियं, २२. गाहं, २३. सिलोगं, २४. गंधजुत्ति, २५. मधुसित्थं, २६. आभरणविहिं, २७. तरुणीपडिकम्मं, २८. इत्थीलक्खणं, २९. पुरिसलक्खणं, ३०. हयलक्खणं, ३१. गयलक्खणं, ३२. गोलक्खणं, ३३. कुक्कुडलक्खणं, ३४. मिंढयलक्खणं, ३५. चक्कलक्खणं, ३६. छत्तलक्खणं, ३७. दंडलक्खणं, ३८. असिलक्खणं, ३९. मणिलक्खणं, ४०. काकणिलक्खणं, ४१. चम्मलक्खणं, ४२. चंदचरियं, ४३. सूरचरियं, ४४. राहुचरियं, ४५. गहचरियं, ४६. सोभाकरं, ४७. दोभाकरं, ४८. विज्जागयं, ४९. मंतगयं, ५०. रहस्सगयं, ५१. सभासं, ५२. चारं, ५३. पडिचारं, ५४. वूहं, ५५. पडिवूहं, ५६. खंधावारमाणं, ५७. नगरमाणं, ५८. वत्थुमाणं, ५९. खंधावारनिवेसं, ६०. नगरनिवेसं, ६१. वत्थुनिवेसं, ६२. ईसत्थं, ६३. छरुप्प-

विशेष, ९. समताल, १०. द्यूत, ११. जनवाद/जनश्रुति, १२. पुरःकाव्य/आशु,-कवित्व १३.अष्टापद/शतरंज, १४ दकमृत्तिका/संयोग, १५. अन्नविधि, १६. पानविधि, १७. लयनविधि/गृह-निर्माण. १८. शयनविधि, १९. आर्या/छन्द-विशेष, २०. प्रहेलिका/पहेली-रचना, २१. मागधिका/छन्द-विशेष, २२. गाथा, २३ श्लोक, २४. गंधयुक्ति, २५. मधुसिक्थ, २६. आभरणविधि, २७. तरुणीप्रतिकर्म/सौन्दर्य-प्रसाधन, २८. स्त्रीलक्षण, २९. पुरुषलक्षण, ३० हयलक्षण/अश्व-विद्या, ३१. गजलक्षण, ३२. गोलक्षण, ३३. कुक्कुटलक्षण, ३४. मेषलक्षण, ३५. चक्रलक्षण, ३६. छत्रलक्षण, ३७. दंडलक्षण, ३८. असिलक्षण/शस्त्र-कला, ३९. मणिलक्षण, ४०. काकिणी (रत्न-विशेष) लक्षण, ४१. चर्मलक्षण, ४२. चन्द्रचर्या, ४३. सूर्यचर्या, ४४. राहुचर्या, ४५. गृहचर्या, ४६. सौभाग्यकर, ४७.दौर्भाग्यकर, ४८. विद्यागत/कला-विद्या ४९. मंत्रगत, ५०. रहस्यगत, ५१. सभास/वस्तु-वृत्त, ५२. चार/यात्रा-कला ५३. प्रतिचार/सेवा/ग्रहगति, ५४. व्यूह, ५५. प्रतिव्यूह, ५६. स्कन्धावामान/सैन्य प्रमाण ज्ञान, ५७. नगरमान, ५८. वस्तुमान, ५९. स्कन्धावारनिवेश / सैन्यसंस्थान-रचना, ६०. नगरनिवेश, ६१. वास्तुनिवेश, ६२. इष्वस्त्र/दिव्यास्त्र, ६३.

गयं, ६४. आससिक्खं, ६५. हत्थिसिक्खं, ६६. धणुव्वेयं, ६७. हिरण्णपागं सुवण्णपागं मणिपागं धातुपागं, ६८. बाहुजुद्धं दण्डजुद्धं मुट्ठिजुद्धं अट्ठिजुद्धं जुद्धं निजुद्धं जुद्धातिजुद्धं, ६९. सुत्तखेड्डं, नालियाखेड्डं वट्टखेड्डं ७०. पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं पत्तगच्छेज्जं ७१. सज्जीवं निज्जीवं ७२. सउणरुयं

लक्षणगत/खड्गशास्त्र, ६४. अश्व-शिक्षा, ६५. हस्तिशिक्षा, ६६. धनुर्वेद, ६७. हिरण्यपाक/रजत-सिद्धि, सुवर्णपाक/स्वर्ण-सिद्धि, मणिपाक, धातुपाक, ६८. बाहुयुद्ध, दण्डयुद्ध, मुष्टियुद्ध, अस्थियुद्ध, युद्ध, नियुद्ध, युद्धातियुद्ध, ६९. सूत्रखेल/क्रीड़ा, नालिकाखेल, वृत्तखेल ७०. पत्र-छेद्य, कटक-छेद्य, पत्रक-छेद्य, ७१. सजीव, निर्जीव, ७२. शकुनरुत/शकुनशास्त्र।

८. सम्मुच्छिमखहयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

८. सम्मूर्च्छिम-खेचर-पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च-योनिक जीवों की उत्कृष्टतः बहत्तर हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

## तेवत्तरिमो समवाओ

१. हरिवासरम्मयवासियाओ णं जीवाओ तेवत्तरिं-तेवत्तरिं जोयणसहस्साइं नव य एक्कुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्ताओ।

२. विजए णं बलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

## तिहत्तरवां समवाय

१. हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की जीवा/परिधि तेहत्तर-तेहत्तर हजार नौ सौ एक योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से साढ़े सतरह भाग प्रमाण $\left(७३९०१\frac{१७\frac{१}{२}}{१९} \text{योजन}\right)$ आयाम की—लम्बी प्रज्ञप्त है।

२. बलदेव विजय तिहत्तर शत-सहस्र/लाख वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

## चोवत्तरिमो समवाओ

१. थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

२. निसहाओ णं वासहरपव्वयाओ तिगिंछिद्दहाओ सीतोतामहानदी चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहुत्ति पवहित्ता वतिरामतियाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पण्णासजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महया घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहार संठाणसंठिएण पवाएणं महया सद्देणं पवडइ।

३. एवं सीतावि दक्खिणहुत्ति भणियव्वा।

४. चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

## चौहत्तरवां समवाय

१. स्थविर गणधर अग्निभूति चौहत्तर वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःखरहित हुए।

२. निषध वर्षधर पर्वत के तिगिंछिद्रह से शीतोदा महानदी कुछ अधिक चौहत्तर सौ योजन उत्तरमुखी वह कर चार योजन लम्बी और पचास योजन चौड़ी वज्रमय जिह्वा से महान् घटमुख से प्रवर्तित,मुक्तावलिहार के संस्थान से संस्थित प्रपात से महान् शब्द करती हुई वज्रतल कुण्ड में गिरती है।

३. इसी प्रकार शीता भी दक्षिणमुखी कथित है।

४. चौथी पृथिवी को छोड़कर शेष छह पृथिवियों में चौहत्तर शत-सहस्र लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं।

## पण्णत्तरिमो समवाओ

१. सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ पण्णत्तरिं जिणसया होत्था।

२. सीतले णं अरहा पण्णत्तरिं पुव्वसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए।

३. संती णं अरहा पण्णत्तरिं वाससहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

## पचहत्तरवां समवाय

१. अर्हत् सुविधि पुष्पदन्त के पचहत्तर सौ केवली थे।

२. अर्हत् शीतल ने पचहत्तर हजार पूर्वो तक अगार-मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

३. अर्हत् शान्ति ने पचहत्तर हजार वर्षो तक अगार-मध्य रह कर, मुंड हो कर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

## छावत्तरिमो समवाओ

१. छावत्तरिं विज्जुकुमारावाससय-सहस्सा पण्णत्ता ।

२ एवं—
दीवदिसाउदहीणं,
विज्जुकुमारिदथणियमग्गीणं ।
छण्हपि जुगलयाणं,
छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥

## छिहत्तरवां समवाय

१. विद्युत्कुमार देवों के छिहत्तर शत-सहस्र/लाख आवास प्रज्ञप्त हैं ।

२. इसी प्रकार—
द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार विद्युत्कुमार, स्तनितकुमार और अग्निकुमार—इन छह देव-युगल के छिहत्तर-छिहत्तर शत-सहस्र / लाख आवास प्रज्ञप्त हैं ।

## सत्तत्तरिमो समवाओ

१. भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झावसित्ता महारायाभिसेयं संपत्ते।

२. अंगवंसाओ णं सत्तत्तरिं रायाणो मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइया।

३. गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्तत्तरिं देवसहस्सा परिवारा पण्णत्ता।

४. एगमेगे णं मुहुत्ते सत्तत्तरिं लवे लवग्गेणं पण्णत्ते।

## सतहत्तरवां समवाय

१. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत सतहत्तर शत-सहस्र/लाख पूर्वो तक कुमार-वास में रहने के बाद महाराजाभिषेक को सम्प्राप्त किया।

२. अंग वंश के सतहत्तर राजाओं ने मुंड होकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

३. गर्दतोय और तुषित—दो देवों का परिवार सतहत्तर हजार देवों का प्रज्ञप्त है।

४. प्रत्येक मुहूर्त्त लव की दृष्टि से सतहत्तर लव का प्रज्ञप्त है।

## अट्ठसत्तरिमो समवाओ

१. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणे महाराया अट्ठसत्तरीए सुवण्णकुमारदीवकुमारावाससय-सहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्टित्तं सामित्तं महारायत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ।

२. थेरे णं अकंपिए अट्ठसत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

३. उत्तरायणनियट्टे णं सूरिए पढमाओ मंडलाओ एगूणचत्तालीसइमे मंडले अट्ठहत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं चारं चरइ।

४. एवं दक्खिणायणनियट्टेवि।

## अठत्तरवां समवाय

१. देवेन्द्र देवराज शक्र के महाराज वैश्रमण सुपर्णकुमार और द्वीपकुमार के अठत्तर शत-सहस्र/लाख आवासों का आधिपत्य, पौरपत्य, भर्तृत्व, स्वामित्व, महाराजत्व तथा आज्ञा, ऐश्वर्य और सेनापतित्व करते हुए, उनका पालन करते हुए विचरण करता है।

२. स्थविर अकंपित अठत्तर वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

३. उत्तरायण से निवृत सूर्य प्रथम मंडल से उनतालीसवें मंडल में दिवस-क्षेत्र को एक मुहूर्त के इकसठवें अठत्तर भाग ($\frac{७८}{६१}$ मुहूर्त) प्रमाण न्यून और रजनी-क्षेत्र को इसी प्रमाण में अधिक करता हुआ संचरण करता है।

४. इसी प्रकार दक्षिणायन से निवृत्त सूर्य भी।

# एगूणासीइमो समवाओ

१. वलयामुहस्स णं पायालस्स हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए हेठिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

२. एवं केउस्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि।

३. छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणासीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बारस्स य बारस्स य एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

# उन्यासिवां समवाय

१. वडवामुख पाताल के अधस्तन चरमान्त से इस रत्नप्रभा पृथ्वी का अधस्तन चरमान्त का अबाधतः अन्तर उन्यासी हजार योजन प्रज्ञप्त है।

२. इसी प्रकार केतु, यूप और ईश्वर का भी।

३. छठी पृथ्वी के बहुमध्यदेशभाग से छठे घनोदधि के अधस्तन चरमान्त का अबाधतः अन्तर उन्यासी हजार योजन प्रज्ञप्त हैं।

४. जम्बूद्वीप-द्वीप के प्रत्येक द्वार का अबाधतः अन्तर उन्यासी हजार योजन से कुछ अधिक प्रज्ञप्त हैं।

## असीइइमो समवाओ

१. सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

२. तिविट्ठू णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३. अयले णं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

४. तिविट्ठू णं वासुदेवे असीइं वाससयसहस्साइं महाराया होत्था।

५. आउबहुले णं कंडे असीइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते।

६. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो असीइं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

७. जंबुद्दीवे णं दीवे असीउत्तरं जोयणसयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढमं उदयं करेई।

## अस्सिवां समवाय

१. अर्हत् श्रेयांस ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी धनुष ऊँचे थे।

२. वासुदेव त्रिपृष्ठ ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी धनुष ऊँचे थे।

३. बलदेव अचल ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी धनुष ऊँचे थे।

४. वासुदेव त्रिपृष्ठ ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी शत-सहस्र/लाख वर्ष तक महाराज रहे थे।

५. [रत्नप्रभा का] अप्कायबहुल-काण्ड अस्सी हजार योजन बाहल्य/मोटा प्रज्ञप्त है।

६. देवेन्द्र देवराज ईशान के अस्सी हजार सामानिक प्रज्ञप्त हैं।

७. जम्बूद्वीप-द्वीप में एक सौ अस्सी हजार योजन का अवगाहन कर सूर्य उत्तर दिशा को प्राप्त हो, प्रथम मण्डल में उदय करता है।

# एक्कासीइइमो समवाओ

१. नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा एक्कासीइ राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए आराहिया यावि भवइ।

२. कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीति मणपज्जवनाणिसया होत्था।

३. विआहपण्णत्तीए एक्कासीति महाजुम्मसया पण्णत्ता।

# इक्यासिवां समवाय

१. नव-नवमिका भिक्षु-प्रतिमा इक्यासी रात-दिन में चार सौ पाँच भिक्षा [-दत्तियों] से सूत्र के अनुरूप, कल्प के अनुरूप, मार्ग के अनुरूप और तथ्य के अनुरूप, काया से सम्यक् स्पृष्ट, पालित, शोधित, पारित, कीर्तित और आज्ञा से आराधित होती है।

२. अर्हत् कुन्थु के इक्यासी सौ मनःपर्यवज्ञानी थे।

३. व्याख्याप्रज्ञप्ति में इक्यासी महायुग्मशत प्रज्ञप्त हैं।

# बासीतिइमो समवाओ

१. जंबुद्दीवे दीवे बासीयं मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरइ, तं जहा—
निक्खममाणे य पविसमाणे य।

२. समणे भगवं महावीरे बासीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए।

३. महाहिमवंतस्सं णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं बासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४. एवं रुप्पिस्सवि।

# बयासिवां समवाय

१. जम्बूद्वीप-द्वीप में एक सौ बयासी मण्डल हैं। सूर्य उनमें दो बार संक्रमण कर संचार करता है। जैसे कि—
निष्क्रमण करता हुआ और प्रवेश करता हुआ।

२. श्रमण भगवान् महावीर बयासी रात-दिन व्यतीत हो जाने पर [एक] गर्भ से [दूसरे] गर्भ में संहृत हुए।

३. महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के ऊपरी चरमान्त से सौगन्धिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधतः अन्तर बयासी सौ योजन प्रज्ञप्त है।

४. इसी प्रकार रुक्मी का भी।

## तेयासिइइमो समवाओ

१. समणे भगवं महावीरे बासीइ-राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासी-इमे राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए।

२. सीयलस्स णं अरहओ तेसीति गणा तेसीति गणहरा होत्था।

३. थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्व-दुक्खप्पहीणे।

४. उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवास-मज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए।

५. भरहे णं राया चाउरंतचक्क-वट्टी तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी।

## तिरासिवां समवाय

१ श्रमण भगवान् महावीर बयासी रात-दिन व्यतीत होने पर तिरासिवें रात-दिन के वर्तने पर [एक] गर्भ से [दूसरे] गर्भ में संहृत हुए।

२. अर्हत् शीतल के तिरासी गण और तिराशी गणधर थे।

३. स्थविर मंडितपुत्र तिरासी वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

४. कौशलिक अर्हत् ऋषभ ने तिरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वो तक अगार-वास मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

५. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत तिरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वो तक अगार-मध्य रहकर जिन, केवली, सर्वज्ञ और सर्वभावदर्शी हुए।

## चउरासिइइमो समवाओ

१. चउरासीइं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

२. उसभे णं अरहा कोसलिए चउ-रासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वा-उयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

३. एवं भरहो बाहुबली बंभी सुन्दरी ।

४. सेज्जंसे णं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पाल-इत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५. तिविट्ठू णं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पाल-इत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइय-त्ताए उववण्णे ।

६. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो चउरासीई सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

७. सव्वेवि णं बाहिरया मंदरा चउ-रासीइं-चउरासीइं जोयणसह-स्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

## चौरासिवां समवाय

१. नरकावास चौरासी शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त हैं ।

२. कौशलिक अर्हत् ऋषभ चौरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वो की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

३. इसी प्रकार भरत, बाहुबली, ब्राह्मी और सुन्दरी [हुए] ।

४. अर्हत् श्रेयांस चौरासी शत-सहस्र/लाख वर्षो की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत और सर्व दुःख-रहित हुए ।

५. वासुदेव त्रिपृष्ठ चौरासी शत-सहस्र/लाख वर्षो की पूर्ण आयु पालकर अप्रतिष्ठान नरक में नैरयिकत्व से उपपन्न हुए ।

६. देवेन्द्र देवराज शक्र के चौरासी हजार सामानिक प्रज्ञप्त हैं ।

७. सभी बाह्य मन्दरपर्वत ऊँचाई की दृष्टि से चौरासी हजार योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

८. सव्वेवि णं अंजणगपव्वया चउरासीइं-चउरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

८. समस्त अञ्जनक पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से चौरासी-चौरासी हजार योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

९. हरिवासरम्मयवासियाणं जीवाणं धणुपट्ठा चउरासीइं-चउरासीइं जोयणसहस्साइं सोलस जोयणाइं चत्तारि य भागा जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता ।

९. हरिवर्ष और रम्यकवर्ष की जीवा के धनु:पृष्ठ का परिक्षेप (परिधि) चौरासी हजार सोलह योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से चार भाग प्रमाण ८४०१६$\frac{४}{१९}$ योजन प्रज्ञप्त हैं ।

१०. पंकबहुलस्स णं कंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं चोरासीइं जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

१०. पंचबहुलकांड के उपरितन चरमान्त से अधस्तन चरमान्त का अबाधत: अन्तर चौरासी शत-सहस्र/लाख योजन प्रज्ञप्त है ।

११. वियाहपण्णत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं पण्णत्ता ।

११. भगवती . व्याख्याप्रज्ञप्ति के पद-परिमाण की दृष्टि से चौरासी हजार पद प्रज्ञप्त हैं ।

१२. चोरासीइं नागकुमारवाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

१२. नागकुमार के आवास चौरासी शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त हैं ।

१३. चोरासीइं पइण्णगसहस्सा पण्णत्ता ।

१३. प्रकीर्णक चौरासी हजार प्रज्ञप्त हैं ।

१४. चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा पण्णत्ता ।

१४. योनि-प्रमुख/योनि-द्वार चौरासी शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त हैं ।

१५. पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सट्ठाणट्ठाणंतराणं चोरासीए गुणकारे पण्णत्ता ।

१५. पूर्व (संख्यावाची) से लेकर शीर्ष-प्रहेलिका—अन्तिम महासंख्या पर्यन्त स्वस्थान और स्थानान्तर चौरासी लाख गुणाकार वाले प्रज्ञप्त हैं ।

१६. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइं गणा चउरासीइं गणहरा होत्था ।

१६. कौशलिक अर्हत् ऋषभ के चौरासी गण और चौरासी गणधर थे ।

१७. उसभस्स णं कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चउरासीइं समणसाहस्सीओ होत्था ।

१७. कौशलिक अर्हत् ऋषभ के ऋषभसेन प्रमुख चौरासी हजार श्रमण थे ।

१८. सव्वेवि चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खायं ।

१८. सभी विमानवासी/वैमानिक देवों के चौरासी लाख सतानवे हजार, तेईस विमान है, ऐसा आख्यात है ।

## पंचासीइइमो समवाओ

१. आयारस्स णं भगवओ सचूलियागस्स पंचासीइं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

२. धायइसंडस्स णं मंदरा पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता।

३. रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

४. नंदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं पंचासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

## पचासिवां समवाय

१. चूलिका-सहित भगवद् आचार/आचारांग-सूत्र के पचासी उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं।

२. धातकीखंड के [दोनों] मेरु पर्वतों का सर्व परिमाण पचासी हजार योजन प्रज्ञप्त है।

३. रुचक मांडलिक पर्वत का सर्व परिमाण पचासी हजार योजन प्रज्ञप्त हैं।

४. नन्दनवन के अधस्तन चरमान्त से सौगन्धिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधतः अन्तर पचासी सौ योजन का प्रज्ञप्त है।

## छलसीइइमो समवाओ

१. सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइं गणा छलसीइं गणहरा होत्था ।

२. सुपासस्स णं अरहओ छलसीइं वाइसया होत्था ।

३. दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं छलसीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

## छियासिवां समवाय

१. अर्हत् सुविधि पुष्पदन्त के छियासी गण और छियासी गणधर थे ।

२. अर्हत् सुपार्श्व के छियासी सौ वादी थे ।

३. दूसरी पृथ्वी के बहुमध्यदेशभाग से दूसरे घनोदधि के अधस्तन चरमान्त का अबाधतः अन्तर छियासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

## सत्तासीइइमो समवाओ

१. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४. मंदरस्स णं पव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमंते एस णं, सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

## सत्तासिवां समवाय

१. मन्दर पर्वत के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अबाधतः अन्तर सत्तासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

२. मन्दर पर्वत के दक्षिणी चरमान्त से दकावभास आवास-पर्वत के उत्तरी चरमान्त का अबाधतः अन्तर सत्तासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

३. मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से शंख आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अबाधतः अन्तर सत्तासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

४. मन्दर पर्वत के उत्तरी चरमान्त से दकसीम आवास-पर्वत के दक्षिणी चरमान्त का अबाधतः अन्तर सत्तासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

५. छण्हं कम्मपगडीणं आइमउवरिल्लवज्जाणं सत्तासीइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

५. आदि [ज्ञानावरण] और अन्तिम [अन्तराय] की कर्म-प्रकृतियों को छोड़कर शेष छह कर्म-प्रकृतियों की सत्तासी उत्तर-प्रकृतियाँ प्रज्ञप्त हैं ।

६. महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं सत्तासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

६. महाहिमवंत कूट के उपरितन चरमान्त से सौगंधिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधत: अन्तर सत्तासी सौ योजन का प्रज्ञप्त है ।

७. एवं रुप्पिकूडस्सवि ।

७. इसी प्रकार रुक्मीकूट का भी ।

# अट्ठासीइइमो समवाओ

१. एगमेगस्स णं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइं-अट्ठासीइं महग्गहा परिवारो पण्णत्तो ।

२. दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइं सुत्ताइं पण्णत्ताइं, तं जहा—

उज्जुसुयं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विजयचरियं अणंतरं परंपरं सामाणं संजूहं संभिण्णं आहच्चायं सोवत्थियं घंटं नंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूयं दुयावत्तं वत्तमाणुपयं समभिरूढं सव्वओभद्दं पण्णासं दुप्पडिग्गहं ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयनइयाणि ससमयसुत्त परिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयनइयाणि आजीवियसुत्त-परिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगनइयाणि तेरासियसुत्त परिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्त-परिवाडीए ।

# अठासिवां समवाय

१. प्रत्येक चन्द्र और सूर्य के अठासी-अठासी महाग्रहों का परिवार प्रज्ञप्त है ।

२. दृष्टिवाद के सूत्र अठासी प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

ऋजुसूत्र, परिणतापरिणत, बहुभंगिक, विजयचरित, अनन्तर, परम्पर, सामान, संयूथ, संभिन्न, यथात्याग, सौवस्तिकघंट, नन्दावर्त्त, बहुल, पृष्टापृष्ट, व्यावर्त्त, एवंभूत, द्वयावर्त्त, वर्तमानपद, समभिरूढ, सर्वतोभद्र, पन्यास, दुष्प्रतिग्रह ।

ये बाईस सूत्र स्व-समय-परिपाटी के अनुसार छिन्नछेद-नयिक होते हैं ।

ये बाईस सूत्र आजीवक-परिपाटी के अनुसार अछिन्नछेद-नयिक होते है ।

ये बाईस सूत्र त्रैराशिक-परिपाटी के अनुसार त्रिक-नयिक होते हैं ।

ये बाईस सूत्र स्व-समय-परिपाटी के अनुसार चतुष्क-नयिक होते हैं ।

एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीइ सुत्ताइं भवंति त्ति मक्खायं ।

इस प्रकार इन सबका योग करने पर अठासी सूत्र होते हैं ।

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३. मन्दर पर्वत के पूर्वीय चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वीय चरमान्त का अबाधतः अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

४. मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४. मन्दर पर्वत के दक्षिणी चरमान्त से दकावभास आवास-पर्वत के दक्षिणी चरमान्त का अबाधतः अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

५. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

५. मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से शंख आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अबाधतः अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

६. मंदरस्स णं पव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

६. मन्दर पर्वत के उत्तरी चरमान्त से दकसीम आवास-पर्वत के उत्तरी चरमान्त का अबाधतः अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

७. बाहिराओ णं उत्तराओ कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमीणे चोयालीसइमंमंडलगते अट्ठासीइ

७. बाह्य उत्तर से दक्षिण की ओर गति करते हुए प्रथम छह माह में सूर्य चवालीसवें मण्डल में पहुंचने पर

इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवस-खेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरइ।

८. दक्खिणकट्ठाओ णं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे चोयालीस-तिममंडलगते अट्ठासीई इगसट्ठि-भागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवु-ड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवु-ड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ।

मुहुर्त्त के इकसठ्वें अठासी भाग (८८/६१ मुहूर्त्त) प्रमाण दिवस-क्षेत्र का परिह्लास कर एवं रजनी-क्षेत्र को अभिवर्धित कर संचरण करता है।

८. दक्षिण से उत्तर की ओर गति करते हुए दूसरे छह माह में सूर्य चवा-लीसवें मण्डल मे पहुंचने पर मुहुर्त्त के इकसठ्वें अठासी भाग (८८/६१ मुहूर्त्त) प्रमाण रजनी-क्षेत्र का परिह्लास कर एवं दिवस-क्षेत्र को अभिवर्धित कर संचरण करता है।

# एगूणणउइइमो समवाओ

१. उसभे णं अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए सुसम-दुसमाए पच्छिमे भागे एगूण-णउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं काल-गए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२. समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थीए सुसम-दुसमाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहिं सेसहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३. हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्क-वट्टी एगूणणउइं वाससयाइं महा-राया होत्था ।

४. संतिस्स णं अरहओ एगूणणउई अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जासंपया होत्था ।

# नवासिवां समवाय

१. कौशलिक अर्हत् ऋषभ इस अव-सर्पिणी के तीसरे सुषम-दुषमा आरे के पश्चिम भाग में, नवासी अर्द्ध-मास शेष रहने पर कालगत होकर मुक्त हुए ।

२. श्रमण भगवान् महावीर इस अव-सर्पिणी के चौथे—सुषमा-दुपमा आरे के पश्चिम-भाग में, नवासी अर्द्धमास शेष रहने पर कालगत होकर सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

३. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा हरिषेण नवासी सौ वर्षो तक महाराज रहे थे ।

४. अर्हत् शान्ति की नवासी हजार आर्याओं की उत्कृष्ट आर्या सम्पदा थी ।

## णउइइमो समवाओ

१. सीयले णं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

२. अजियस्स णं अरहओ नउइं गणा नउइं गणहरा होत्था।

३. संतिस्स णं अरहओ नउइं गणा नउइं गणहरा होत्था।

४. सयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था।

५. सव्वेसि णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधियकंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं नउइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

## नब्बेवां समवाय

१. अर्हत् शीतल ऊँचाई की दृष्टि से नव्वे धनुष ऊँचे थे।

२. अर्हत् अजित के नव्वे गण और नव्वे गणधर थे।

३. अर्हत् शान्ति के नव्वे गण और नव्वे गणधर थे।

४. वासुदेव स्वयम्भू नव्वे वर्षों तक विजयशील रहे।

५. समस्त वृत्तवैताढ्य पर्वतों के उपरितन शिखरतल से सौगंधिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधतः अन्तर नौ हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

## एक्काणउइइमो समवाओ

१. एक्काणउई परवेयावच्चकम्म-पडिमाओ पण्णत्ताओ।

२. कालोए णं समुद्दे एक्काणउई जोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

३. कुंथुस्स णं अरहओ एक्काणउई अहोहियसया होत्था।

४. आउय-गोय-वज्जाणं छण्हं कम्म-पगडीणं एक्काणउई उत्तर-पगडीओ पण्णत्ताओ।

## इक्यानबेवां समवाय

१. पर-वैयावृत्यकर्म की प्रतिमाएँ इक्यानवे प्रज्ञप्त हैं।

२. कालोद समुद्र का परिक्षेप इक्यानवे शत-सहस्र/लाख योजन से कुछ अधिक प्रज्ञप्त है।

३. अर्हत् कुन्थु के इक्यानवे सौ आधो-वधिक ज्ञानी थे।

४. आयुष्य और गोत्रकर्म को छोड़कर शेष छह कर्म-प्रकृतियों की उत्तर-प्रकृतियां इक्यानवे प्रज्ञप्त हैं।

## बाणउइइमो समवाओ

१. बाणउइं पडिमाओ पण्णत्ताओ ।

२. थेरे णं इंदभूई बाणउइं वासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्व-दुक्खप्पहीणे ।

३. मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झ-देसभागाओ गोथुभस्स आवास-पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरि-मंते, एस णं बाणउइं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४. एवं चउण्हंपि आवासपव्वयाणं ।

## बानवेवां समवाय

१. प्रतिमाएँ बानवें प्रज्ञप्त हैं ।

२. स्थविर इन्द्रभूति बानवें वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

३. मन्दर पर्वत के बहुमध्यदेशभाग से गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अवाधतः अन्तर बानवें हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

४. इसी प्रकार चार आवास-पर्वतों का भी [प्रज्ञप्त है ।]

## तेणउइइमो समवाय

१. चंदप्पहस्स णं अरहओ तेणउइं गणा तेणउइं गणहरा होत्था।

२. संतिस्स णं अरहओ तेणउइं चउद्दसपुव्विसया होत्था।

३. तेणउइमंडलगते णं सूरिए अत्ति-वट्टमाणे निवट्टमाणे वा समं अहोरत्तं विसमं करेइ।

## तिरानवेवां समवाय

१. अर्हत् चन्द्रप्रभ के तिरानवे गण और तिरानवे गणधर थे।

२. अर्हत् शांति के तिरानवे सौ चौदह पूर्वी थे।

३. तिरानवे मण्डलगत सूर्य अतिवर्तन एवं निवर्तन करते हुए सम अहोरात्र को विषम कर देता है।

## चउणउइइमो समवाओ

१. निसहनीलवंतियाओ णं जीवाओ चउणउइं-चउणउइं जोयण-सहस्साइं एक्कं छप्पण्णं जोयण-सयं दोण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

२. अजियस्स णं अरहओ चउणउइं ओहिनाणिसया होत्था।

## चौरानवेवां समवाय

१. निषध और नीलवान् पर्वत की प्रत्येक जीवा का आयाम चौरानवें हजार एक सौ छप्पन योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों में से दो भाग प्रमाण (९४१५६ $\frac{२}{१९}$ योजन) प्रज्ञप्त है।

२. अर्हत् अजित के चौरानवे सौ अवधिज्ञानी थे।

# पंचाणउइइमो समवाओ

१. सुपासस्स णं अरहओ पंचाणउइं गणा पंचाणउइं गणहरा होत्था ।

२. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चरिमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारि महापायाला पण्णत्ता, तं जहा—
वलयामुहे केउए जूवते ईसरे ।

३. लवणसमुद्दस्स उभओ पासंपि पंचाणउइं-पंचाणउइं पदेसाओ उव्वेहुस्सेहपरिहाणीए पण्णत्ताओ।

४. कुंथू णं अरहा पंचाणउइं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५. थेरे णं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

# पंचानवेवां समवाय

१. अर्हत् सुपार्श्व के पंचानवे गण और पंचानवे गणधर थे ।

२. जम्बूद्वीप-द्वीप के चरमान्त से चारों दिशाओं में लवण-समुद्र में पंचानवे-पंचानवे हजार योजन अवगाहन करने पर चार महापाताल प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
वडवामुख, केतुक, यूपक और ईश्वर ।

३. लवण-समुद्र के उभय पार्श्व पंचानवे-पंचानवे प्रदेशों पर उद्वेध/गहराई व उत्सेध/ऊँचाई की परिहानि प्रज्ञप्त है ।

४. अर्हत् कुन्थु पंचानवे हजार वर्षों की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

५. स्थविर मौर्यपुत्र पंचानवे हजार वर्षों की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

## छण्णउइइमो समवाओ

१. एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंत-चक्कवट्टिस्स छण्णउइं-छण्णउइं गामकोडीओ होत्था ।

२. वाउकुमाराणं छण्णउइं भवणा-वाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

३. ववहारिए णं दंडे छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।

४. ववहारिए णं धणू छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।

५. ववहारिया णं नालिया छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।

६. ववहारिए णं जुगे छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।

७. ववहारिए णं अक्खे छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।

८. ववहारिए णं मुसले छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलपमाणेणं ।

९. अब्भंतराओ आइमुहुत्ते छण्ण-उइं अंगुलछाए पण्णत्ते ।

## छियानवेवां समवाय

१. प्रत्येक चातुरंत चक्रवर्ती राजा के छियानवे-छियानवे करोड़ ग्राम थे ।

२. वायुकुमारों के छियानवे शत-सहस्र/लाख भवनावास प्रज्ञप्त हैं ।

३. व्यावहारिक दण्ड, अंगुल-प्रमाण से छियानवे अंगुल प्रज्ञप्त है ।

४. व्यावहारिक धनुष, अंगुल-प्रमाण से छियानवे अंगुल प्रज्ञप्त है ।

५. व्यावहारिक नालिका, अंगुल-प्रमाण से छियानवे अंगुल प्रज्ञप्त है ।

६. व्यावहारिक युग, अंगुल-प्रमाण से छियानवे अंगुल प्रज्ञप्त है ।

७. व्यावहारिक अक्ष, अंगुल-प्रमाण से छियानवे अंगुल प्रज्ञप्त है ।

८. व्यावहारिक मुशल, अंगुल-प्रमाण से छियानवे अंगुल प्रज्ञप्त है ।

९. आभ्यन्तर मण्डल में प्रथम मुहूर्त छियानवे अंगुल की छाया वाला प्रज्ञप्त है ।

# सत्ताणउइइमो समवाओ

१. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्ताणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

२. एवं चउद्दिसिंपि ।

३. अट्ठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

४. हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइं वाससयाइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए ।

# सत्तानवेवां समवाय

१. मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अबाधतः अन्तर सत्तानवे हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

२. इसी प्रकार चारों दिशाओं में भी [ज्ञातव्य/प्रज्ञप्त है ।]

३. आठों कर्म-प्रकृतियों की उत्तर-प्रकृतियां सत्तानवे प्रज्ञप्त हैं ।

४. चातुरन्त चक्रवर्ती ने राजा हरिषेण कुछ कम सत्तानवे सौ वर्षो तक अगार-मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

# अट्ठाणउइइमो समवाओ

१. नंदणवणस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ पडयवणस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

२. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं अट्ठाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३. एवं चउदिसिंपि ।

४. दाहिणभरहद्धस्स णं धणुपट्ठे अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पण्णत्ते ।

५. उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमीणे एगूणपंचासइसमडलगए अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ ।

# अठानवेवां समवाय

१. नंदनवन के उपरितन चरमान्त से पण्डकवन के अधस्तन चरमान्त का अवाधतः अन्तर अठानवे हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

२. मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अवाधतः अन्तर अठानवे हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

३. इसी प्रकार चारों दिशाओं में भी [ज्ञातव्य/प्रज्ञप्त] है ।

४. दक्षिण भरत का धनुःपृष्ठ कुछ न्यून अठानवे सौ योजन आयाम का—लम्बा प्रज्ञप्त है ।

५. सूर्य उत्तर दिशा से प्रथम छह मास तक उनचासवें मण्डल में दिवस-क्षेत्र का मुहूर्त्त के इकसठवें अट्ठावनवें भाग ($\frac{९८}{६१}$ मुहूर्त्त) प्रमाण ह्रास और रजनी-क्षेत्र का इसी प्रमाण में अभिवर्धन करते हुए संचरण करता है ।

६. दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे एगूणपण्णासइमेमंडलगए अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ।

६. सूर्य दक्षिण दिशा से दूसरे छह मास तक उनचासवें मण्डल में रजनी-क्षेत्र का मुहूर्त्त के इकसठवें अट्ठानवें भाग ($\frac{९८}{६१}$ मुहूर्त्त) प्रमाण ह्रास और दिवस-क्षेत्र का इसी प्रमाण में अभिवर्धन करते हुए संचरण करता है।

७. रेवईपढमजेट्ठपज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइं ताराओ तारग्गेणं पण्णत्ताओ।

७. रेवती नक्षत्र से ज्येष्ठा नक्षत्र तक के उन्नीस नक्षत्रों के, तारा-प्रमाण से, अठानवे तारे प्रज्ञप्त हैं।

# णवणउइइमो समवाओ

# निन्यानवेवां समवाय

१. मंदरे णं पव्वए णवणउइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते ।

१. मन्दर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से निन्यानवे हजार योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है ।

२. नंदणवणस्स णं पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं णवणउइं जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

२. नन्दनवन के पूर्वी चरमान्त से पश्चिमी चरमान्त का अवाधत: अन्तर निन्यानवे सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

३. नंदणवणस्स णं दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्ले चरिमंते, एस णं णवणउइं जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३. नन्दनवन के दक्षिणी चरमान्त से उत्तरी चरमान्त का अवाधत: अन्तर निन्यानवे सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

४. पढमे सूरियमंडले णवणउइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

४. प्रथम सूर्य-मण्डल निन्यानवे हजार योजन से कुछ अधिक आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

५. दोच्चे सूरियमंडले णवणउइं जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

५. दूसरा सूर्य-मण्डल निन्यानवे हजार योजन से कुछ अधिक आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

६. तइए सूरियमंडले णवणउइं जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

६. तीसरा सूर्य-मण्डल निन्यानवे हजार योजन से कुछ अधिक आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

७. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ वाणमंतर-भोमेज्ज-विहाराणं उवरिल्ले चरिमंते, एस णं णवणउइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

७. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के अंजन-काण्ड के अधस्तन चरमान्त से वानव्यंतरों के भौमेय विहारों के उपरितन चरमान्त का अबाधतः अन्तर निन्यानवे सौ योजन प्रज्ञप्त है।

## सततमो समवाओ

## सौवां समवाय

१. दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए आराहिया यावि भवइ ।

१. दशदशमिका भिक्षु-प्रतिमा सौ रात-दिन पांच सौ पचास भिक्षा[-दत्तियों] से सूत्र के अनुरूप, कल्प के अनुरूप, मार्ग के अनुरूप और तथ्य के अनुरूप, काया से सम्यक् स्पृष्ट, पालित, शोधित, पारित, कीर्तित और आज्ञा से आराधित होती है ।

२. सयभिसयानक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते ।

२. शतभिषक् नक्षत्र के सौ तारे प्रज्ञप्त हैं ।

३. सुविही पुप्फदंते णं अरहा एगं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

३. अर्हत् सुविधि पुष्पदन्त ऊँचाई की दृष्टि से सौ धनुष ऊंचे थे ।

४. पासे णं अरहा पुरिसादाणीए एक्कं वाससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४. पुरुपादानीय अर्हत् पार्श्व सौ वर्षों को सम्पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

५. थेरे णं अज्जसुहम्मे एक्कं वाससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५. स्थविर आर्य सुधर्मा सौ वर्षों की सम्पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

६. सव्वेवि णं दीहवेयड्ढपव्वया एगमेगं गाउयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

६. समस्त दीर्घ वैताढ्य पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सौ-सौ गाउ ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

७. सव्वेवि णं चुल्लहिमवंतसिहरी-वासहरपव्वया एगमेगं जोयण-सयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

७. सभी क्षुल्लहिमवंत और शिखरी वर्षधर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से एक-एक सौ योजन ऊंचे और एक-एक सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त हैं।

८. सव्वेवि णं कंचणगपव्वया एग-मेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगमेगं गायउसयं उव्वेहेणं एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खं-भेणं पण्णत्ता।

८. समस्त कांचनक पर्वत सौ-सौ योजन ऊँचे, सौ-सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे और सौ-सौ योजन मूल में विष्कम्भक/चौड़े प्रज्ञप्त हैं।

# सतोत्तर-समवाओ

१. चंदप्पभे णं अरहा दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

२. आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं पण्णत्ते।

३. एवं अच्चुएवि।

४. सुपासे णं अरहा दो धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

५. सव्वेवि णं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दो दो गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

६. जंबुद्दीवे णं दीवे दो कंचणपव्वयसया पण्णत्ता।

७. पउमप्पभे णं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

८. असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

९. सुमई णं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

# शतोत्तर-समवाय

१. अर्हत् चन्द्रप्रभ ऊँचाई की दृष्टि से डेढ़ सौ धनुष ऊँचे थे।

२. आरण कल्प में डेढ़ सौ विमानावास प्रज्ञप्त हैं।

३. इसी प्रकार अच्युत कल्प में भी।

४. अर्हत् सुपार्श्व ऊँचाई की दृष्टि से दो सौ धनुष ऊंचे थे।

५. सर्व महाहिमवंत और रुक्मी वर्षधर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से दो-दो सौ योजन ऊंचे और दो-दो सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त हैं।

६. जम्बूद्वीप द्वीप में दो सौ कंचन पर्वत प्रज्ञप्त हैं।

७. अर्हत् पद्मप्रभ ऊँचाई की दृष्टि से ढाई सौ धनुष ऊंचे थे।

८. असुरकुमार देवों के प्रासादावतंसक ऊँचाई की दृष्टि से ढाई सौ योजन ऊंचे प्रज्ञप्त हैं।

९. अर्हत् सुमति ऊँचाई की दृष्टि से तीन सौ धनुष ऊंचे थे।

१०. अरिट्ठनेमी णं अरहा तिण्णि वाससयाइं कुमारवास मज्झाव- सित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिअं पव्वइए।

१०. अर्हत् अरिष्टनेमि ने तीन सौ वर्षों तक कुमारवास मध्य रहकर, मुंड होकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

११. वेमाणियाणं देवाणं विमाण- पागारा तिण्णि तिण्णि जोयण- सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

११. वैमानिक देवों के विमानों के प्राकार ऊँचाई की दृष्टि से तीन- तीन सौ योजन ऊंचे प्रज्ञप्त हैं।

१२. समणस्स णं भगवओ महावीर- स्स तिण्णि सयाणि चोद्दस- पुव्वीणं होत्था।

१२. श्रमण भगवान् महावीर के तीन सौ चौदहपूर्वी थे।

१३. पंचधणुसइयस्स णं अंतिम- सारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणु- सयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता।

१३. पांच सौ धनुष के अन्तिम शरीरी, सिद्धिगत जीवों के जीव- प्रदेशों की अवगाहना तीन सौ धनुष से कुछ अधिक प्रज्ञप्त है।

१४. पासस्स णं अरहओ पुरिसा- दाणीयस्स अद्धट्ठसयाइं चोद्दस- पुव्वीणं संपया होत्था।

१४. पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व के साढे तीन सौ चौदहपूर्वी साधुओं की सम्पदा थी।

१५. अभिनंदणे णं अरहा अद्धट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

१५. अर्हत् अभिनन्दन ऊँचाई की दृष्टि से साढ़े तीन सौ धनुष ऊँचे थे।

१६. संभवे णं अरहा चत्तारि धणु- सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

१६. अर्हत् संभव ऊँचाई की दृष्टि से चार सौ धनुष ऊंचे थे।

१७. सव्वेवि णं णिसढ-नीलवंता वासहरपव्वया चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

१७. सभी निषध और नीलवान् वर्ष- धर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से चार सौ योजन ऊंचे और चार-चार सौ गाउ उद्वेधवाले/ गहरे प्रज्ञप्त हैं।

१८. सव्वेवि णं वक्खारपव्वया णिसढनीलवंतवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।

१८. समस्त वक्षस्कार पर्वत निषध और नीलवान् वर्षधर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से चार-चार सौ योजन ऊँचे तथा चार-चार सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त हैं ।

१६. आणय-पाणएसु—दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया पण्णत्ता ।

१६. आनत और प्राणत—इन दो कल्पों में चार सौ विमान प्रज्ञप्त है ।

२०. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेवमणयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ।

२०. श्रमण भगवान् महावीर के देव, मनुष्य और असुरलोक में होने वाले वाद में अपराजित चार सौ वादियों की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी ।

२१. अजिते णं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

२१. अर्हत् अजित ऊँचाई की दृष्टि से साढ़े चार सौ धनुष ऊँचे थे ।

२२. सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

२२. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा सगर ऊँचाई की दृष्टि से साढ़े चार सौ धनुष ऊँचे थे ।

२३. सव्वेवि णं वक्खारपव्वया सीयासीतोयाओ महानईओ मंदरं वा पव्वयं पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच-पच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता ।

२३. शीता और शीतोदा महानदियों के सभी वक्षस्कार और मन्दर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से पांच-पांच सौ योजन ऊँचे तथा पांच-पांच सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त है ।

२४. सव्वेवि णं वासहरकूडा पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच-पंच जोयणसयाइं विक्खभेणं पण्णत्ता ।

२४. समस्त वर्षधर-कूट ऊँचाई की दृष्टि से पांच-पांच सौ योजन ऊँचे तथा मूल में पांच-पांच सौ योजन विष्कम्भवाले/चौड़े प्रज्ञप्त हैं ।

२५. उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

२५. कौशलिक अर्हत् ऋषभ ऊँचाई की दृष्टि से पांच सौ धनुष ऊँचे थे।

२६. भरहे णं राया चाउरतचक्कवट्टी पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

२६. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत ऊँचाई की दृष्टि से पांच सौ धनुष ऊँचे थे।

२७. सोमणस-गंधमायण-विज्जुप्पह-मालवंता णं वक्खारपव्वया णं मंदरपव्वयंतेणं पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच-पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

२७. सौमनस, गंधमादन, विद्युत्प्रभ और माल्यवत् वक्षस्कार पर्वत मन्दर पर्वत के समीप ऊँचाई की दृष्टि से पांच-पांच सौ योजन ऊँचे तथा पांच-पांच सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त हैं।

२८. सव्वेवि णं वक्खारपव्वयकूडा हरि-हरिस्सहकूडवज्जा पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच-पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता।

२८. हरि और हरिस्सह कूटों को छोड़कर सभी वक्षस्कार-पर्वत-कूट ऊँचाई की दृष्टि से पांच-पांच सौ योजन ऊँचे तथा मूल में पांच-पांच सौ योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त हैं।

२९. सव्वेवि णं नंदणकूडा बलकूडवज्जा पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच-पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता।

२९. बलकूट को छोड़कर सभी नन्दनवन-कूट ऊँचाई की दृष्टि से पांच-पांच सौ योजन ऊँचे तथा मूल में पांच-पांच सौ योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त हैं।

३०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंच-पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

३०. सौधर्म और ईशान कल्पों में विमान ऊँचाई की दृष्टि से पांच-पांच सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं।

३१. सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छ-छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

३१. सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पों में विमान ऊँचाई की दृष्टि से छह सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं।

३२. चुल्लहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस णं छ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

३२. क्षुल्लहिमवत्कूट के उपरितन चरमान्त से क्षुल्लहिमवत् वर्षधर पर्वत के समभूतल का अबाधतः अन्तर छह सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

३३. एवं सिहरीकूडस्सवि ।

३३. इसी प्रकार शिखरीकूट का भी ।

३४. पासस्स णं अरहओ छ सया वाईणं सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजिआणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ।

३४. अर्हत् पार्श्व के देव, मनुष्य और असुरलोक में होने वाले वाद में अपराजित छह सौ वादियों की उत्कृष्ट वादी-सम्पदा थी ।

३५. अभिचंदे णं कुलगरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

३५. कुलकर अभिचन्द्र ऊँचाई की दृष्टि से छह सौ धनुष ऊँचे थे ।

३६. वासुपुज्जे णं अरहा छहि पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

३६. अर्हत् वासुपूज्य ने छह सौ पुरुषों के साथ मुंड होकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

३७. बंभ-लंतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त-सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

३७. ब्रह्म और लान्तक कल्पों में विमान ऊँचाई की दृष्टि से सात-सात सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है ।

३८. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसया होत्था ।

३८. श्रमण भगवान् महावीर के सात सौ केवली थे ।

३९. समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था ।

३९. श्रमण भगवान् महावीर के सात सौ साधु वैक्रिय [लब्धिसम्पन्न] थे ।

४०. अरिट्ठनेमी णं अरहा सत्त वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४०. अर्हत् अरिष्टनेमि सात सौ से कुछ न्यून वर्षों तक केवल-पर्याय पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

४१. महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंताओ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस णं सत्त जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४१. महाहिमवत् कूट के उपरितन चरमान्त से महाहिमवत् वर्षधर पर्वत के समभूतल का अबाधतः अन्तर सात सौ योजन प्रज्ञप्त है।

४२. एवं रुप्पिकूडस्सवि।

४२. इसी प्रकार रुक्मीकूट का भी।

४३. महासुक्क - सहस्सारेसु — दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ-अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता।

४३. महाशुक्र और सहस्रार—इन दो कल्पों में विमान ऊँचाई की दृष्टि से आठ-आठ सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं।

४४. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए पढमे कंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतर - भोमेज्ज - विहारा पण्णत्ता।

४४. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड में आठ सौ योजन तक वानव्यन्तर देवों के भौमेय विहार प्रज्ञप्त हैं।

४५. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइसंपया होत्था।

४५. श्रमण भगवान् महावीर के अनुत्तरोपपातिक देवों में कल्याणकारी गति करने वाले, कल्याणकारी स्थिति वाले, भविष्य में मोक्ष प्राप्त करने वाले आठ सौ साधुओं की उत्कृष्ट अनुत्तरोपपातिक सम्पदा थी।

४६. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहिं जोयणसएहिं सूरिए चारं चरति।

४६. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसमरमणीय भूमि-भाग से आठ सौ योजन पर सूर्य संचार करता है।

४७. अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइं वाईणं सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था।

४७. अर्हत् अरिष्टनेमि के देव, मनुष्य और असुरलोक में होने वाले वाद में अपराजित आठ सौ साधुओं की उत्कृष्ट वादी-सम्पदा थी।

४८. आणय - पाणय - आरणच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव-नव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

४८. आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्पों में विमान ऊँचाई की दृष्टि से नौ-नौ सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

४९. निसहकूडस्स णं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

४९. निषधकूट के उपरितन चरमान्त से निषध वर्षधर पर्वत के सम-धरणीतल का अबाधतः अन्तर नौ सौ योजन का प्रज्ञप्त है ।

५०. एवं नीलवंतकूडस्सवि ।

५०. इसी प्रकार नीलवत्कूट का भी ।

५१. विमलवाहणे णं कुलगरे णं नव धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

५१. कुलकर विमलवाहन ऊँचाई की दृष्टि से नौ सौ धनुष ऊँचे थे ।

५२. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयणसएहिं सव्वुपरिमे ताराख्वे चारं चरइ ।

५२. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसमरमणीय भूमिभाग से नौ सौ योजन पर सबसे ऊपर के तारे संचरण करते हैं ।

५३. निसढस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए पढमस्स कंडस्स बहुमज्झदेसभागे, एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

५३. निषध वर्षधर पर्वत के उपरितन शिखरतल से इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड में बहुमध्यदेशभाग का अबाधतः अन्तर नौ सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

५४. एवं नीलवंतस्सवि ।

५४. इसी प्रकार नीलवान् का भी [प्रज्ञप्त है ।]

५५. सव्वेवि णं गेवेज्जविमाणा दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

५५. सभी ग्रैवेयक विमान ऊँचाई की दृष्टि से दस-दस सौ/हजार-हजार योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

५६. सव्वेवि णं जमगपव्वया दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस-दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस-दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता।

५६. सभी यमक पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से दस-दस सौ/हजार-हजार योजन ऊँचे, हजार-हजार गाउ उद्वेधवाले/गहरे और मूल में हजार-हजार योजन आयाम-विष्कम्भक/लम्बे-चौड़े प्रज्ञप्त हैं।

५७. एवं चित्त-विचित्तकूडा वि भणियव्वा।

५७. इसी प्रकार चित्र और विचित्रकूट भी कथित हैं।

५८. सव्वेवि णं वट्टवेयड्ढपव्वया दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस-दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लग-संठाणसंठिया, मूले दस-दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

५८. सभी वृत्तवैताढ्य-पर्वत हजार-हजार योजन ऊँचे, हजार-हजार गाउ उद्वेधवाले/गहरे, सर्वत्र सम, पल्य-संस्थान से संस्थित और मूल में हजार-हजार योजन आयाम-विष्कम्भक/लम्बे-चौड़े प्रज्ञप्त हैं।

५९. सव्वेवि णं हरिहरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

५९. वक्षस्कारकूट को छोड़कर सर्व हरिकूट और हरिस्सहकूट ऊँचाई की दृष्टि से हजार-हजार योजन ऊँचे और मूल में हजार-हजार योजन विष्कम्भक/चौड़े प्रज्ञप्त हैं।

६०. एवं वलकूडावि नंदणकूड-वज्जा।

६०. इसी प्रकार नन्दनकूट को छोड़कर वलकूट भी [प्रज्ञप्त हैं।]

६१. अरहा वि अरिट्ठनेमी दस वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

६१. अर्हत् अरिष्टनेमि हजार वर्षों की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए।

६२. पासस्स णं अरहओ दस सयाइं जिणाणं होत्था।

६२. अर्हत् पार्श्व के हजार जिन/केवली थे।

६३. पासस्स णं अरहओ दस अंतेवासिसयाइं कालगयाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं ।

६३. अर्हत् पार्श्व के दश सौ/एक हजार अन्तेवासी कालगत हो, सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

६४. पउमद्दह-पुंडरीयद्दहा य दस-दस जोयणसयाइं आयामेणं पण्णत्ता ।

६४. पद्मद्रह और पुण्डरीकद्रह दश-दश सौ/हजार-हजार योजन आयाम-वाले/लम्बे प्रज्ञप्त हैं ।

६५. अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

६५. अनुत्तरोपपातिक देवों के विमान ऊँचाई की दृष्टि से ग्यारह सौ योजन ऊंचे प्रज्ञप्त हैं ।

६६. पासस्स णं अरहओ इक्कारससयाइं वेउव्वियाणं होत्था ।

६६ अर्हत् पार्श्व के वैक्रिय [लब्धि-सम्पन्न] साधु ग्यारह सौ थे ।

६७. महापउम-महापुंडरीयद्दहाणं दो-दो जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता ।

६७ महापद्मद्रह और महापुण्डरीद्रह दो-दो हजार योजन आयामवाले/लम्बे प्रज्ञप्त हैं ।

६८. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए वइरकंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ लोहियक्खस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं तिण्णि जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

६८. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के वज्रकांड के उपरितन चरमान्त से लोहिताक्ष-कांड के अधस्तन चरमान्त का अबाधतः अन्तर तीन हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

६९. तिगिच्छि-केसरिदहा णं चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता ।

६९. तिगिच्छद्रह और केसरीद्रह चार-चार हजार योजन आयामवाले/लम्बे प्रज्ञप्त हैं ।

७०. धरणितले मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे रुयगनाभीओ चउदिसिं पंच-पंच जोयणसहस्साइं अबाहाए मंदरपव्वए पण्णत्ते ।

७०. धरणीतल में मन्दर-पर्वत के बहुमध्यदेशभाग में नाभिरुचक प्रदेशों से चारों दिशाओं में अबाधतः अन्तर पांच-पांच हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

७१. सहस्सारे णं कप्पे छ विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ।

७१. सहस्रार कल्प में छह हजार विमान प्रज्ञप्त हैं ।

७२. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ पुलगस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं सत्त जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

७२. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नकांड के उपरितन चरमान्त से पुलककांड के अधस्तन चरमान्त का अवाधतः अन्तर सात हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

७३. हरिवास-रम्मया णं वासा अट्ठ-अट्ठ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं पण्णत्ता ।

७३. हरिवर्ष और रम्यकवर्ष साधिक आठ-आठ हजार योजन विस्तार से प्रज्ञप्त हैं ।

७४. दाहिणड्ढभरहस्स णं जीवा पाईणपडीणायया दुहओ समुद्दं पुट्ठा नव जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता ।

७४. दक्षिणार्ध भरत की जीवा पूर्व-पश्चिम दिशा की दोनों ओर से समुद्र का स्पर्श करती हुई नौ हजार योजन आयामवाली/लम्बी प्रज्ञप्त है ।

७५. मंदरे णं पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते ।

७५. मन्दर-पर्वत धरणीतल पर दस हजार योजन विष्कम्भक/चौड़ा प्रज्ञप्त है ।

७६. जंबूदीवेणं दीवे एगं जोयणसय-सहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता ।

७६. जम्बूद्वीप द्वीप एक शत-सहस्र/लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

७७. लवणे णं समुद्दे दो जोयणसय-सहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

७७. लवण समुद्र का दो शत-सहस्र/लाख योजन चक्रवाल-विष्कम्भ प्रज्ञप्त है ।

७८. पासस्स णं अरहओ तिण्णि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्था ।

७८. अर्हत् पार्श्व की तीन शत-सहस्र/लाख सत्ताईस हजार श्राविकाओं की उत्कृष्ट श्राविकासम्पदा थी ।

७९. धायइसंडे णं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल-विक्खंभेणं पण्णत्ते ।

७९. घातकीखण्ठ द्वीप का शत-सहस्र/चार लाख योजन का चक्रवाल-विष्कम्भ प्रज्ञप्त है ।

८०. लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं पच जोयणसयसहस्साइं अबाहाए पण्णत्ते ।
अंतरे पण्णत्ते ।

८०. लवण समुद्र के पूर्वी चरमान्त से पश्चिमी चरमान्त का अवाधत: अन्तर पंच रात-सहस्र/लाख योजन प्रज्ञप्त है ।

८१. भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइं रायमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए ।

८१. चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत ने छह शत-सहस्र लाख पूर्वों तक राज्य-मध्य रह कर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

८२. जंबूदीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ धायइसंडचक्कवालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्त जोयणसयसहस्साइं अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

८२. जम्बूद्वीप द्वीप की पूर्वी वेदिका के चरमान्त से धातकीखंड के चक्रवाल के पश्चिमी चरमान्त का अवाधत: अन्तर सात शत-सहस्र-लाख योजन प्रज्ञप्त है ।

८३. माहिंदे णं कप्पे अट्ठ विमाणावाससयसहस्साइं पण्णत्ताइं ।

८३. माहेन्द्र कल्प में आठ शत-सहस्र/लाख विमान प्रज्ञप्त हैं ।

८४. अजियस्स णं अरहओ साइरेगाइं नव ओहिनाणिसहस्साइं होत्था ।

८४. अर्हत् अजित के नौ हजार से अधिक अवधिज्ञानी थे ।

८५. पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नरएसु नेरइत्ताए उववण्णे ।

८५. वासुदेव पुरुषसिंह दश शत-सहस्र/लाख वर्ष की सर्वायु पाल कर, पांचवीं पृथिवी के नरकों में नैरयिकत्व से उपपन्न हुए ।

८६. समणे भगवं महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ 'छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

८६. श्रमण भगवान् महावीर तीर्थंकर भवग्रहण से [पूर्व] छठे पोट्टिल-भव-ग्रहण में एक करोड़ वर्ष तक श्रामण्यपर्याय पालकर महस्रार देवलोक में सर्वार्थ विमान में देवत्व से उपपन्न हुए ।

८७. उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

८७. भगवान् श्री ऋषभ से चरम [तीर्थंकर] महावीर वर्द्धमान का अबाधतः अन्तर एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम प्रज्ञप्त है ।

## दुवालसंग-समवाओ

१. दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तं जहा—
आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विआहपण्णत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए।

२. से किं तं आयारे ?
आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-ट्ठाण-गमण-चंकमण-पमाण-जोगजुंजण-भासा-समिति-गुत्ती सेज्जोवहि-भत्तपाण-उग्गम-उप्पायणएसणाविसोहि-सुद्धासुद्धग्गहण-वयणियमतवोवहाण सुप्पसत्थ-माहिज्जइ।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—
णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे।

आयारस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा

## द्वादशांग-समवाय

१. गणिपिटक के बारह अंग है, जैसे कि—
१. आचार, २. सूत्रकृत, ३. स्थान, ४. समवाय, ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति, ६. ज्ञात-धर्मकथा, ७. उपासकदशा, ८. अन्तकृतदशा, ९. अनुत्तरोपपातिकदशा, १०. प्रश्नव्याकरण, ११. विपाकश्रुत, १२. दृष्टिवाद।

२. वह आचार क्या है ?
आचार में श्रमण-निर्ग्रन्थों के आचार, गोचर, विनय, वैनयिक, स्थान, गमन, चंक्रमण, प्रमाण, योग-योजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्गम-विशुद्धि, उत्पादन-विशुद्धि, एषणा-विशुद्धि, शुद्धाशुद्धग्रहण, व्रत, नियम, तप-उपधान का सुप्रशस्त आख्यान किया गया है।

संक्षेप में आचार पंचविध प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार ३. चरित्राचार, ४. तपाचार, ५. वीर्याचार,।

आचार की वाचनाएँ परिमित है, अनुयोगद्वार संख्येय है, प्रतिपत्तियाँ संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक

वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ ।

संख्येय हैं, निर्युक्तियाँ संख्येय हैं ।

से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे दो सुयक्खंधा पणवीसं अज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकाला पंचासीइं समुद्देसणकाला अट्ठारस पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा ।

वह अङ्ग की अपेक्षा से प्रथम अंग है । इसके दो श्रुतस्कंध, पचीस अध्ययन, पचासी उद्देशन-काल, पचासी समुद्देशन काल, पद-प्रमाण से अठारह हजार पद, संख्येय अक्षर, अनन्त पर्याय हैं ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन, किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति ।

सेत्तं आयारे ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गयाहै, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

यह है वह आचार ।

३. से किं तं सूयगडे ?

सूयगडे णं ससमया सूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमयपरसमया सूइज्जंति जीवा सूइज्जंति अजीवा सूइज्जंति जीवाजीवा सूइज्जंति लोगे सूइज्जति

३. वह सूत्रकृत क्या है ?

सूत्रकृत में स्व-समय की सूचना दी गई है, पर-समय की सूचना दी गई है, स्व-समय-पर-समय की सूचना दी गई है, जीवों की सूचना दी गई है, अजीवों

अलोगे सूइज्जति लोगालोगे सूइज्जति ।

की सूचना दी गई है, जीव-अजीव की सूचना दी गई है, लोक की सूचना दी गई है, अलोक की सूचना दी गई है, लोक-अलोक की सूचना दी गई है ।

सूयगडे णं जीवाजीव - पुण्ण-पावासव - संवर - निज्जर - बंध-मोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जंति ।

सूत्रकृत में जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष तक पदार्थों की सूचना दी गई है ।

समणाणं अचिरकालपव्वइयाणं कुसमयमोह - मोहमइमोहियाणं संदेहजाय - सहजबुद्धि-परिणाम-संसाइयाणं पावकर - मइलमइ-गुणविसोहणत्थं आसीतस्स किरियावादिसतस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं—तिण्हं तेसट्ठाणं अण्णदिट्ठियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जति ।

इसमें नवदीक्षित श्रमणों के कुसमय/अन्यतीर्थिक मोह की मोहमति से मोहित, सन्देहजात, सहजबुद्धि के परिणाम के संशयित, पापकारी मलिन मतिगुण के विशोधन के लिए एक सौ अस्सी क्रियावादियों, चौरासी अक्रियावादियों, सड़सठ अज्ञानवादियों तथा बत्तीस वैनयिकवादियों—इस प्रकार तीन सौ तिरसठ अन्य दृष्टियों का व्यूह कर स्व-समय की स्थापना की गई है ।

णाणादिट्ठंतवयण - णिस्सारं-सुट्ठु दरिसयंता ।

विविध दृष्टान्तों एवं वचनों की निस्सारता को सम्यक् प्रकार से दर्शाया गया है ।

विविहवित्थराणुगम - परमसब्भाव-गुण - विसिट्ठा मोक्खपहोयारगा उदारा अण्णाणतमंधकारदुग्गेसु दीवभूता सोवाणा चेव ।

विविध विस्तारानुगम एवं परम सद्भाव-गुण से विशिष्ट, मोक्ष-पथ के अवतारक, उदार, अज्ञान-अन्धकार के दुर्ग में दीपभूत और सोपान है ।

सिद्धिसुगइ घरुत्तमस्स णिक्खोभ-निप्पकंपा सुत्तत्था ।

इसके सूत्रार्थ सिद्धिगति के उत्तम गृह के लिए क्षोभरहित एवं निष्प्रकम्प हैं ।

सूयगडस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

सूत्रकृत की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय है।

से णं अंगट्ठयाए दोच्चे अंगे दो सुयक्खधा तेवीसं अज्झयणा तेत्तीसं उद्देसणकाला तेत्तीसं समुद्देसणकाला छत्तीसं पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

यह अंग की अपेक्षा से दूसरा अंग है। [इसके] दो श्रुतस्कन्ध, तेईस अध्ययन, तेतीस उद्देशन-काल, तेतीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से छत्तीस हजार पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म और अनन्त पर्याय हैं। इस में परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निवद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति उवदंसिज्जति।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

सेत्त सूयगडे।

यह है वह सूत्रकृत।

४. से किं तं ठाणे?
ठाणे णं ससमया ठाविज्जंति परसमया ठाविज्जंति ससमय-परसमया ठाविज्जति जीवा

४. वह स्थान क्या है?
स्थान में स्व-समय की स्थापना की गई है, पर-समय की स्थापना की गई है, स्व-समय पर-समय की

ठाविज्जंति अजीवा ठाविज्जंति जीवाजीवा ठाविज्जंति लोगे ठाविज्जति अलोगे ठाविज्जति लोगालोगे ठाविज्जति ।

स्थापना की गई है। जीवों की स्थापना की गई है, अजीवों की स्थापना की गई है, जीव-अजीव की स्थापना की गई है। लोक की स्थापना की गई है, अलोक की स्थापना की गई है, लोक-अलोक की स्थापना की गई है।

ठाणे णं दव्व - गुण - खेत्त- काल-पज्जव पयत्थाणं—
सेला सलिला य समुद्दसूर-
भवणविमाण आगर णदीओ ।
णिहओ पुरिसज्जाया,
सरा य गोत्ता य जोइसंचाला ।।

'स्थान' में पदार्थो के द्रव्य, गुण, क्षेत्र, काल और पर्याय की, पर्वत, सलिला, समुद्र, सूर्य, भवन, विमान, आकर, नदी, निधि, पुरुष-जाति, स्वर, गोत्र, ज्योतिष्-चक्र का संचार—इन सबका आकलन है।

एक्कविहवत्तव्वयं दुविहवत्तव्वयं जाव दसविहवत्तव्वयं जीवाण पोग्गलाण य लोगट्ठाइणं च परूवयणा आघविज्जति ।

इसमें एक विध वक्तव्यता, द्विविध वक्तव्यता यावत् दशविध वक्तव्यता है। इसमें जीव, पुद्गल और लोकस्थायी [द्रव्यों] की प्ररूपणा आख्यात है।

ठाणस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणु ओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ ।

स्थान की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिप्रतियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियां संख्येय हैं।

से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा एक्कवीसं उद्देसणकाला एक्कवीसं समुद्देसणकाला बावत्तरिं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा ।

यह अंग की अपेक्षा से तीसरा अंग है। [इसके] एक श्रुतस्कन्ध, दस अध्ययन, इक्कीस उद्देशन-काल, इक्कीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से बहत्तर हजार पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म और अनन्त पर्याय हैं।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जति उवदंसिज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार चरण-करण-प्ररूपण का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं ठाणे ।

यह है वह स्थान ।

५. से किं तं समवाए ?
समवाए णं ससमया सूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमय-परसमया सूइज्जंति जीवा सूइज्जंति अजीवा सूइज्जंति जीवाजीव सूइज्जंति लोगे सूइज्जंति अलोगे सूइज्जंति लोगालोगे सूइज्जंति ।

५. समवाय क्या है ?
समवाय में स्वसमय की सूचना दी गई है, परसमय की सूचना दी गई है, स्वसमय और परसमय की सूचना दी गई है। जीवों की सूचना दी गई है, अजीवों की सूचना दी गई है, जीव-अजीव की सूचना दी गई है, लोक की सूचना दी गई है। अलोक की सूचना दी गई है, लोक-अलोक की सूचना दी गई है ।

समवाए णं एकादियाणं एगट्ठाणं एगुत्तरियपरिवुड्ढीय, दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ ।

समवाय में एकादिक अर्थों/पदार्थों की एकोत्तरिका की परिवृद्धि और द्वादशांग गणिपिटक का पल्लवाग्र सार ज्ञापित है ।

ठाणगसयस्स बारसविहवित्थ-रस्स सुयणाणस्स जगजीव-हियस्स भगवओ समासेणं समायारे आहिज्जति ।

इसमें सौ स्थानों तक बारह प्रकार के विस्तार वाले श्रुतज्ञान का भगवान् द्वारा जगत् के जीवों के हित के हिए संक्षेप में समाचार आख्यात है ।

तत्थ य णाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वण्णिया वित्थ-रेण अवरे वि य बहुविहा विसेसा नरग - तिरिय - मणुय-सुरगणाणं आहारुस्सास - लेस-आवाससंख - आययप्पमाण उववाय - चयण - ओगाहणोहि-वेयण - विहाण - उवओग - जोग-इंदिय-कसाय ।

इसमें नानाविध जीव-अजीव विस्तारपूर्वक वर्णित हैं। इसके अतिरिक्त विशेष रूप से बहुविध-नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवों के आहार, उच्छ्वास, लेश्या, आवास-संख्या, आयत-प्रमाण, उपपात, च्यवन, अवगाहना, अवधि, वेदन, विधान, उपयोग, योग, इन्द्रिय और कषाय वर्णित हैं ।

विविहा य जीवजोणी विक्खं-भुस्सेह-परिरयप्पमाणं विधि-विसेसा य मंदरादीणं मही-धराणं ।

विविध जीवयोनि, विष्कम्भ/विस्तार, उत्सेध/ऊँचाई और परिधि का प्रमाण, महीधर, मन्दर आदि के विधि-विशेष वर्णित हैं ।

कुलगर - तित्थगर - गणहराणं समत्तभरहाहिवाणं चक्कीणं चेव चक्कहरहलहराण य वासाण य निग्गमा य समाए ।

इसमें कुलकर, तीर्थंकर, गणधर, समग्र भरत के अधिपति चक्रवर्ती, चक्रधर, हलधर और वर्षों/क्षेत्रों का निर्गम निर्दशित है ।

एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थ-रेणं अत्था समासिज्जंति ।

ये और इसी प्रकार के दूसरे अर्थ यहां विस्तार से समाकलित है ।

समवायस्सणं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा सखे-ज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखे-

समवाय की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय है, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं,

ज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ ।

संग्रहणियां संख्येय हैं ।

से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खंधे उद्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चोयाले पदसयसहस्से पदग्गेणं, संखेज्जाणि अक्खराणि अणंता गमा अणंता पज्जवा ।

यह अंग की अपेक्षा से चौथा अंग है । [इसके] एक अध्ययन, एक श्रुतस्कन्ध, एक उद्देशन-काल एक समुद्देशन-काल, पदप्रमाण से एक शत-सहस्र/लाख चौवालिस हजार पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म और अनन्त पर्याय हैं ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिनप्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से णं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करणप्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं समवाए ।

यह है वह समवाय ।

६. से किं तं वियाहे ?

वियाहे णं ससमया वियाहिज्जंति परसमया वियाहिज्जंति ससमयपरसमया वियाहिज्जंति जीवा वियाहिज्जंति अजीवा वियाहिज्जंति जीवाजीवा

६. व्याख्या/व्याख्याप्रज्ञप्ति क्या है ?

व्याख्या में स्वसमय की व्याख्या की गई है, परसमय की व्याख्या की गई है, स्वसमय-परसमय की व्याख्या की गई है। जीवों की व्याख्या की गई है, अजीवों की व्याख्या की

वियाहिज्जंति लोगे वियाहिज्जइ अलोगे वियाहिज्जइ लोगालोगे वियाहिज्जइ ।

गई है, जीव-अजीव की व्याख्या की गई है। लोक की व्याख्या की गई है, अलोक की व्याख्या की गई है, लोक-अलोक की व्याख्या की गई है ।

वियाहे णं नाणाविह-सुर-नरिंद रायरिसि-विविहसंसइय-पुच्छियाणं जिणेणं वित्थरेण भासियाणं दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव-पदेस - परिणाम - जहत्थिभाव-अणुगम-निक्खेव - णय - प्पमाण-सुनिउणोवक्कम - विविहप्पगार-पागड-पयंसियाणं लोगालोग-पगासियाणं संसारसमुद्द - रुद उत्तरण-समत्थाणं सुरपति-संपूजियाणं भविय-जणपय-हिययाभिनंदियाणं तमरय-विद्धंसणाणं सुदिट्ठ-दीवभूय-ईहामतिबुद्धि-वद्धणाणं छत्तीस-सहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणा सुयत्थ-वहुविहप्पगारा सीसहियत्थाय गुणहत्था ।

व्याख्या में नानाविध देव, नरेन्द्र, राजर्षि और विविध प्रकार के संशयित लोगों द्वारा पूछे गये और जिनेश्वर द्वारा विस्तारपूर्वक भाषित द्रव्य, गुण, क्षेत्र, काल, पर्याय, प्रदेश, परिणाम, यथा-अस्तिभाव, अनुगम, निक्षेप, तप, प्रमाण, सुनिपुण-उपक्रम की विविध प्रकार से प्रकट-प्रदर्शित करने वाले, लोक और अलोक को प्रकाशित करने वाले, संसार-समुद्र से पार लगाने वाले, उत्तर-समर्थ, सुरपति-पूजित, भव्यजनों एवं प्रजाहृदय से अभिनन्दित, तप और रज को विध्वंस करने वाले, सुदृष्ट, दीपभूत, ईहा, मति, बुद्धि के संवर्धक, छत्तीस हजार व्याकरणों/समस्या-समाधानों के बहुविध श्रुतार्थ, शिष्य-हितार्थ एवं गुण-हस्त/सिद्धहस्त दर्शन हैं ।

वियाहस्स णं परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहीओ ।

व्याख्या की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियां संख्येय हैं ।

से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगे सुयक्खंधे एगे साइरेगे अज्झ-

यह अंग की अपेक्षा से पांचवां अंग है । [इसके] एक श्रुतस्कन्ध,

पयसए दस उद्देसगसहस्साइं दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं वागरणसहस्साइं चउरासीई पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जाइं अक्खराइं अणंता गमा अणंता पज्जवा।

कुछ अधिक सौ अध्ययन, दस हजार उद्देशक, दस हजार समुद्देशक, छत्तीस हजार व्याकरण, पद-प्रमाण से चौरासी हजार पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म अनन्त पर्याय हैं।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

सेत्तं वियाहे।

यह है वह व्याख्या।

७. से किं तं नायाधम्मकहाओ?

नाया-धम्मकहासु णं नायाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओ-

७. वह ज्ञात-धर्मकथा क्या है?

ज्ञात-धर्मकथा में ज्ञातों/पात्रों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक-ऋद्धि-विशेष, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुत-परिग्रहण, तप-उपधान, पर्याय/दीक्षा-काल, संलेखना, भक्त-प्रत्याख्यान, प्रायोपगमन, देवलोकगमन, सुकुल में

वगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाती पुणबोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

पुनर्जन्म, पुनः बोधिलाभ और अन्तक्रिया का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

नाया-धम्मकहासु णं पव्वइयाणं विणयकरण-जिणसामिसासण-वरे संजमपइण्ण-पालणधिइ-मइ-ववसाय-दुल्लहाणं, तव-नियम-तवोवहाण-रण-दुद्धरभर-भग्गा-णिसहा-णिसट्ठाणं, घोरपरीसह-पराजिया-ऽसह-पारद्ध-रुद्ध-सिद्धालयमग्ग - निग्गयाणं, विसयसुह - तुच्छआसावसदोस-मुच्छियाणं, विराहिय-चरित्त-नाण-दंसण-जइगुण - विविहप्प-गार-निस्सार-सुण्णयाणं संसार-अपार-दुक्ख दुग्गइ-भव-विविह-परंपरा पवंचा।

ज्ञाताधर्मकथा में जिनेश्वर के विनयकरण/आचारनिष्ठ शासन में प्रव्रजित होने पर भी जो संयम की प्रतिज्ञा के पालन में दुर्लभ धृति, मति और व्यवसाय वाले हैं, तप, नियम, तप-उपधान रूपी संग्राम में दुर्धर भार से भग्न, निःसह, निःसृष्ट, घोर परीषहों से पराजित, प्रारब्ध-रुद्ध, सिद्धालय/मोक्ष-मार्ग से निर्गत, विषय-सुखों की तुच्छ आशावश दोषों में मूर्च्छित, चारित्र, ज्ञान और दर्शन के यतिगुण के विराधक तथा विविध प्रकार की निस्सारता से शून्य हैं, उनके संसार में होने वाले अपार दुःख, दुर्गति तथा भव-जन्म की विविध परम्परा के प्रपञ्च की प्ररूपणा की गई है।

धीराण य जिय-परिसह-कसाय-सेण्ण - धिइ - धणिय - संजम-उच्छाहनिच्छियाणं आराहिय-नाण - दंसण - चरित्त - जोग-निस्सल्ल-सुद्ध - सिद्धालयमग्ग-मभिमुहाणं सुरभवण-विमाण-सुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूण चिरं य भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि तओ य पुणो

इसमें धीर-पुरुषों का, परीषह और कषायरूपी सेना के विजयी, धृति के धनी, संयम में निश्चित उत्साह रखने वाले, ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा योग के आराधक, निःशल्य और शुद्ध सिद्धालय के मार्ग के अभिमुख, अनुपम देव-भवन के वैमानिक सुखों को प्राप्त चिरकाल तक दिव्य और महामहनीय भोगों

लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया।

को भोग कर तथा कालक्रम से वहां से च्युत होकर, जिस प्रकार वे पुनः सिद्धिमार्ग को पुनर्लब्ध कर अंतक्रिया करते हैं—उनकी प्ररूपणा की गई है।

चलियाण य सदेव-माणुस्स-धीरकरण-कारणाणि बोधण-अणुसासणाणि गुण-दोस-दरिसणाणि।

विचलितों में धैर्य उत्पन्न करने-कराने वाले, बोध और अनुशासन भरने वाले एवं गुण-दोषों को दर्शाने वाले देव तथा मनुष्यों का निदर्शन हैं।

दिट्ठंते पच्चए य सोउण लोगमुणिणो जह य ठिया सासणम्मि जर-मरण-नासण-करे।
आराहिय-संजमा य सुरलोग-पडिनियत्ता ओवेंति जह सासयं सिवं सव्वदुक्खमोक्खं।

इसमें दृष्टान्तों और प्रत्ययों/वाक्यों को सुन कर लौकिक मुनि जिस प्रकार से जरा-मरण का विनाश करने वाले जिनशासन में स्थित हुए, संयम की आराधना कर देव-लोक से प्रतिनिवृत्त होकर जिस प्रकार शाश्वत, शिव और सर्व दुःखों से मोक्ष पाते हैं—उसका आकलन किया गया है।

एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण य।

ये तथा इसी प्रकार के अन्य अर्थ इसमें विस्तार से आख्यात हैं।

नाया-धम्मकहासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ।

ज्ञात-धर्मकथा की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियां संख्येय हैं।

से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे दो सुयक्खंधा एगूणतीसं अज्झयणा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, त जहा—
चरिता य कप्पिया य।

यह अंग की अपेक्षा से छठा अंग है। इसके दो श्रुतस्कंध और उनतीस अध्ययन हैं। संक्षेप में वे दो प्रकार के है—चरित और कल्पित।

दस धम्मकहाणं वग्गा । तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच-पंच अक्खाइयासयाइं । एग-मेगाए अक्खाइयाए पंच-पंच उवक्खाइयासयाइं । एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच-पंच अक्खा-इय-उवक्खाइयसयाइं—एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ अक्खा-इयकोडीओ भवंतीति मक्खा-याओ । एगूणतीसं उद्देसण-काला एगूणतीसं समुद्देसण-काला संखेज्जाइंपयसयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा, अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा ।

धर्मकथा के दस वर्ग हैं । एक-एक धर्मकथा में पांच-पांच सौ आख्या-यिकाएँ हैं । एक-एक आख्यायिका में पांच-पांच सौ उप-आख्यायिकाएँ हैं । एक-एक उप-आख्यायिका में पांच-पांच सौ आख्यायिक-उपाख्या-यिकाएँ हैं । इस प्रकार कुल मिला कर साढ़े तीन करोड़ आख्यायिकाएँ हैं—ऐसा कहा है । इसमें उनतीस उद्देशन-काल, उनतीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से संख्येय शत-सहस्र/लाख पद संख्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म और अनन्त पर्याय हैं ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघवि-ज्जंति पण्णविज्जंति परूवि-ज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्ण-विज्जति परूविज्जति दंसि-ज्जति निदंसिज्जति उवदंसि-ज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करण-प्ररूपण का आख्यान किया गया है प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं णायाधम्मकहाओ ।

यह है वह ज्ञात-धर्मकथा ।

८. से किं तं उवासगदसाओ ?

८. वह उपासकदशा क्या है ?

उवासगदसासु णं उवासयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्डिविसेसा, उवासयाणं य सीलव्वय-वेरमण-गुण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-पडिवज्जणयाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाई पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

उपासकदशा में उपासकों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखंड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्म-कथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक-ऋद्धि-विशेष, शीलव्रत, विरमण, गुणव्रत, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास, श्रुत-परिग्रहण, तप-उपधान, प्रतिमा, उपसर्ग, संलेखना, भक्त-प्रत्याख्यान, प्रायोपगमन, देवलोक-गमन, सुकुल में पुनर्जन्म, पुनः बोधिलाभ और अन्तक्रिया का आख्यान किया गया है ।

उवासगदसासु णं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसा वित्थर-धम्मसवणाणि बोहिलाभ-अभिगमसम्मत्तविसुद्धया थिरत्तं मूल-गुण-उत्तरगुणाइयारा ठिइ-विसेसा य बहुविसेसा पडिमा-भिग्गहग्गहण-पालणा उवसग्गा-हियासणा णिरुवसग्गा य, तवा य विचित्ता, सीलव्वयवेरमण-गुण-पच्चक्खाण-पोसहोववासा, अ-पच्छिममारणंतियऽयसंलेहणा-झोसणाहि-अप्पाणं जह य भाव-इत्ता, बहूणि भत्ताणि अण-सणाए य छेयइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणु-भवंतिसुरवरविमाण-वरपोंडरी-एसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भोत्तूण उत्तमाइं, तओ

उपासकदशा में उपासकों के ऋद्धि-विशेष, परिषद्, विस्तृत धर्म-श्रवण, बोधि-लाभ, अभिगम, सम्यक्त्व-विशुद्धि, स्थिरता, मूलगुणों और उत्तरगुणों के अतिचार, स्थिति-विशेष, विविध विशिष्ट प्रतिमाओं तथा अभिग्रहों का ग्रहण और पालन, उपसर्ग-सहन, निरुपसर्गता, विचित्र तप, शीलव्रत, विरमण, गुणव्रत, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास, अपश्चिम-मारणान्तिक आत्म-संलेखना के सेवन से आत्मा को जिस प्रकार भावित करते हैं तथा अनेक भक्तों/भोजन-समयों का अनशन के रूप में छेदन कर उत्तम कल्प देवलोक के विमानों में उपपन्न होकर जिस प्रकार वर-पुंडरिक तुल्य सुरवर-विमानों में

आउवखएणं चुया समाणा जह जिणमयम्मि बोहिं लद्धूण य संजमुत्तमं, तमरयोघविप्प-मुक्का उवेंति जह अक्खयं सव्वदुक्खमोक्खं ।

अनुपम सुखों को क्रमशः भोगकर आयु क्षीण होने पर वहां से च्युत होकर जिस प्रकार जिनमत में बोधि और उत्तम संयम को प्राप्त करते हैं तथा तम और रज के प्रवाह से विप्रमुक्त होकर जिस प्रकार अक्षय और सब दुःखों से मोक्ष प्राप्त करते हैं—उसका आख्यान है ।

एते अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण य ।

ये तथा इसी प्रकार के अन्य अर्थ इसमें विस्तार से हैं ।

उवासगदसासु णं परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखे-ज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ संग-हणीयो ।

उपासकदशा की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रति-पत्तियां संख्येय हैं, वेप्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियां संख्येय हैं।

से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जाइं अक्खराइं अणंता गमा अणंता पज्जवा ।

यह अंग की अपेक्षा से सातवां अंग है । इसके एक श्रुतस्कन्ध, दस अध्ययन, दस उद्देशन-काल, दस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से संख्येय शत-सहस्र/लाख पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय हैं ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसि-ज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसि-ज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति पण्ण-विज्जंति परूविज्जति दसिज्जंति निदंसिज्जति उवदंसिज्जंति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं उवासगदसाओ ।

यह है वह उपासकदशा ।

९. से किं तं अंतगडदसाओ ?

अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नग-राइं उज्जाणाइं चेइयाइं वण-संडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-पर-लोइया इड्ढिविसेसा भोगपरि-च्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ बहु-विहाओ, खमा अज्जवं मद्दव च, सोअं य सच्चसहियं, सत्तरसविहो य संजमो, उत्तमं च बंभं, आकिं-चणया तवो चियाओ समिइ-गुत्तीओ चेव, तह अप्पमायजोगो, सज्झायज्झाणाण य उत्तमाणं दोण्हंपि लक्खणाइं ।

९. वह अन्तकृतदशा क्या है ?

अन्तकृतदशा में अन्तकृत/तद्भव मोक्षगामी जीवों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक - पारलौकिक - ऋद्धि-विशेष, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुत-परिग्रहण, तप-उपधान, बहु-विध प्रतिमाएँ, क्षमा, आर्जव, मार्दव, शौच, सत्य, सतरह प्रकार का संयम, उत्तम ब्रह्मचर्य, आकिं-चन्य, तप, त्याग, दान, समिति, गुप्ति, अप्रमादयोग तथा उत्तम स्वाध्याय और ध्यान—इन दोनों के लक्षण निरूपित हैं ।

पत्ताण य संजमुत्तमं जिय-परीसहाणं चउव्विहकम्म-क्खयम्मि जह केवलस्स लंभो, परियाओ जत्तिओ य जह पालिओ मुणिहिं, पायोवगओ य जो जहिं, जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता अंतगडो मुणिवरो तम-

इसमें उत्तम संयम प्राप्त करने पर, परीषह जीतने पर चतुर्विध कर्म-क्षय होने से जिस प्रकार कैवल्य की प्राप्ति होती है, जिस प्रकार मुनियों ने जितने पर्यायों का पालन किया, जिन्होंने प्रायोपगमन अनशन किया तथा जितने भक्तों/भोजन-

रयोघविप्पमुक्को, मोक्खसुह-मणुत्तरं च पत्ता।

समयों को छेद कर मुनिवर अन्त-कृत हुए, तम व रज से मुक्त हुए, अनुत्तर मोक्ष-सुख को प्राप्त हुए— उनका वर्णन किया गया है।

एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थारेणं परूवेई।

ये तथा इसी प्रकार के अन्य अर्थ इसमें विस्तार से प्ररूपित हैं।

अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ।

अन्तकृतदशा की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियाँ संख्येय हैं।

से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा सत्त वग्गा दस उद्देसणकाला दस संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा, अक्खरा अणंता गमा, अणंता पज्जवा।

यह अंग की अपेक्षा से आठवां अंग है। इसके एक श्रुतस्कंध, दस अध्ययन, सात वर्ग, दस उद्देशन-काल, दस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से संख्येय शत-सहस्र/लाख पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय हैं।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति, पण्ण-

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है,

विज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति ।

प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं अंतगडदसाओ ।

वह है वह अन्तकृतदशा ।

१०. से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ?

अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्डिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरोववत्ति सुकुलपच्चायाती पुणबोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

१०. अनुत्तरोपपातिकदशा क्या है ?

अनुत्तरोपपातिकदशा में अनुत्तरोपपातिकों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता-पिता, समवसरण धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक-ऋद्धि-विशेष, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुत-परिग्रहण, तप-उपधान, पर्याय, संलेखना, भक्त - प्रत्याख्यान प्रायोपगमन अनशन, अनुत्तर, विमान में जन्म, सुकुल में पुनर्जन्म, पुनः बोधिलाभ और अन्तक्रिया का आख्यान किया गया है ।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं तित्थकर समोसरणाइं परममंगलजगहियाणि जिणातिसेसा य बहुविसेसा जिणसीसाणं चेव समणगणपवरगंधहत्थीणं । थिरजसाणं परिसहसेण्ण-रिउबलपमद्दणाणं तव-दित्त-चरित्त-णाण-सम्मत्तसार-विविहप्पगार-वित्थर - पसत्थगुण - संजुयाण अणगारमहरिसीणं अणगार-

अनुत्तरोपपातिकदशा में परम मंगल और जग-हितकर तीर्थङ्कर के समवसरण जिनेश्वर के बहुविशिष्ट अतिशय तथा जिनशिष्य एवं श्रमण-गण में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के समान, स्थिर यश वाले, परीषह सैन्य रूपी रिपु-बल का प्रमर्दन करने वाले, तपोदीप्त चारित्र, ज्ञान एवं सम्यक्त्व-सार, विविध प्रकार के विस्तार वाले प्रशस्त गुणों से संयुक्त,

गुणाण वण्णओ ।

अनगार महर्षि, उत्तम, श्रेष्ठ तप वाले तथा विशिष्ट ज्ञान-योग मे युक्त हैं, उनका वर्णन किया गया है ।

उत्तमवरतव-विसिट्ठणाण-जोग-जुत्ताणं जह य जगहियं भगवओ जारिसा य रिद्धिविसेसा देवासुरमाणुसाणं परिसाणं पाउब्भावा य जिणसमीवं, जह य उवासंति जिणवरं, जह य परिकहेंति धम्मं लोगगुरू अमरनरसुरगणाणं, सोऊण य तस्स भासियं अवसेसकम्म-विसयविरत्ता नरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं संजमं तवं चावि बहुविहप्पगारं, जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहिय-नाण-दंसण - चरित्त-जोगा जिणवयणमणुगय-महिय-भासिया जिणवराण हियएण-मणुणेत्ता, जे य जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तं झाणजोगजुत्ता उववण्णा मुणिवरोत्तमा जह अणुत्तरेसु पावंति जह अणुत्तरं तत्थ विसयसोक्खं, तत्तो य चुया कमेणं काहिंति संजया जह य अंतकिरियं ।

इसमें जैसे भगवान् महावीर का शासन जगत् के लिए हितकर है, देव-असुर और मनुष्य - परिषदों के जिस प्रकार के ऋद्धि-विशेष तथा जिनेश्वर के समीप प्रादुर्भाव होता है, जिस प्रकार वे जिनवर की उपासना करते हैं, जिस प्रकार लोकगुरु देव, नर और असुरों के गणों में धर्म-प्रवचन देते हैं, जिस प्रकार भगवान् द्वारा उपदिष्ट धर्म सुनकर अवशेष कर्म वाले, विषयों से विरक्त मनुष्य अनेक प्रकार के संयम और तपरूपी उदार धर्म को स्वीकार करते हैं, जिस प्रकार वे बहुत वर्षों तक तप और संयम का अनुचरण कर ज्ञान, दर्शन, चारित्र और योग की आराधना करते हैं, अनुगत और पूजित जिन-वचन का निरूपण कर जिनवर को हृदय में स्वीकार कर जो जहां जितने भक्तों/भोजन-समयों का छेदन कर, उत्तम-समाधि पाकर, ध्यान-योग-युक्त जिस प्रकार उत्तम मुनिवर अनुत्तर विमानों में अनुत्तर विषय सुखों को प्राप्त करते हैं, वहां से च्युत होकर, क्रमशः संयत बन कर जिस प्रकार अन्त-क्रिया करते हैं—उनका आख्यान किया गया है ।

एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण ।

ये तथा इसी प्रकार से अन्य अर्थ इसमें विस्तार से हैं ।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणु-ओगदारा संखेज्जाओ पडिव-त्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जु-त्तीओ सखेज्जाओ संगहणीओ ।

अनुत्तरोपपातिक दशा की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्यु-क्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियां संख्येय हैं ।

से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे सुयक्खंधा दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखे-ज्जाणि, अक्खराणि अणंता गमा, अणंता पज्जवा ।

यह अंग की अपेक्षा से नौवां अंग है । इसके एक श्रुतस्कन्ध, दस अध्ययन, तीन वर्ग, दस उद्देशन-काल, दस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से संख्येय शत-सहस्र/लाख पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय हैं ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदं-सिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निवद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उव-दंसिज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार चरण-करण-प्ररू-पणा का इसमें आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उप-दर्शन किया गया है ।

सेत्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ।

यह है वह अनुत्तरोपपातिकदशा ।

११. से किं तं पण्हावागरणाणि ?

पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिण-सयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जति।

पण्हावागरणदसासु णं ससमय-परसमय - पण्णवय - पत्तेयबुद्ध-विविहत्थ - भासा - भासियाणं अतिसय-गुण - उवसम - णाण-प्पगार - आयरिय - भासियाणं वित्थरेणं वीरमहेसीहिं विविह-वित्थर-भासियाणं च जग-हियाणं अद्दागंगुट्ठ-बाहु-असि-मणि-खोम-आतिच्चमाइयाणं विविहमहापसिणविज्जा - मण-पसिणविज्जा-देवयपओगपहाण-गुणप्पगासियाणं सब्भूयविगुण-प्पभाव - नरगणमइ - विम्हय-कारीणं अतिसयमतीय - काल-समए दमतित्थकरुत्तमस्स ठिइकरण-कारणाणं दुरहिगम-दुरवगाहस्स सव्वसव्वण्णुसम्म-यस्स बुहजणविबोहकरस्स पच्चक्खय-पच्चय-करणं-पण्हाणं विविहगुणमहत्था जिणवरप्प-णीया आघविज्जंति।

११. वह प्रश्नव्याकरण क्या है ?

प्रश्नव्याकरण में एक सौ आठ प्रश्न, एक सौ आठ अप्रश्न, एक सौ आठ प्रश्न-अप्रश्न, विद्यातिशय तथा नाग और सुपर्ण देवों के साथ हुए दिव्य संवादों का आख्यान है।

प्रश्नव्याकरण में स्वसमय-परसमय के प्रज्ञापक प्रत्येकबुद्धों द्वारा विविध अर्थवाली भाषा में भाषित, विविध प्रकार के अतिशय, गुण और उपशम वाले आचार्यों द्वारा विस्तार से कथित तथा वीर महर्षियों द्वारा विविध विस्तार से भाषित जगत् के लिए हितकर, आदर्श, अंगुष्ठ, बाहु, असि, मणि, वस्त्र और आदित्य आदि से सम्बन्धित विविध प्रकार की महाप्रश्नविद्याओं और मनःप्रश्न-विद्याओं के देवों के प्रयोग-प्राधान्य से गुणों को प्रकाशित करने वाली सद्भूत द्विगुण प्रभाव से मनुष्य-गण की बुद्धि को विस्मित करने वाले, सुदूर अतीत काल में दमन/प्रशान्ति प्रधान उत्तम तीर्थंकर के स्थितिकरण में कारणभूत, दुर्बोध, दुरवगाह तथा बुधजन को बोध देने वाले, सर्व सर्वज्ञ-सम्मत प्रत्यक्ष प्रत्यय कराने वाली प्रश्न-विद्याओं के, जिनवर-प्रणीत विविध गुण वाले महान् अर्थों का आख्यान किया गया है।

पण्हावागरणेसु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ।

प्रश्नव्याकरण की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिप्रतियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियां संख्येय हैं।

से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुयक्खंधे पयणालीसं अज्झयणा पणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणता पज्जवा।

यह अंग की दृष्टि से दसवां अंग है। इसके एक श्रुतस्कन्ध, पैंतालीस अध्ययन, पैंतालीस उद्देशन-काल, पैंतालीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से संख्येय शत-सहस्र/लाख पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय है।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमें चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

सेत्तं पण्हावागरणाइं।

यह है वह प्रश्नव्याकरण।

१२. से किं तं विवागसुए ?

१२. वह विपाकश्रुत क्या है ?

| | |
|---|---|
| विवागसुए णं सुक्कडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जति । | विपाकश्रुत में सुकृत व दुष्कृत कर्मों के फल-विपाक का आख्यान किया गया है । |
| से समासओ दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—<br>दुहविवागे चेव, सुहविवागे चेव । तत्थ णं दह दुहविवागाणि दह सुहविवागाणि । | वह संक्षेप में दो प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—<br>दुःखविपाक और सुखविपाक । उनमें दस दुःखविपाक हैं और दस सुखविपाक । |
| से किं तं दुहविवागाणि ? | वह दुःखविपाक क्या है ? |
| दुहविवागेसु णं दुहविवागाण नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं संसारपवंधे दुहपरंराओ य आघविज्जंति । | वह दुःखविपाक में दुःखविपाक वाले जीवों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखंड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, नगर-गमन, संसार-प्रवन्ध और दुःख-परम्परा का आख्यान किया गया है । |
| सेत्तं दुहविवागाणि । | यह है वह दुःखविपाक । |
| से किं तं सुहविवागाणि ? | वह सुखविपाक क्या है ? |
| सुहविवागेसु सुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाती पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । | सुखविपाक में सुखविपाक वाले जीवों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखंड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक ऋद्धि-विशेष, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुतग्रहण, तप-उपधान, पर्याय, संलेखना, भक्त-प्रत्याख्यान, प्रायोपगमन, देवालोक-गमन, सुकुल में पुनर्जन्म, पुनः बोधिलाभ और अन्तक्रिया का आख्यान किया गया है । |

दुहविवागेसु णं पाणाइवाय-अलियवयण - चोरिक्ककरण-परदारमेहुणससंगयाए महतिव्व-कसाय - इंदियप्पमाय-पावप्पओय - असुहज्झवसाण-संचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभाग - फलविवागा णिरयगइ - तिरिक्खजोणि - बहुविहवसणसय - परंपरापबद्धाणं, मणुयत्तेवि आगयाणं जहा पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा ।

दुःखविपाक में प्राणातिपात, अलीकवचन/मृषावाद, चौर्य-करण, परदार-मैथुन, संग के द्वारा महातीव्र कषाय, इन्द्रिय प्रमाद, पाप-प्रयोग और अशुभ अध्यवसाय से संचित पापकर्मों के पाप-अनुभाग वाले फलविपाक हैं। नरक-गति और तिर्यञ्च-योनि में बहुविध सैकड़ों व्यसनों की परम्परा से प्रबद्ध जीवों के मनुष्य-जन्म में आ जाने पर भी जिस प्रकार अवशिष्ट कर्मों के फलविपाक पापक/अशुभ होते हैं—उनका आख्यान किया गया है।

वहवसणविणास- नासकण्णोट्ठंगुट्ठकरचरणनहच्छेयणजिब्भ-छेयण-अंजण-कडग्गिदाहण-गय-चलण - मलणफालणउल्लंबण-सूललया - लउडलट्ठिभंजण-तउ-सीसगतत्त - तेल्लकलकल-अभिसिंचणकुंभिपाग - कंपण - वेह-वज्झकत्तण - पतिभयकर - कर-पलीवणादि-दारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि ।

इसमें वध, वृषण-विनाश / नपुंसकता, नासिका, कान, ओष्ठ, अंगुष्ठ, हाथ, चरण और नखों का छेदन, जिह्वा-छेदन, अंजनदाह, कटाग्नि से दाहन, हाथी के पांवों से कुचलना, फाड़ना, लटकाना, शूल, लता, लकड़ी और लाठी से शरीर-भंग करना, उबलते हुए त्रपु/रांगा और गरम तेल से अभिसिञ्चन, कुंभी/भट्टी में पकाना, कंपित करना, दृढ़ता से बांधना, वेधना, वर्धकर्तन/खाल उधेड़ना, प्रतिभय पैदा करने वाली मशाल जलाना आदि अनुपम दारुण दुःखों का आख्यान किया गया है।

बहुविविहपरंपराणु - बद्धा ण मुच्चंति पावकम्मवल्लीए । अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो

बहुविध भव-परम्परानुबद्ध जीव पाप-कर्मरूपी वल्ली से मुक्त नहीं होते। वेदन किये बिना मोक्ष नहीं

तवेण धिइ-धणिय-बद्ध-कच्छेण सोहणं तस्स यावि होज्जा।

है, धृतिवल से कटिबद्ध तप द्वारा उसका शोधन भी हो सकता है।

एत्तो य सुहविवागेसु सील-संजम णिय-गुण - तवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपाऽऽसयप्प-ओगतिकाल - मइविसुद्ध - भत्त-पाणाइं पयतमणसा हिय - सुह-नीसेस-तिव्वपरिणाम-निच्छिय-मई-पयच्छिऊणं पओगसुद्धाइं जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभ।

इधर सुखविपाक में शील, संयम, नियम, तप-उपधान में निरत सुविहित साधुओं के प्रति अनुकम्पा के आशय-प्रयोग एवं त्रैकालिक मतिविशुद्धि से भक्तपान/भोजन-पानी मनोप्रयत्न, हित, सुख, निःश्रेयस्, तीव्र भाव-परिणाम एवं निश्चितमति से प्रयोगशुद्धि-पूर्वक देते है तथा जिस प्रकार भव-परिनिर्वृत्त एवं बोधिलाभ प्राप्त करते है, उनका परिकीर्तन है।

जह य परित्तीकरेंति नर-निरय तिरिय - सुरगतिगमण - विपुल-परियट्ट - अरति - भय - विसाय-सोक - मिच्छत्त - सेलसंकडं अण्णाणतमंधकार - चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं जर-मरण-जोणि-संखु-भियचक्कवालं सोलसकसाय-सावय - पयंड - चंडं - अणाइयं-अणवदग्गं संसारसागरमिणं।

इसमें नर, नारक, तिर्यञ्च और देवगति-गमन के लिए विपुल परि-वर्त वाले, अरति, भय, विषाद, शोक और मिथ्यात्वरूपी शैलों से संकुल, अज्ञानरूपी अंधकार से परिपूर्ण, अत्यधिक सुदुस्तर, जरा-मरण और योनि से संक्षुब्ध चक्रवाल वाले, सोलह कषायरूपी अत्यन्त चण्ड / भयंकर श्वापदों/खूंखार प्राणियों से युक्त अनादि-अनन्त संसार-सागर को जिस प्रकार सीमित करते हैं— उसका आख्यान है।

जह य निबंधंति आउगं सुर-गणेसु, जह य अणुभवंति सुरगणविमाण - सोक्खाणि अणोवमाणि, तओ य कालतर-च्चुआणं इहेव नरलोगमागयाणं

जिस प्रकार देवलोक के लिए वे आयुष्य का बन्ध करते है, जिस प्रकार देवगण के विमानों के अनु-पम सुखों का अनुभव करते है, वहां से कालान्तर में च्युत हो इसी

आउ-वउ-वण्ण-रूव-जाइ-कुल जम्म - आरोग्ग - बुद्धि - मेहा-विसेसा - मित्तजण - सयण-धण-धण्ण-विभव - समिद्धिसार-समुदयमिसेसा बहुविहकाम-भोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवा-गोत्तमेसु ।

मनुष्य-लोक में आकर आयु, शरीर, वर्ण, रूप, जाति, कुल, जन्म, आरोग्य, बुद्धि और मेधा विशेष, मित्रजन, स्वजन, धनधान्य, वैभव, समृद्धि, सार-समुदय-विशेष तथा बहुविध कामभोगों से उद्भूत सुखों को उत्तम शुभ विपाक वाले जीव प्राप्त करते हैं—उनका आख्यान है ।

अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाण सुभाण चेव कम्माण भासिआ बहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेगकार-णत्था ।

संवेग/वैराग्य उत्पन्न करने के लिए भगवान् जिनवर द्वारा परम्परा से अनुबद्ध एवं अनुपरत अशुभ और शुभ कर्मों के बहुविध विपाक विपाकश्रुत में भाषित हैं ।

अण्णेवि य एवमाइया, बहुविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघ-विज्जति ।

ये तथा इसी प्रकार के अन्य बहुविध अर्थ इसमें विस्तार से आख्यान किये गये हैं ।

विवागसुअस्स णं परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा संखे-ज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखे-ज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ ।

विपाकश्रुत की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रति-पत्तियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियां संख्येय हैं ।

से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसण-काला वीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पय-ग्गेणं, संखेज्जाइं अक्खराइं अणंता गमा, अणंता पज्जवा।

यह अङ्ग की अपेक्षा से ग्यारहवां अंग है । इसके बीस अध्ययन, बीस उद्देशन-काल, बीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से संख्येय शत-सहस्र/लाख पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय हैं ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिका-इया जिणपण्णत्ता भावा आघ-विज्जंति पण्णविज्जंति परू-विज्जंति दसिज्जंति निदसि-ज्जंति उवदंसिज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निवद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निद-र्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

से णं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण - करण-परूवणया आघविज्जति पण्ण-विज्जंति परूविज्जंति दंसि-ज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसि-ज्जंति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार चरण-करण-प्ररु-पणा का इसमें आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शशन किया गया है ।

सेत्तं विवागसुए ।

यह है वह विपाकश्रुत ।

१३. से किं तं दिट्ठिवाए ?

दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरू-वणया आघविज्जति। से समा-सओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—
परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगे चूलिया।

१३. वह दृष्टिवाद क्या है ?

दृष्टिवाद में सर्व भाव प्ररूपणा का आख्यान है। वह संक्षेप में पाँच प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१. परिकर्म, २. सूत्र, ३. पूर्वगत, ४. अनुयोग, ५. चूलिका।

१४. से किं तं परिकम्मे ?

परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
सिद्धसेणिया-परिकम्मे
मणुस्ससेणिया-परिकम्मे
पुट्ठसेणिया-परिकम्मे
ओगाहणसेणिया-परिकम्मे
उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे

१४. वह परिकर्म क्या है ?

परिकर्म सात प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१. सिद्धश्रेणिका परिकर्म
२. मनुष्यश्रेणिका परिकर्म
३. स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म
४. अवगाहनश्रेणिका परिकर्म
५. उपसंपादनश्रेणिका परिकर्म

विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे
चुयाचुयसेणिया-परिकम्ममे ।

६. विप्रहाणश्रेणिका परिकर्म
७. च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म

१५. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ?

सिद्धसेणिया-परिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—
माउयापयाणि, एगट्ठियपयाणि, अट्ठपयाणि, पाढो, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिवद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयपडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, सिद्धावत्तं ।

सेत्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ?

१५. वह सिद्धश्रेणिका परिकर्म क्या है ?

सिद्धश्रेणिका परिकर्म चौदह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
१. मातृकापद, २. एकार्थिकपद, ३. अर्थपद, ४. पाठ, ५. आकाशपद, ६. केतुभूत, ७. राशिवद्ध, ८. एकगुण, ९. द्विगुण, १० त्रिगुण, ११. केतुभूतप्रतिग्रह, १२. संसारप्रतिग्रह, १३. नन्द्यावर्त, १४. सिद्धावर्त ।

यह है वह सिद्धश्रेणिका परिकर्म ।

१६. से किं तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—
माउयापयाणि, एगट्ठियपयाणि, अट्ठपयाणि, पाढो, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिवद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयपडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, मणुस्सावत्तं ।

सेत्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ।

१६. मनुष्यश्रेणिका परिकर्म क्या है ?
मनुष्यश्रेणिका परिकर्म चौदह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१. मातृकापद, २. एकार्थिकपद, ३. अर्थपद, ४. पाठ, ५. आकाशपद, ६. केतुभूत, ७. राशिपद, ८. एकगुण, ९. द्विगुण, १०. त्रिगुण, ११. केतुभूतप्रतिग्रह, १२. संसार-प्रतिग्रह, १३ नन्द्यावर्त, १४. मनुष्यावर्त ।

यह है वह मनुष्यश्रेणिका परिकर्म ।

१७. से किं तं पुट्ठसेणिया-परिकम्मे ?
पुट्ठसेणिया-परिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिवद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयपडिग्गहो, संसारपडि-

१७. वह स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म क्या है ?
स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
१. पाठ, २. आकाशपद, ३. केतुभूत, ४. राशिवद्ध, ५. एकगुण, ६. द्विगुण, ७. त्रिगुण, ८. केतु-

ग्गहो, नंदावत्तं, पुट्ठावत्तं ।

भूतप्रतिग्रह, ९. संसारप्रतिग्रह, १०. नन्द्यावर्त, ११. स्पृष्टावर्त ।

सेत्तं पुट्ठसेणिया परिकम्मे ।

यह है वह स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म ।

१८. से किं तं ओगाहणसेणिया-परिकम्मे ?

ओगाहणसेणिया-परिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयपडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, ओगाहणावत्तं ।

सेत्तं ओगाहणसेणियापरिकम्मे ।

१८. वह अवगाहनश्रेणिका परिकर्म क्या है ?

अवगाहनश्रेणिका-परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

१. पाठ, २. आकाशपद, ३. केतुभूत, ४. राशिवद्ध, ५. एकगुण, ६. द्विगुण, ७. त्रिगुण, ८. केतुभूतप्रतिग्रह, १०. संसारप्रतिग्रह, ११. नन्द्यावर्त ।

यह है वह अवगाहनश्रेणिका परिकर्म ।

१९. से किं तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे ?

उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयपडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, उवसंपज्जणावत्तं ।

सेत्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ।

१९. वह उपसंपादनश्रेणिका-परिकर्म क्या है ?

उपसंपादनश्रेणिका-परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

१. पाठ, २. आकाशपद, ३. केतुभूत, ४. राशिवद्ध, ५. एकगुण, ६. द्विगुण, ७. त्रिगुण, ८. केतुभूतप्रतिग्रह, ९. संसारप्रतिग्रह १०. नन्द्यावर्त, ११. उपसंपादनावर्त ।

यह है वह उपसंपादनश्रेणिका परिकर्म ।

२०. से किं तं विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ?

विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

२०. वह विप्रहाणश्रेणिका परिकर्म क्या है ?

विप्रहाणश्रेणिका परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयपडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, विप्पजहणावत्तं ।

१. पाठ, २. आकाशपद, ३. केतुभूत, ४. राशिवद्ध, ५. एकगुण, ६. द्विगुण, ७. त्रिगुण, ८. केतुभूतप्रतिग्रह, ९. संसारप्रतिग्रह, १०. नन्द्यावर्त, ११. विप्रहाणावर्त ।

सेत्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ।

यह है वह विप्रहाणश्रेणिका परिकर्म ।

२१. से किं तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ?

२१. च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म क्या है ?

चुयाचुयसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयपडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, चुयाचुयावत्तं ।

१. पाठ २. आकाशपद ३. केतुभूत ४. राशिवद्ध ५. एकगुण ६. द्विगुण ७. त्रिगुण ८. केतुभूत-प्रतिग्रह ९. संसारप्रतिग्रह १०. नंद्यावर्त ११. च्युताच्युतावर्त ।

सेत्तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।

यह है वह च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म ।

२२. इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं छ ससमइयाणि सत्त आजीवियाणि, छ चउक्कणइयाणि सत्त तेरासियाणि । एवामेव सपुव्वावरेणं सत्त परिकम्माइं तेसीति भवंतीतिमक्खायाइं ।

२२. ये सात परिकर्म हैं—छह स्वसमय से और सातवां आजीवक मत से सम्बद्ध है। छह परिकर्म चार नय वाले हैं और सातवां तीन राशि/तीन नय वाला है। इस प्रकार कुल मिलाकर इन सात परिकर्मो के तिरासी भेद होते हैं।

सेत्तं परिकम्मे ।

यह है वह परिकर्म ।

२३. से किं तं सुत्ताइं ?

२३. वह सूत्र क्या है ?

सुत्ताइं अट्ठासीतिभवंतीतिमक्खायाइं तं जहा—

सूत्र अट्ठासी होते हैं, ऐसा आख्यात है। जैसे कि—

उज्जुगं, परिणयापरिणयं, वहुभंगियं, विजयचरियं, अणं-तरं, परंपरं, सामाणं, संजूहं, भिण्णं, आहच्चायं, सोवत्थियं, घंटं, नंदावत्तं, वहुलं, पुट्ठापुट्ठं, वियावत्तं, एवंभूयं, दुआवत्तं, वत्तमाणुप्पयं, समभिरूढं, सव्वओभद्दं, पण्णासं, दुपडि-ग्गहं।

१. ऋजुक, २. परिणतापरिणत, ३. वहुभंगिक, ४. विजयचरित, ५. अनन्तर, ६. परम्पर, ७. सत्, ८. संयूथ, ९. भिन्न, १०. यथा-त्याग, ११. सौवस्तिक घंट, १२. नन्द्यावर्त, १३. वहुल, १४. पृष्टा-पृष्ट, १५. व्यावर्त, १६. एवंभूत, १७. द्विकावर्त, १८. वर्तमानपद, १९. समभिरूढ, २०. सर्वतोभद्र, २१. पन्न्यास, २२. द्विप्रतिग्रह।

२४. इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णछेयनइयाणि ससमय-सुत्तपरिवाडीए।

२४. ये बाईस सूत्र स्व-समय-सूत्र की परिपाटी/परम्परा के अनुसार छिन्नछेदनयिक हैं।

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णछेयनइयाणि आजी-विय-सुत्तपरिवाडीए।

ये बाईस सूत्र आजीवक-सूत्र की परिपाटी के अनुसार अच्छिन्नछेद-नयिक हैं।

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं तिकनइयाणि तेरासियसुत्त-परिवाडीए।

ये बाईस सूत्र त्रैराशिक-सूत्र की परिपाटी के अनुसार त्रिक-नयिक हैं।

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं चउ-क्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवा-डीए।

ये बाईस सूत्र स्व-समय-सूत्र की परिपाटी के अनुसार चतुष्क-नयिक हैं।

एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीति सुत्ताइं भवंतीतिमक्खायाणि।

इस प्रकार कुल मिलाकर अट्ठासी सूत्र हैं।

सेत्तं सुत्ताइं।

यह है वह सूत्र।

२५. से किं तं पुव्वगए?

२५. वह पूर्वगत क्या है?

पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

पूर्वगत चौदह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

उप्पायपुव्वं, अग्गेणीयं, वीरियं, अत्थिणत्थिप्पवायं, नाणप्प-वायं, सच्चप्पवायं, आयप्पवायं, कम्मप्पवायं, पच्चक्खाणं, विज्जाणुप्पवायं, अवंझं, पाणाउं, किरियाविसालं, लोग-बिंदुसारं ।

१. उत्पादपूर्व, २. अग्रेणीय, ३. वीर्य, ४. अस्ति-नास्तिप्रवाद, ५. ज्ञानप्रवाद, ६. सत्यप्रवाद, ७. आत्मप्रवाद, ८. कर्मप्रवाद, ९. प्रत्याख्यान, १०. विद्यानुप्रवाद, ११. अवंध्य, १२. प्राणायु, १३. क्रियाविशाल, १४. लोकबिन्दुसार ।

२६. उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२६. उत्पाद-पूर्व के दस वस्तु एवं चार चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२७. अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२७. अग्रेणीय-पूर्व के चौदह वस्तु एवं बारह चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२८. वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२८. वीर्य-पूर्व के आठ वस्तु एवं आठ चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२९. अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२९. अस्ति-नास्तिप्रवाद पूर्व के अट्ठारह वस्तु एवं दस चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३०. नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ।

३०. ज्ञानप्रवाद-पूर्व के बारह वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३१. सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दो वत्थू पण्णत्ता ।

३१. सत्यप्रवाद-पूर्व के दो वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३२. आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ।

३२. आत्मप्रवाद-पूर्व के सोलह वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३३. कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ।

३३. कर्मप्रवाद-पूर्व के तीस वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३४. पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ।

३४. प्रत्याख्यान-पूर्व के बीस वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३५. विज्जाणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पनरस वत्थू पण्णत्ता ।

३५. विद्यानुप्रवाद-पूर्व के पन्द्रह वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३६. अवंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ।

३६. अवन्ध्य-पूर्व के बारह वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३७. पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ।

३७. प्राणायु-पूर्व के तेरह वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३८. किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ।

३८. क्रियाविशाल-पूर्व के तीस वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३९. लोयबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता ।
सेत्तं पुव्वगए ।

३९. लोकबिन्दुसार-पूर्व के पच्चीस वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।
यह है वह पूर्वगत ।

४०. से किं तं अणुओगे ?
अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—
मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य ।

४०. वह अनुयोग क्या है ?
अनुयोग दो प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
मूलप्रथमानुयोग और कंडिकानुयोग ।

४१. से किं तं मूलपढमाणुओगे ?
मूलपढमाणुओगे—एत्थ णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवलोगगमणाणि, आउं, चवणाणि, जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ, सीयाओ. पव्वज्जाओ, तवा य भत्ता, केवलणाणुप्पाया, तित्थपवत्तणाणि य, संघयणं, सठाणं, उच्चत्तं, आउयं, वण्णविभागो, सीसा, गणा, गणहरा य, अज्जा, पवत्तिणीओ, संघस्स चउव्विहस्स जं वावि परिमाणं,

४१. वह मूलप्रथमानुयोग क्या है ?
मूलप्रथमानुयोग में अर्हत् भगवान् के पूर्वभव, देवलोकगमन, आयुष्य, च्यवन, जन्म, अभिषेक, राज्य लक्ष्मी, शिविका, प्रव्रज्या, तप और भक्त, केवल-ज्ञानोत्पत्ति, तीर्थ-प्रवर्तन, संहनन, संस्थान, ऊँचाई, आयुष्य, उच्चत्व, आयुष्य, वर्ण-विभाग, शिष्य, गण, गणधर, आर्या, प्रवर्तिनी, चतुर्विध संघ का परिमाण, जिन, मनःपर्यव, अवधिज्ञान, सम्यक्त्व, श्रुतज्ञानी, वादी, जिन्होंने अनुत्तर गति पाई

जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी, समत्तसुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगई य जत्तिआ, जत्तिया सिद्धा, पाओवगया य जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेयइत्ता अंतगडा मुणिवरुत्तमा तम-रओघविप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तरं य पत्ता ।

है, जितने सिद्ध हुए हैं, जिन्होंने प्रायोपगमन अनशन किया है तथा जितने भक्तों/भोजन-समयों का छेदन कर जो उत्तम मुनिवर अन्तकृत / मोक्षगामी हुए हैं, तम और रज से विप्रमुक्त होकर अनुत्तर सिद्धि-पथ को प्राप्त हुए हैं उनका आख्यान है ।

एए अण्णे य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

ये तथा इस प्रकार के अन्य भावों का मूलप्रथमानुयोग में कथित आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं मूलपढमाणुओगे ।

यह है वह मूलप्रथमानुयोग ।

४२. से किं तं गंडियाणुओगे ?

गंडियाणुओगे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—

कुलगरगंडियाओ, तित्थगरगंडियाओ, गणधरगंडियाओ, चक्कवट्टिगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, चित्तंतरगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, अमर-नर-तिरिय-निरय गइ-गमण-विविह-परियट्टणाणुओगे, एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति पण्णविज्जंति

४२. वह कण्डिकानुयोग क्या है ?

कण्डिकानुयोग अनेकविध प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

कुलकरकण्डिका, तीर्थंकरकण्डिका, गणधरकण्डिका, चक्रवर्तीकण्डिका, दसारकण्डिका, बलदेवकण्डिका, वासुदेवकण्डिका, हरिवंशकण्डिका, भद्रबाहुकण्डिका, तपःकर्मकण्डिका, चित्रांतरकण्डिका, उत्सर्पिणीकण्डिका, अवसर्पिणीकण्डिका, देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नरक गति में गमन तथा विविध परिवर्तन का अनुयोग आदि कंडिकाओं का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया

परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जति ।

सेत्तं गंडियाणुओगे ?

है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

यह है वह कंडिकानुयोग ।

४३. से किं तं चूलियाओ ?

चूलियाओ—आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलियाओ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं ।

सेत्तं चूलियाओ ।

४३. वह चूलिका क्या है ?

प्रथम चार पूर्वो में चूलिकाएँ हैं, शेष पूर्वो में चूलिकाएँ नही हैं ।

यह है वह चूलिका ।

४४. दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ ।

से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयक्खंधे चोद्दस पुव्वाइं संखेज्जा वत्थू संखेज्जा चूलवत्थू संखेज्जा पाहुडा संखेज्जा पाहुडपाहुजा संखेज्जाओ पाहुडियाओ संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पणविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसि-

४४. दृष्टिवाद की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय हैं, वेष्टन संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं, संग्रहणियाँ संख्येय हैं ।

यह अंग की अपेक्षा से बारहवां अंग है । इसके एक श्रुतस्कन्ध, चौदह पूर्व, संख्येय वस्तु, संख्येय चूलिका वस्तु, संख्येय प्राभृत, संख्येय प्राभृत-प्राभृत, संख्येय प्राभृतिका, संख्येय प्राभृत-प्राभृतिका, पद-प्रमाण से संख्येय शत-सहस्र/लाख पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय है ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निवद्ध और निकाचित जिनप्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है,

ज्जंति उवदंसिज्जंति ।

प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवयणा आघविज्जति पण्ण-विज्जंति परूविज्जति दंसि-ज्जति निदंसिज्जति उवदंसि-ज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार चरण-करण-प्ररूपणा का इसमें आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं दिट्ठिवाए ।

यह है वह दृष्टिवाद ।

सेत्तं दुवालसगे गणिपिडगे ।

यह है वह द्वादशांग गणिपिटक ।

४५. इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु ।

४५. अतीत काल में अनन्त जीवों ने इस द्वादशांग गणिपिटिक की आज्ञा की विराधना कर चातुरंत संसार-कांतार में अनुपर्यटन किया ।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति ।

वर्तमान काल में परिमित जीव इस द्वादशांग गणिपिटक की आज्ञा की विराधना कर चातुरंत संसार-कांतार में अनुपर्यटन करते हैं ।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टि-स्सति ।

भविष्य काल में अनन्त जीव इस द्वादशांग गणिपिटिक की आज्ञा की विराधना कर चातुरंत संसार-कांतार में अनुपर्यटन करेंगे ।

४६. इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीते काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतार विइवइंसु ।

४६. अतीत काल में अनन्त जीवों ने इस द्वादशांग गणिपिटक की आज्ञा की आराधना कर चातुरंत संसार-कांतार को पार किया था ।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं विइवयंति।

वर्तमान काल में परिमित जीव इस द्वादशांग गणिपिटक की आज्ञा की आराधना कर चातुरंत संसार-कांतार को पार करते हैं।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं विइवइस्संति।

भविष्य काल में अनन्त जीव इस द्वादशांग गणिपिटक की आज्ञा की आराधना कर चातुरंत संसार-कांतार को पार करेंगे।

४७. दुवालसंगे णं गणिपिडगे ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवइ य, भविस्सति य— धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे।

४७. यह द्वादशांग गणिपिटक न कभी था—ऐसा नहीं है, न कभी है—ऐसा नहीं है, न कभी होगा—ऐसा भी नहीं है। वह था, है और होगा—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य।

४८. से जहाणामए पंच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्संति। भुविं च, भवइ य, भविस्संति य। धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा।

एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य। धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे।

४८. जैसे पांच अस्तिकाय कभी नहीं थे—ऐसा नहीं है, कभी नहीं है—ऐसा नहीं है, कभी नहीं होंगे—ऐसा भी नहीं है। वे थे, हैं और होंगे—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य।

इसी प्रकार द्वादशांग गणिपिटक कभी नहीं था—ऐसा नहीं है, कभी नहीं है—ऐसा नहीं है, कभी नहीं होगा—ऐसा भी नहीं है। वह था, है और होगा—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य।

४९. एत्थ णं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा

४९. इस द्वादशांग गणिपिटक में अनन्त भावों, अनन्त अभावों, अनन्त

अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभव-सिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा आघविज्जंति पण्ण-विज्जंति परूविज्जंति दंसि-ज्जति निदंसिज्जंति उव-दंसिज्जंति ।

हेतुओं, अनन्त अहेतुओं, अनन्त कारणों, अनन्त अकारणों, अनन्त जीवों, अनन्त अजीवों, अन्नत भव-सिद्धिकों, अनन्त अभवसिद्धिकों, अनन्त सिद्धों, अनन्त असिद्धों का आख्यान गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

## पण्णइ-समवाय

१. दुवे रासी पण्णत्ता, तं जहा—
जीवरासी अजीवरासी य।

२. जीवरासी दुविहा पण्णत्ता। तं जहा—
संसारसमावन्नगा य असंसार-समावन्नगा य।

३. अजीवरासी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—
रुविअजीवरासी अरूविअजीव-रासि य।

४. से किं तं अरूविअजीवरासी?
अरुविअजीवरासी दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

१. धम्मत्थिकाए,
२. धम्मत्थिकायस्स देसे,
३. धम्मत्थिकायस्स पदेसा,
४. अधम्मत्थिकाए,
५. अधम्मत्थिकायस्स देसे,
६. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा,
७. आगासत्थिकाए,
८. आगासत्थिकायस्स देसे,
९. आगासत्थिकायस्स पदेसा,
१०. अद्धासमए।

५. से किं तं अणुत्तरोववाइआ?

## प्रकीर्ण-समवाय

१. राशि दो प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
जीव राशि और अजीव राशि।

२. जीव-राशि द्विविध प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
संसार-समापन्नक/सांसारिक जीव और असंसार-समापन्नक / मुक्त जीव।

३. अजीव-राशि द्विविध प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
रूपी-अजीव-राशि और अरूपी-अजीव-राशि।

४. वह अरूपी अजीव-राशि क्या है?
अरूपी अजीव-राशि दस प्रकार की प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

१. धर्मास्तिकाय,
२. धर्मास्तिकाय-देश,
३. धर्मास्तिकाय-प्रदेश,
४. अधर्मास्तिकाय,
५. अधर्मास्तिकाय-देश,
६. अधर्मास्तिकाय-प्रदेश,
७. आकाशास्तिकाय,
८. आकाशास्तिकाय-देश,
९. आकाशास्तिकाय-प्रदेश,
१०. अध्वा समय।

५. अनुत्तरोपपातिक देव कितने है?

अणुत्तरोववाइआ पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—

विजय - वेजयंत - जयंत - अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धिया ।

सेत्तं अणुत्तरोववाइआ ।

सेत्तं पंचिंदियसंसारसमावण्ण-जीवरासी ।

अनुत्तरोपपातिक देवों के पांच प्रकार प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—

विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धिक ।

ये अनुत्तरोपपातिक देव हैं ।

यह पंचेन्द्रिय-संसार-समापन्न-जीव-राशि है ।

६. दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—

पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ।

एवं दंडओ भणियव्वो जाव वेमाणियत्ति ।

६. नैरयिक दो प्रकार के प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—

पर्याप्त और अपर्याप्त ।

इसी प्रकार वैमानिक तक के दण्डकों के लिए यही पतिपाद्य है ।

७. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए केवइयं ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता ।

गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए असीउत्तरजोयण-सयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं रयणप्पहाए पुढवीए णेरइयाणं तीसं णिरयावाससय-सहस्सा भवंतीति मक्खायं ।

७. इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नरक और कितना अवगाहन प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के एक शत-सहस्र/लाख अस्सी हजार योजन प्रमाण बाहल्य से ऊपर एक हजार योजन का अवगाहन कर एवं नीचे से एक हजार योजन का वर्जन कर, मध्य के एक शत-सहस्र/लाख अठत्तर हजार योजन प्रमाण रत्नप्रभा पृथ्वी में नैरयिकों के तीस शत-सहस्र/लाख नरकावास होते हैं, ऐसा व्याख्यात करता हूँ ।

ते णं णरया अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्प-संठाण-संठिया णिच्चंधयारतमसा-ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइस-

वे नरक अन्तर् में वृत्त, बाहर में चतुरस्र / चतुष्कोण और नीचे क्षुरप्र-संस्थानों से संस्थित, अन्धकार से नित्य तमोमय, ग्रह, चन्द्र,

| | |
|---|---|
| पहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंस-चिक्खिल्ललित्ताणु - लेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणि-वण्णाभा कक्खड-फासा दुरहियासा असुहा णिरया असुहाओ णरएसु वेयणाओ। | सूर्य, नक्षत्र और ज्योतिष् की प्रभा से शून्य, मेद, चर्वी, मवाद, रुधिर और मांस के कीचड़ से अनुलिप्त तल वाले, अशुचि, विष्टा-युक्त, अत्यन्त दुर्गन्ध वाले, कापोत-अग्निवर्ण की आभा वाले, कर्कश-स्पर्श वाले और अत्यधिक असह्य हैं। वे नरक अशुभ हैं और उन नरकों में अशुभ वेदनाएँ हैं। |
| ८. एवं सत्तवि भणियव्वाओ जं जासु जुज्जइ। | ८ इसी प्रकार सातों नरकों के बारे में जहां जो उपयुक्त हो, कहना चाहिए। |
| आसीयं बत्तीसं,<br>अट्ठावीसं तहेव वीसं च।<br>अट्ठारस सोलसगं,<br>अट्ठुत्तरमेव बाहल्लं॥ | [सप्त] नरकावासों का बाहल्य क्रमशः [एक लाख] अस्सी [हजार], [एक लाख] बत्तीस [हजार], [एक लाख] अट्ठाईस [हजार], [एक लाख] बीस [हजार], [एक लाख] अठारह [हजार], [एक लाख] सोलह [हजार] और [एक लाख] आठ [हजार योजन है]। |
| तीसा य पण्णवीसा,<br>पण्णरस दसेव सयसहस्साइं।<br>तिण्णेगं पंचूणं,<br>पंचेव अणुत्तरा णरगा॥ | [नरकावासों की संख्या क्रमशः इस प्रकार है—]<br>तीस शत-सहस्र/लाख, पच्चीस शत-सहस्र/लाख, पन्द्रह शत-सहस्र/लाख, दस शत-सहस्र/लाख, तीन शत-सहस्र/लाख, निन्यानवे हजार नौ सौ पंचानवे और पांच अनुत्तर नरकावास। |
| ९. सत्तमाए णं पुढवीए केवइयं ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता? | ९. सातवीं पृथ्वी में कितने नरक और कितना अवगाहन प्रज्ञप्त है? |

गोयमा ! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं वज्जेता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु, एत्थ णं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंच अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया पण्णत्ता, तं जहा—

गौतम ! सातवीं पृथ्वी के शत-सहस्र/एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण वाहल्य से ऊपर साढ़े वावन हजार योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से साढ़े वावन हजार योजन का वर्जन कर तथा मध्य के तीन हजार योजन में सातवीं पृथ्वी के नैरयिकों के अनुत्तर तथा बहुत विशाल पांच महानरकावास हैं। जैसे कि—

काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे नामं पंचमए।

काल, महाकाल, रौरव, महारौरव और अप्रतिष्ठान।

ते णं नरया वट्टे य तंसा य अहे खुरप्प-संठाण-संठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंदसूर-णक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंस-चिक्खल्ल-लित्ताणु-लेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणि-वण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुहा नरगा असुहाओ नरएसु वेयणाओ।

वे नरक वृत्त, त्रिकोण एवं नीचे क्षुरप्र-संस्थानों से संस्थित हैं। वे अन्धकार से नित्य तमोमय, ग्रह, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र और ज्योतिष् की प्रभा से शून्य, मेद, चर्वी, मवाद, रुधिर मांस के कीचड़ से अनुलिप्त तल वाले, अशुचि, विप्टा-युक्त, अत्यन्त दुर्गन्ध वाले, कापोत अग्निवर्ण की आभा वाले, कर्कश-स्पर्श वाले और अत्यधिक असह्य हैं। वे नरक अशुभ हैं और उन नरकों में अशुभ वेदनाएँ हैं।

१०. केवइया णं भंते ! असुरकुमारावासा पण्णत्ता ?

१०. भंते ! असुरकुमारों के आवास कितने प्रज्ञप्त हैं ?

गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के एक शत-सहस्र/लाख अस्सी हजार योजन प्रमाण वाहल्य से ऊपर एक हजार योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से एक हजार योजन

अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं रयणप्पहाए पुढवीए चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

का वर्जन कर मध्य के एक शत-सहस्र/लाख अठत्तर हजार योजन रत्नप्रभा पृथ्वी में असुर-कुमारों के चौसठ शत-सहस्र/लाख आवास हैं ।

ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पोक्खर-कण्णिया-संठाण-संठिया उक्किण्णंतर-विपुल-गंभीर-खात-फलिया अट्टालय-चरिय-दारगोउर-कवाड-तोरण-पडिदुवार-देस-भागा जंतमुसल-मुसुंढि-सतग्घि-परिवारिया अउज्झा अडयाल-कोट्ठय-रइया अडयाल-कय-वणमाला लाउल्लोइय-महिमा गोसीस-सरसरत्तचंदण-दद्दर-दिण्णपंचंगुलितला कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-डज्झंत-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामा सुगंधि-वरगंध-गंधिया गंधवट्टि-भूया अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पहा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिस-णिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

वे भवन बाहर से वृत्त, भीतर से चतुरस्र/चतुष्कोण, नीचे से पुष्कर-कर्णिका संस्थानों से संस्थित हैं । वे खोद कर बनाई हुई विपुल और गम्भीर खाई तथा परिखा-युक्त, देश-भाग में अट्टालक, चरिका, गोपुर-द्वार, कपाट, तोरण और प्रतिद्वार वाले, यंत्र, मुशल, मुसुंढी और शतघ्नी से परिपाटित, अयोध्य / अपराजित, अड़तालीस कोठों से रचित, अड़तालीस प्रकार की वनमालाओं से युक्त, रंग-उपलेपित, गोशीर्ष और सरस-रक्तचन्दन के पांच अंगुली-युक्त हस्ततल के सघन छापे लगे हुए, कालागुरु, प्रवर कुन्दुरुष्क (धूप) तथा तुरुष्क (दशांग धूप) के जलने से निकले हुए धुंए के महकते गन्ध से अभिराम, सुगन्धो चूर्णो से सुगन्धित गन्धगुटिका जैसे, स्वच्छ, चिकने, घुटे हुए, घिसे हुए, प्रमार्जित, नीरज, निर्मल, तिमिर-रहित, विशुद्ध, प्रभासहित, मरिचि-युक्त, उद्योतयुक्त, आनन्द-कर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रति-रूप हैं ।

११. एवं जस्स जं कमए तं तस्स,

११. इसी प्रकार जिसके बारे में जहां

जं जं गाहाहिं भणियं तह चेव वण्णओ—

जो कथ्य हो, उनका वहां-वहां गाथाओं से कहना चाहिए और उनका वैसा ही वर्णन करना चाहिए।

चउसट्ठी असुराणं,
चउरासीइं च होइ नागाणं।
बावत्तरिं सुवन्नाणं,
वायुकुमाराण छण्णउतिं॥

असुरकुमारों के चौसठ [लाख], नागकुमारों के चौरासी [लाख], सूपर्णकुमारों के बहत्तर [लाख] और वायुकुमार के छानवे [लाख] आवास हैं।

दीवदिसाउदहीणं,
विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं।
छण्हंपि जुवलयाणं,
छावत्तरिमो सयसहस्सा॥

दीप, दिशा, उदधि, विद्युत, स्तनित और अग्नि—इन छह युगलों के छिहत्तर-छिहत्तर शत-सहस्र/लाख आवास हैं।

१२. केवइया णं भंते! पुढवी-काइयावासा पण्णत्ता?
गोयमा! असंखेज्जा पुढवी-काइया वासा पण्णत्ता।

१२. भंते! पृथ्वीकाय के आवास कितने प्रज्ञप्त हैं?
गौतम! पृथ्वीकाय के आवास असंख्य प्रज्ञप्त हैं।

१३. एवं जाव मणुस्सत्ति।

१३. इसी प्रकार मनुष्य तक के आवास प्रज्ञप्त हैं?

१४. केवइया णं भंते! वाणमंतरा-वासा पण्णत्ता?
गोयमा! इमीसे णं रयणप्प-हाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं ओगा-हेत्ता हेट्ठा चेगं जोयण-सयं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणएसु, एत्थ णं वाण-मंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा

१४. भंते! वानमन्तर देवों के आवास कितने प्रज्ञप्त हैं?
गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नमय काण्ड के एक हजार योजन प्रमाण बाहल्य (मोटाई) से ऊपर एक सौ योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से सौ योजन का वर्जन कर मध्य के शेष आठ सौ योजन में वानमंतर देवों के असंख्य शत-सहस्र/लाख तिरछे भौमेय नगरा-

भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

वास प्रज्ञप्त हैं ।

ते णं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा, एवं जहा भवणवासीणं तहेव नेयव्वा, नवरं—पडागमालाउला सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

वे भौमेय नगर बाहर से वृत्त, भीतर से चतुरस्र/चतुष्कोण और जैसा भवनवासियों का है, वैसा ही ज्ञातव्य है । वे पताका की माला से आकुल, सुरम्य, प्रासादीय/आनन्दकर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप हैं ।

१५. केवइया णं भंते ! जोइसियाणं विमाणावासा पण्णत्ता ?

गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं दसुत्तरजोयणसयबाहल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा पण्णत्ता ।

१५. भंते ! ज्योतिष्क देवों के विमानावास कितने प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसम रमणीय भूमिभाग से सात सौ नब्बे योजन ऊपर जाने पर वहां एक सौ दस योजन के बाहल्य में तिरछे ज्योतिष्क क्षेत्र में ज्योतिष्क देवों के असंख्य ज्योतिष्क विमानावास प्रज्ञप्त हैं ।

ते णं जोइसियविमाणावासा अब्भुग्गयमूसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजय-वेजयंती-पडाग-छत्तातिछत्तकलिया, तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलितव्व मणि-कणगथूभियागा विगसिय-सयपत्त-पुंडरीय - तिलय - रयणड्ढचंदचित्ता अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्ज-वालुगा-पत्थडा सुहफासा

वे ज्योतिष्क विमानावास अभ्युद्गत, निःसृत, प्रभासित विविध मणि और रत्नों के भीत्तिचित्रों वाले, वातप्रकम्पित विजय-वैजयन्ती पताका तथा छत्रातिछत्रों से शोभित और उत्तुंग हैं । गगनतल स्पर्शी शिखर वाले, खिड़कियों के अन्तराल में, पिंजरे से निकाल कर रखी हुई वस्तु की भांति, मणि और स्वर्ण की स्तूपिका वाले, विकसित शतपत्र पुंडरीक

सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

कमल, तिलक और रत्नमय अर्द्धचन्द्रों से चित्रित, अन्तर और बाहर से कोमल, स्वर्णमय वालुकाओं के प्रस्तट वाले, सुखस्पर्श वाले, सुन्दर रूप वाले, प्रासादीय/आनन्दकर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप हैं ।

१६. केवइया णं भंते ! वेमाणियावासा पण्णत्ता ?

गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं वीइवइत्ता बहूणि जोयणाणि बहूणि जोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणि जोयणसयसहस्साणि बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता, एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-सुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय आरणच्चुएसु गेवेज्जमणुत्तरेसु य चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीतिमक्खाया ।

१६. भंते ! वैमानिक देवों के आवास कितने प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहु समतल भूमिभाग से ऊपर चन्द्र, सूर्य, ग्रहगण, नक्षत्र और तारारूपों का उल्लंघन कर अनेक योजन, अनेक सौ योजन, अनेक लाख योजन, अनेक कोटि योजन, अनेक कोटा-कोटि योजन ऊपर दूर जाने पर वैमानिक देवों के सौधर्म ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत और अच्युत देवलोक के तथा नौ ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमानों के चौरासी लाख सतानवे हजार तेईस विमान हैं, ऐसा आख्यात है ।

ते णं विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा

ये अर्चिमालि/सूर्य प्रभा वाले, प्रकाशपुंज आभा वाले, अरज, नीरज, निर्मल, तिमिर-रहित,

विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

विशुद्ध, सर्वरत्नमय, स्वच्छ, चिकने, घुटे हुये, घिसे हुए, प्रमार्जित, निष्पङ्क, निष्कंटक छाया वाले, प्रभा-सहित, मरीचि-युक्त, उद्योतयुक्त, प्रासादीय/आनन्दकर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप हैं ।

१७. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावासा पण्णत्ता ?

गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

१७. भंते ! सौधर्म-देवलोक में कितने विमानावास प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! बत्तीस शत-सहस्र/लाख विमानावास प्रज्ञप्त हैं ।

१८. एवं ईसाणाइसु अट्ठावीसं बारस अट्ठ चत्तारि—एयाइं सयसहस्साइं, पण्णासं चत्तालीसं छ—एयाइं सहस्साइं, आणए पाणए चत्तारि, आरणच्चुए तिण्णि—एयाणि सयाणि ।

एवं गाहाहिं भणियव्वं—

बत्तीसट्ठावीसा,
बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ।
पण्णा चत्तालीसा,
छच्चसहस्सा सहस्सारे ॥

आणयपाणयकप्पे,
चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि ।
सत्त विमाणसयाइं,
चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥

एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु,
सत्तुत्तरं च मज्झिमए ।

१८. इसी प्रकार ईशान-देवलोक आदि में क्रमश: अट्ठाईस शत-सहस्र/लाख, बारह शत-सहस्र/लाख, आठ शत-सहस्र/लाख, चार शत-सहस्र/लाख, पचास हजार, चालीस हजार, छह हजार, आनत और प्राणत में चार सौ, आरण और अच्युत में तीन सौ [विमानावास] हैं ।

इसी प्रकार गाथाओं में कहा गया है—

१. बत्तीस लाख, २. अट्ठाईस लाख, ३. बारह लाख, ४. आठ लाख, ५. चार लाख, ६. पचास हजार, ७. चालीस हजार, ८. छह हजार, ९-१०. चार सौ, ११-१२. तीन सौ ।

[९-१२]—इन चार कल्पों में सात सौ विमान हैं ।

अधस्तन [ग्रैवेयकों] में नौ सौ

सयमेगं उवरिमए,
पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥

निन्यान्वे, मध्यम में एक सौ सात, उपरीतन में सौ विमानावास हैं। अनुत्तर देवलोक के पांच विमानावास हैं।

१९. नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१९. भंते ! नैरयिकों की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत: दस हजार वर्ष और उत्कृष्टत: तैंतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

२०. अपज्जत्तगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं।

२०. भंते ! अपर्याप्तक नैरयिकों की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत: अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्टत: भी अन्तर्मुहूर्त है।

२१. पज्जत्तगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं।

२१. भंते ! पर्याप्तक नैरयिकों की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत: दस हजार वर्ष में अन्तर्मुहूर्त्त न्यून और उत्कृष्टत: तैंतीस सागरोपम में अन्तर्मुहूर्त्त न्यून।

२२. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए, एवं जाव विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं।

२२. भन्ते ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की यावत् विजय, वैजयन्त, जयंत, और अपराजित देवों की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत: बत्तीस सागरोपम और उत्कृष्टत: तैंतीस सागरोपम।

२३. सव्वट्ठे जहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

२३. सर्वार्थसिद्ध की जघन्यतः और उत्कृष्टतः तैंतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२४. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—
ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए ।

२४. भंते ! शरीर कितने प्रज्ञप्त हैं ?
गौतम ! शरीर पांच प्रज्ञप्त हैं—जैसे कि—
औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मक ।

२५. ओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—
एगिंदियओरालियसरीरे जाव गब्भवक्कंतियमणुस्स-पंचिंदिय-ओरालियसरीरे य ।

२५. भंते ! औदारिक शरीर कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?
गौतम ! पांच प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
एकेन्द्रिय-औदारिकशरीर यावत् गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य - पञ्चेन्द्रिय औदारिक-शरीर ।

२६. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं ।

२६. भंते ! औदारिक शरीर की शरीर-अवगाहना कितनी बड़ी प्रज्ञप्त है ?
गौतम ! जघन्यतः अंगुल का असंख्यातवां भाग और उत्कृष्टतः हजार योजन से कुछ अधिक ।

२७. एवं जहा ओगाहणासंठाणे ओरालियपमाण तहा निरवसेसं । एवं जाव मणुस्सेत्ति उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ।

२७. इस प्रकार जैसे 'अवगाहना संस्थान' में औदारिक प्रमाण कहा गया है, वैसा ही निरवशेष/अन्यत्र ज्ञातव्य है । इस प्रकार यावत् मनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना तीन गाउ की है ।

२८. कइविहे णं भंते ! वेउव्विय-सरीरे पण्णत्ते ?

२८. भंते ! वैक्रिय-शरीर कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—एगिंदिय-वेउव्वियसरीरे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरे य।

गौतम ! दो प्रकार का प्रज्ञप्त है—एकेन्द्रिय-वैक्रिय-शरीर और पञ्चेन्द्रिय-वैक्रिय-शरीर।

२६. एवं जाव सणंकुमारे आढत्तं जाव अणुत्तरा भवधारणिज्जा तेसिं रयणी रयणी परिहायइ।

२६. इस प्रकार सनत्कुमार कल्प से लेकर अनुत्तर विमानों तक भवधारणीय शरीर हैं, जिनकी अवगाहना एक-एक रत्नि कम होती है।

३०. आहारयसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

३०. भंते ! आहारक शरीर कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते।

गौतम ! एक आकार वाला प्रज्ञप्त है।

जइ एगागारे पण्णत्ते, किं मणुस्सआहारयसरीरे ? अमणुस्सआहारयसरीरे ?

[भंते ! ] यदि एक आकार वाला प्रज्ञप्त है, तो क्या वह मनुष्य-आहारक-शरीर है या अमनुष्य-आहारक-शरीर ?

गोयमा ! मणुस्सआहारयसरीरे, णो अमणुस्सआहारगसरीरे।

गौतम ! वह मनुष्य-आहारक-शरीर है, अमनुष्य-आहारक-शरीर नहीं।

जइ मणुस्सआहारयसरीरे, किं गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे ? संमुच्छिमममणुस्सआहारगसरीरे ?

[भंते ! ] यदि मनुष्य-आहारक-शरीर है, तो क्या वह गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है या सम्मूच्छिम-मनुष्य-आहारक-शरीर है ?

गोयमा ! गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे नो संमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे।

गौतम ! वह गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है, सम्मूच्छिम-मनुष्य-आहारक शरीर नहीं।

जइ गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे, किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे? अकम्मभूमग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे ?

[भंते !] यदि गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है या अकर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर ?

गोयमा ! कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे, नो अकम्मभूमग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे ।

गौतम ! वह कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है, अकर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर नहीं ।

जइ कम्मभूमग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्सआहारयसरीरे, किं संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे? असंखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे ?

[भंते !] यदि कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है या असंख्येय-वर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक-शरीर ?

गोयमा! संखेज्जवासाउयकम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे, नो असंखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

गौतम ! वह संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारक-शरीर है, असंख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर नहीं ।

जइ संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे, किं पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे? अपज्जत्त य- संखेज्जावासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे ?

[भंते !] यदि संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह पर्याप्तक - संख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है या अपर्याप्तक-संख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य - आहारकशरीर है ?

गोयमा! पज्जत्तयसंखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे, नो अपज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्स आहारयसरीरे ?

गौतम ! यह पर्याप्तक-संख्येयवर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है, अपर्याप्तक-संख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारक शरीर नहीं है ।

जइ पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतिय-मणुस्स आहारयसरीरे, किं सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स आहारयसरीरे ? मिच्छदिट्ठि- पज्जत्तय - संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे ? सम्मामिच्छदिट्ठि - पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारय-सरीरे ?

[भंते ! ] यदि पर्याप्तक-संख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह सम्यग्दृष्टि-पर्याप्तक-संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिकमनुष्य-आहारक-शरीर है या मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक-संख्येय-वर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य - आहारक-शरीर है या सम्यक् मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक-संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य - आहारक - शरीर है ?

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स आहारय-सरीरे, नो सम्म - मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय-मणुस्स-आहारय-सरीरे !

गौतम ! वह सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य - आहारक-शरीर है. मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक-संख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिकमनुष्य - आहारक - शरीर नहीं है तथा सम्यक्मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क - कर्म-भूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारक-शरीर नहीं है ।

जइ सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखे-ज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भ-

[भंते ! ] यदि सम्यग्दृष्टि-पर्याप्तक-संख्येयवर्षायुष्क - कर्मभूमिज-

वक्कंतियमणुस्स - आहारय-सरीरे, किं संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतिय-मणुस्स - आहारयसरीरे ? असंजय - सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारय-सरीरे? संजयासंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जयत्त - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतिय-मणुस्स आहारयसरीरे ?

गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य - आहारक-शरीर है तो क्या वह संयत-सम्यक्-दृष्टि - पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है या असंयत-सम्यक्दृष्टि - पर्याप्तक-संख्येयवर्षा-युष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है या संयता-संयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-संख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोप-क्रान्तिक - मनुष्य - आहारकशरीर है ?

गोयमा ! संजय - सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणु-स्स-आहारयसरीरे, नो असंजय-द्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्जवासा-उय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे, नो संजयासंजय - सम्मद्दिट्ठि - पज्ज-त्तय - संखेज्जवासाउय - कम्म-भूमग - गब्भवक्कंतिय - मणुस्स-आहारयसरीरे ।

गौतम ! वह संयत-सम्यक्दृष्टि पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क - कर्म-भूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है, असंयत-सम्यग्-दृष्टि-पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर नहीं है तथा संयतासंयत-सम्यक्दृष्टि - पर्याप्तक-संख्येयवर्षायुष्क कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य - आहारक-शरीर भी नहीं है ।

जइ संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारय-सरीरे, किं पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कं-तियमणुस्स - आहारयसरीरे ? अपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्ज-त्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग

[भंते ! ] यदि संयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क - कर्म-भूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह प्रमत्तसंयत्त-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-संख्येयवर्षायुष्क - कर्मभूमिज-गर्भो-पक्रान्तिकमनुष्य-आहारकशरीर है या अप्रमत्तसंयत-सम्यक्दृष्टि-पर्या-प्तक-संख्येयवर्षायुष्क - कर्मभूमिज-

गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारय-सरीरे ?

गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारशरीर है ?

गोयमा ! पत्तमसंजय - सम्म-द्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय कम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणु-स्स-आहारयसरीरे, नो अपमत्त-संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखे-ज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भ-वक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे।

गौतम ! वह प्रमत्तसंयत-सम्यक्-दृष्टि - पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है, अप्रमत्तसंयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-संख्येयवर्षा-युष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर नहीं ।

जइ पमत्तसंजय - सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय-कम्म-भूमग - गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे, किं इड्ढिपत्त-पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारय-सरीरे ?

[भंते ! ] यदि प्रमत्तसंयत-सम्यक्-दृष्टि - पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह ऋद्धिप्राप्त-प्रमत्तसंयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क - कर्म-भूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है या अऋद्धिप्राप्त-प्रमत्त-संयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोप-क्रान्तिक-मनुष्य - आहारकशरीर है ?

गोयमा ! इड्ढिपत्त-पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्ज-वासाउय - कम्मभूमग - गब्भ-वक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे, नो अणिड्ढिपत्त - पमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्ज-वासाउय - कम्मभूमग - गब्भ-वक्कंतियमणुस्स - आहारय-सरीरे ।

गौतम ! वह ऋद्धिप्राप्त-प्रमत्त-संयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-संख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोप-क्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है, अऋद्धिप्राप्त - प्रमत्तसंयत - सम्यक्-दृष्टि - पर्याप्तक - संख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर नहीं ।

३१. आहारयसरीरे णं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ?

गोयमा ! समचउरंस-संठाण-संठिए पण्णत्ते।

३१. भंते ! आहारक-शरीर किस संस्थान से संस्थित प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! सम-चतुरस्र/चतुष्कोण संस्थान से संस्थित प्रज्ञप्त है।

३२. आहारयसरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं देसूणा रयणी उक्कोसेणं पडिपुण्णा रयणी।

३२. भंते ! आहारक-शरीर के शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यतः कुछ न्यून एक रत्नि (हाथ) और उत्कृष्टतः परिपूर्ण रत्नि।

३३. तेयासरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते—एगिंदियतेयासरीरे य बेंदियतेयासरीरे य तेंदियतेयासरीरे य चउरिंदियतेयासरीरे य पंचेंदियतेयासरीरे य।

३३. भंते ! तैजस-शरीर कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! पांच प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—

१. एकेन्द्रिय तैजस-शरीर, २. द्वीन्द्रिय तैजस-शरीर, ३. त्रीन्द्रिय तैजस-शरीर, ४. चतुरिन्द्रिय तैजस-शरीर, ५. पञ्चेन्द्रिय तैजस-शरीर।

३४. गेवेज्जस्स णं भंते ! देवस्स मारणंतिय-समुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ती विक्खंभ-बाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अहे जाव विज्जाहर-सेढीओ, उक्कोसेणं अहे जाव अहोलोइया गामा, तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं, उड्ढं जाव सयाइं सयाइं विमाणाइं।

३४. भंते ! ग्रैवेयक देव के मारणान्तिक समुद्घात से समवहत तैजस-शरीर की शरीर-अवगाहना कितनी बड़ी प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! विष्कम्भ-बाहल्य/चौड़ाई-मोटाई में शरीर-प्रमाण-मात्र, आयाम/लम्बाई में नीचे जघन्यतः विद्याधर-श्रेणी तक और उत्कृष्टतः अधोलौकिक गाँवों तक, तिरछे में मनुष्य-क्षेत्र तक और अपने-अपने विमान की पताका तक होती है।

३५. एवं अणुत्तरोववाइया वि ।

३६. एवं कम्मयसरीरं पि भणियव्वं ।

३७. कइविहे णं भंते ! ओही पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—
भवपच्चइए य खओवसमिए य ।
एवं सव्वं ओहिपदं भणियव्वं ।

भेदे विसय संठाणे,
अब्भंतर बाहिरे य देसोही ।
ओहिस्स वड्ढि-हाणी,
पडिवाती चेव अपडिवाती ।।

३८. नरइया णं भंते ! किं सीतवेयणं वेदंति ? उसिणवेयणं वेदंति ? सीतोसिणवेयणं वेदंति ?

गोयमा ! नेरइया सीतं वि वेदणं वेदेंति, उसिणं पि वेदणं वेदेंति, णो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति । एवं चेव वेयणापदं भणियव्वं ।

सीता य दव्व सारीरी,
साय तह वेयणा भवे दुक्खा ।
अब्भुवगमुवक्कमिया,
णिदाए चेव अणिदाए ।।

३५. इसी प्रकार अनुत्तरोपपातिक देवों की भी है ।

३६. इसी प्रकार कार्मण-शरीर भी ज्ञातव्य है ।

३७. भंते ! अवधिज्ञान कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! दो प्रकार का प्रज्ञप्त है—
भवप्रत्ययिक और क्षायोपशमिक ।
इस प्रकार सम्पूर्ण अवधि-पद ज्ञातव्य है ।

[अवधिज्ञान के द्वार—]
भेद, विषय, संस्थान, आभ्यन्तर, बाह्य, देश, सर्व, वृद्धि, हानि, प्रतिपाती और अप्रतिपाती ।

३८. भंते ! नैरयिक क्या शीत वेदना का वेदन करते हैं ? क्या उष्ण वेदना का वेदन करते हैं ? क्या शीतोष्ण वेदना का वेदना करते हैं ?

गौतम ! नैरयिक शीत वेदना का भी वेदन करते हैं, उष्ण वेदना का भी वेदन करते हैं, उष्ण वेदना का भी वेदन करते हैं, किन्तु शीतोष्ण वेदना का वेदन नहीं करते । इस प्रकार सम्पूर्ण वेदना-पद ज्ञातव्य है ।

[वेदना के द्वार—]
शीत, उष्ण, द्रव्य, शारीरिकी, साता, असाता, वेदना, दुःख, आभ्युपगमिकी और अनिदा वेदना ।

३९. कइ णं भंते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा।
एवं लेसापयं भणियव्वं।

३९. भंते ! लेश्याएँ कितनी प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! लेश्याएँ छह प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तैजस्लेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या। इस प्रकार लेश्या-पद ज्ञातव्य है।

४०. नेरइया णं भंते ! अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया ?

हंता गोयमा ! नेरइया णं अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया। एवं आहारपदं भणियव्वं।

अणंतरा य आहारे,
आहाराभोगणाऽवि य।
पोग्गला नेव जाणंति,
अज्झवसाणा य सम्मत्ते॥

४०. भंते ! क्या नैरयिक अनन्तर आहार करते है तदन्तर निर्वर्तन, पर्यादान, परिणमन, परिचारण, और विक्रिया करते हैं ?

हाँ, गौतम ! नैरयिक अनन्तर आहार, तदनन्तर निर्वर्तन, पर्यादान, परिणमन, परिचारण और विक्रिया करते हैं।
इस प्रकार आहार-पद ज्ञातव्य है।

[आहार के द्वार—]
अनन्तर आहार, आभोग आहार, अनाभोग आहार, पुद्गलों को नहीं जानना, अध्यवसान और सम्यक्त्व।

४१. कइविहे णं भंते ! आउगबंधे पण्णत्ते ?

गोयमा ! छव्विहे आउगबंधे पण्णत्ते, तं जहा—
जाइनामनिधत्ताउके गतिनामनिधत्ताउके ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिंधत्ताउके अणुभाग-

४१. भंते ! आयुष्क-बंध कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! आयुष्क-बंध छह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१. जातिनामनिधत्त/व्याप्त आयुष्क २. गतिनामनिधत्त आयुष्क, ३. स्थितिनामनिधत्त आयुष्क, ४.

नामनिधत्ताउके ओगाहणा-नामनिधत्ताउके ।

प्रदेशनामनिधत्त-आयुष्क, ५. अनु-भागनामनिधत्त-आयुष्क, ६. अव-गाहनानामनिधत्त-आयुष्क ।

४२. नेरइयाणं भंते ! कइविहे आउगबंधे पण्णत्ते ?

गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—

जातिनामनिधत्ताउके गइनाम-निधत्ताउके ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिधत्ताउके ओगा-हणाणामनिधत्ताउके ।

एवं जाव वेमाणियत्ति ।

४२. भंते ! नैरयिकों के कितने प्रकार का आयुष्क-बंध प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! छह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—

१.जातिनाम-निधत्त-धारी आयुष्क, २. गतिनामनिधत्त-आयुष्क, ३. स्थितिनामनिधत्त-आयुष्क, ४. प्रदेशनामनिधत्त-आयुष्क, ५. अनु-भागनामनिधत्त-आयुष्क, ६. अव-गाहनानामनिधत्त-आयुष्क ।

इसी प्रकार वैमानिक तक है ।

४३. निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारसमुहुत्ते ।

एवं तिरियगई मणुस्सगई देवगई ।

४३. भंते ! नरकगति में उपपात का विरहकाल कितना प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यतः एक समय और उत्कृष्टतः बारह मुहूर्त्त ।

इसी प्रकार तिर्यञ्चगति, मनुष्य-गति और देवगति है ।

४४. सिद्धिगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ।

गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे ।

एवं सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा ।

४४. भंते ! सिद्धिगति में सिद्ध होने का विरहकाल कितना प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यतः एक समय और उत्कृष्टतः छह मास ।

इसी प्रकार सिद्धिगति को छोड़कर उद्वर्तना का विरहकाल ज्ञातव्य है ।

४५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पहाए

४५. भंते ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में

पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ।

एवं उववायदंडग्रो भणियव्वो, उव्वट्टणादंडग्रो वि ।

नैरयिकों के उपपात का विरहकाल कितना प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यतः एक समय ग्रौर उत्कृष्टतः चौवीस मुहूर्त्त ।

इसी प्रकार उपपात-दण्डक ग्रौर उद्वर्तन-दण्डक प्रज्ञप्त है ।

४६. नेरइया णं भंते ! जातिनाम-निहत्ताउगं कतिहिं ग्रागरिसेहिं पगरेंति ?

गोयमा ! सिय एक्केण सिय दोहिं सिय तीहिं सिय चउहिं सिय पंचहिं सिय छहिं सीय सत्तहिं सिय ग्रट्ठहिं, नो चेव णं नवहिं ।

४६. भंते ! नैरयिक जातिनाम-निवत्त-धारी ग्रायुष्क कितने ग्राकर्षों से प्रवर्तित होता है ?

गौतम ! कभी एक [ग्राकर्ष] से, कभी दो से, कभी तीन से, कभी चार से, कभी पांच से, कभी छह से, कभी सात से ग्रौर कभी ग्राठ से, किन्तु नौ से कभी नहीं ।

४७. एवं सेसाणि वि ग्राउगाणि जाव वेमाणियत्ति ।

४७. इसी प्रकार शेप-ग्रायुष्क के वैमानिक तक ज्ञातव्य हैं ।

४८. कइविहे णं भंते ! संघयणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! छव्विहे संघयणे पण्णत्ते, तं जहा—

वइरोसमनारायसंघयणे रिसभ-नारायसंघयणे नारायसंघणे ग्रद्धनारायसंघयणे खीलिया संघयणे छेवट्टसंघणणे ।

४८. भंते ! संहनन कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! संहनन छह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—

१. वज्रऋषभनाराच संहनन, २. ऋषभनाराच संहनन, ३. नाराच संहनन, ४. ग्रर्द्धनाराच संहनन, ५. कीलिका संहनन, ६. सेवार्त्त संहनन ।

४९. नेरइया णं भंते! किंसंघयणी ?

गोयमा ! छण्हं संघयणाणं ग्रसंघयणी—णेवट्ठी णेव

४९. भंते ! नैरयिक किस संहनन वाले होते हैं ?

गौतम ! छहों संहननों से वे ग्र-संहननी हैं । उनके न ग्रस्थि होता

छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा अमणूण्णा अमणामा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति ।

है, न शिरा और न स्नायु । जो पुद्गल अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ और मन के प्रतिकूल होते हैं, वे उनके असंहनन के रूप में परिणत होते हैं ।

५०. असुरकुमारा णं भंते ! किंसंघयणी पण्णत्ता ?

गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी—णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया सुभा मणुण्णा मणामा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति ।

५०. भंते ! असुरकुमार किस संहनन वाले प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! इन छहों संहननों से वे असंहननी हैं। उनके न अस्थि होता है, न शिरा और न स्नायु । जो पुद्गल इष्ट, कान्त, प्रिय, शुभ, मनोज्ञ और मनोनुकूल होते हैं वे उनके असंहनन के रूप में परिणत होते हैं ।

५१. एवं जाव थणियकुमारत्ति ।

५१. इसी प्रकार स्तनितकुमार तक ज्ञातव्य हैं ।

५२. पुढवीकाइया णं भंते ! किं संघयणी पण्णत्ता ?

गोयमा ! छेवट्टसंघयणी पण्णत्ता ।

५२. भंते ! पृथ्वीकायिक जीव किस संहनन वाले प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! सेवार्त संहनन वाले प्रज्ञप्त हैं ।

५३. एवं जाव संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति ।

५३. इसी प्रकार सम्मूच्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक जीवों तक ज्ञातव्य है ।

५४. गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी ।

५४. गर्भोपक्रान्तिक जीवों के छह प्रकार के संहनन होते हैं ।

५५. समुच्छिममणुस्सा णं छेवट्टसंघयणी ।

५५. सम्मूच्छिम मनुष्यों के सेवार्त संहनन होता है ।

५६. गब्भवक्कंतियमणुस्सा छव्विह-संघयणी पण्णत्ता ।

५६. गर्भोपक्रान्तिक मनुष्यों के छह प्रकार के संहनन होते हैं ।

५७. जहा असुरकुमारा तहा वाण-मंतरा जोइसिया वेमाणिया य ।

५७. जैसे असुरकुमार हैं, वैसे ही वान-मंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक ज्ञातव्य है ।

५८. कइविहे णं भंते ! संठाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! छव्विहे संठाणे पण्णत्ते, तं जहा—

समचउरंसे णग्गोहपरिमंडले साती खुज्जे वामणे हुंडे ।

५८. भंते ! संस्थान छह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! संस्थान छह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—

१. समचतुरस्र, २. न्यग्रोधपरि-मण्डल, ३. सादि, ४. कुब्ज, ५. वामन, ६. हुण्ड ।

५९. णेरइया णं भंते ! किं संठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! हुंडसंठाणा पण्णत्ता ।

५९. भंते ! नैरयिक किस संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! हुण्ड संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६०. असुरकुमारा किं संठाणसंठिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! समचउरंस-संठाण-संठिया पण्णत्ता जाव थणियत्ति ।

६०. भंते ! असुरकुमार किस संस्थान से संस्थित प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! समचतुरस्र संस्थान से संस्थित प्रज्ञप्त हैं । स्तनितकुमार तक ऐसा ही है ।

६१. पुढवी मसूरयसंठाणा पण्णत्ता ।

६१. पृथ्वी के जीव मसूरक-संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६२. आऊ थिवुयसंठाणा पण्णत्ता ।

६२. अपकायिक जीव स्तिबुक/जल-बूँद संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६३. तेऊ सूइकलावसंठाणा पण्णत्ता ।

६३. तेजस्कायिक जीव सूचीकलाप (सूइयों के पुंजवत्) के संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६४. वाऊ पडागसंठाणा पण्णत्ता ।

६४. वायुकायिक जीव पताका-संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं।

६५. वणप्फई णाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता ।

६५. वनस्पतिकायिक जीव नाना प्रकार के संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६६. वेइंदिय - तेइंदिय - चउरिंदिय-सम्मुच्छियपंचेंदिय - तिरिक्खा हुंडसंठाणा पण्णत्ता ।

६६. द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और सम्मूर्च्छिम - पञ्चेन्द्रिय - तिर्यञ्च हुण्ड-संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६७. गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा पण्णत्ता ।

६७. गर्भोपक्रान्तिक तिर्यञ्च छह प्रकार के संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६८. सम्मुच्छिममणुस्सा हुंडसंठाण-संठिया पण्णत्ता ।

६८. सम्मूर्च्छिम मनुष्य हुण्ड-संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६९. गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा संठाणा पण्णत्ता ।

६९. गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य छह प्रकार के संस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

७०. जहा असुरकुमारा तहा वाण-मंतरा जोइसिया वेमाणिया ।

७०. जैसे असुरकुमार हैं, वैसे ही वान-मंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक हैं।

७१. कइविहे णं भंते ! वेए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, तं जहा—
इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसगवेए ।

७१. भंते ! वेद कितने प्रकार के प्रज्ञप्त हैं ?
गौतम ! वेद तीन प्रकार के प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ।

७२. नेरइया णं भंते ! किं इत्थी-वेया पुरिसवेया णपुंसगवेया पण्णत्ता ?
गोयमा ! णो इत्थिवेया णो पुंवेया, णपुंसगवेया पण्णत्ता ।

७२. भंते ! क्या नैरयिक स्त्रीवेद, पुरुष-वेद या नपुंसकवेद होते हैं ?
गौतम ! न तो स्त्रीवेद, न ही पुरुषवेद; नपुंसकवेद प्रज्ञप्त हैं ।

७३. असुरकुमाराणं भंते ! किं इत्थि-वेया पुरिसवेया नपुंसगवेया ?

७३. भंते ! क्या असुरकुमार स्त्रीवेद, पुरुषवेद या नपुंसकवेद होते हैं ?

गोयमा ! इत्थिवेया पुरिसवेया, णो णपुंसगवेया जाव थणिय त्ति ।

गौतम ! स्तनितकुमार तक स्त्रीवेद होते हैं, पुरुषवेद होते हैं, किन्तु नपुंसकवेद नहीं होते ।

७४. पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फइ-बि-ति-चउरिंदिय-संमुच्छिम-पंचिंदियतिरिक्ख-संमुच्छिम-मणुस्सा णपुंसगवेया ।

७४. पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सम्मूर्च्छिम मनुष्य—ये नपुंसकवेद होते हैं ।

७५. गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचेंदिय-तिरिया य तिवेया ।

७५. गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य और पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीनों वेद वाले होते हैं ।

७६. जहा असुरकुमारा तहा वाण-मंतरा जोइसिया वेमाणिया वि ।

७६. जैसे असुरकुमार हैं, वैसे ही वान-मंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक भी हैं ।

७७. ते णं काले णं ते णं समए णं कप्पस्स समोसरणं णेयव्वं जाव गणहरा सावच्चा निर-वच्चा वोच्छिण्णा ।

७७. उस काल और उस समय में 'कल्प' के अनुसार समवसरण, गणधर, सापत्यों (शिष्य-सन्तान-युक्त) एवं निरपत्यों (शिष्य-सन्तान-रहित शेष सभी) की व्युच्छिन्नता ज्ञातव्य है ।

७८. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए सत्त कुल-गरा होत्था, तं जहा—
मित्तदामे सुदामे य,
सुपासे य सयंपभे ।
विमलघोसे सुघोसे य,
महाघोसे य सत्तमे ।।

७८. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में अतीत अवसर्पिणी में सात कुलकर हुए थे, जैसे कि—
१. मित्रदाम, २. सुदाम, ३. सुपार्श्व, ४. स्वयंप्रभ, ५. विमल-घोष, ६. सुघोष ७. महाघोष ।

७९. जंबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए दस कुल-गरा होत्था, तं जहा—

७९. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी में दस कुलकर हुए थे, जैसे कि—

सयंजले सयाऊ य,
अजियसेणे अणंतसेणे य ।
कक्कसेणे भीमसेणे,
महाभीमसेणे य सत्तमे ।
दढरहे दसरहे सतरहे ॥

१. स्वयंजल, २. शतायु, ३. अजितसेन, ४. अनन्तसेन, ५. कर्कसेन, भीमसेन, ६. महाभीमसेन, ८. दृढरथ, ९. दशरथ, १०. शतरथ ।

८०. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तं जहा—
पढमेत्थ विमलवाहण,
चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे ।
तत्तो य पसेणइए,
मरुदेवे चेव नाभी य ॥

८०. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में एक अवसर्पिणी में सात कुलकर हुए थे, जैसे कि—
१. विमलवाहन, २. चक्षुष्मान्, ३. यशस्वी, ४. अभिचन्द्र, ५. प्रसेनजित, ६. मरुदेव, ७. नाभि ।

८१. एतेसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारिआ होत्था, तं जहा—
चंदजसा चंदकंता,
सुरूव-पडिरूव चक्खुकंता य ।
सिरिकंता मरुदेवी,
कुलगरपत्तीण णामाइं ॥

८१. इन सात कुलकरों के सात पत्नियां हुई थीं, जैसे कि—
१. चन्द्रयशा, २. चन्द्रकान्ता, ३. सुरूपा, ४. प्रतिरूपा, ५. चक्षुप्कान्ता, ६. श्रीकान्ता, ७. मरुदेवी ।

८२. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था, तं जहा —
१. णाभी य जियसत्तू य,
जियारी संवरे इ य ।
मेहे धरे पइट्ठे य,
महसेणे य खत्तिए ॥
२. सुग्गीवे दढरहे विण्हू,
वसुपुज्जे य खत्तिए ।
कयवम्मा सीहसेणे य,
भाणू विस्ससेणे इ य ॥

८२. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्करों के चौबीस पिता हुए थे, जैसे कि—
१. नाभि, २. जितशत्रु, ३. जितारी ४. संवर, ५. मेघ, ६. धर, ७. प्रतिष्ठ, ८. क्षत्रिय महसेन, ९. सुग्रीव, १०. दृढरथ, ११. विष्णु, १२. क्षत्रिय वसुपूज्य, १३. कृतवर्मा, १४. सिंहसेन, १५. भानु, १६. विश्वसेन, १७. सूर, १८. सुदर्शन, १९. कुंभ, २०. सुमित्र,

३. सूरे सुदंसणे कुंभे,
सुमित्तविजये समुद्दविजये य।
राया य आससेणे,
सिद्धत्थेच्चिय खत्तिए ॥

२१. विजय, २२. समुद्रविजय, २३. राजा अश्वसेन, २४. क्षत्रिय सिद्धार्थ।

४. उदितोदितकुलवंसा,
विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया।
तित्थप्पवत्तयाणं,
एए पियरो जिणवराणं ॥

तीर्थ-प्रवर्तक जिनवरों के पिता उदितोदित कुल-वंश वाले, विशुद्ध वंश वाले और गुणों से उपेत थे।

८३. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं मायरो होत्था, तं जहा—

८३. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थङ्करों की चौवीस माताएँ हुई थी। जैसे कि—

१. मरुदेवी विजया सेणा,
सिद्धत्था मंगला सुसीमा य।
पुहवी लक्खण रामा,
नंदा विण्हू जया सामा ॥

२. सुजसा सुव्वय अइरा,
सिरिया देवी पभावई।
पउमा वप्पा सिवा य,
वामा तिसला देवी य
जिणमाया ॥

१. मरुदेवी, २. विजया, ३. सेना, ४. सिद्धार्था, ५. मंगला, ६. सुसीमा, ७. पृथ्वी, ८. लक्ष्मणा, ९. रामा, १०. नंदा, ११. विष्णु, १२. जया, १३. श्यामा, १४. सुयशा, १५. सुव्रता, १६. अचिरा, १७. श्री, १८. देवी, १९. प्रभावती, २०. पद्मा, २१. वप्रा, २२. शिवा, २३. वामा, २४. त्रिशला।

८४. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा—

८४. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थङ्कर हुए थे। जैसे कि—

उसभे अजिते संभवे अभिणंदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चंदप्पहे सुविही सीतले सेज्जंसे वासुपुज्जे विमले अणंते धम्मे संती कुंथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे

१. ऋषभ, २. अजित, ३. सम्भव, ४. अभिनन्दन, ५. सुमति, ६. पद्मप्रभ, ७. सुपार्श्व, ८. चन्द्रप्रभ, ९. सुविधि, १०. शीतल, ११. श्रेयांस, १२. वासुपूज्य, १३. विमल, १४. अनन्त, १५. धर्म, १६. शान्ति,

वद्धमाणे य ।

१७. कुन्थु, १८. अर, १९. मल्ली, २०. मुनिसुव्रत, २१. नमि, २२. अरिष्टनेमि, २३. पार्श्व, २४. वर्द्धमान ।

८५. एएसि चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पुव्वभविया णामधेज्जा होत्था, तं जहा—

१. पढमेत्थ वइरणाभे,
विमले तह विमलवाहणेचेव।
तत्तो य धम्मसीहे,
सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ।।

२. सुंदरबाहू तह दीहबाहू,
जुगबाहू लट्ठबाहू य ।
दिण्णे य इंददत्ते,
सुंदर माहिंदरे चेव ।।

३. सीहरहे मेहरहे,
रुप्पी य सुदंसणे य बोद्धव्वे ।
तत्तो य नंदणे खलु,
सीहगिरी चेव वीसइमे ।।

४. अदणीसत्त संखे,
सुदंसणे नदणे य बोद्धव्वे ।
ओसप्पिणीए एए,
तित्थकराणं तु पुव्वभवा ।।

८५. इन चौवीस तीर्थङ्करों के पूर्वभव में चौवीस नाम थे । जैसे कि—

१. वज्रनाभ, २. विमल, ३. विमलवाहन, ४. धर्मसिंह, ५. सुमित्र, ६. धर्ममित्र, ७. सुंदरबाहु, ८. दीर्घबाहु, ९. युगबाहु, १०. लष्टबाहु, ११. दत्त, १२. इन्द्रदत्त, १३. सुन्दर, १४. माहेन्द्र, १५. सिंहरथ, १६. मेघरथ, १७. रुक्मी, १८. सुदर्शन, १९. नंदन, २०. सिंहगिरि, २१. अदीनसत्त्व, २२. शंख, २३. सुदर्शन, २४. नन्दन ।

८६. एएसि णं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं सीया होत्था, तं जहा—

१. सीया सुदंसणा सुप्पभा य,
सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य ।
विजया य वेजयंती,
जयंती अपराजिया चेव ।।

८६. इन चौवीस तीर्थङ्करों के चौवीस शिविकाएँ थीं । जैसे कि—

१. सुदर्शना, २. सुप्रभा, ३. सिद्धार्था, ४. सुप्रसिद्धा, ५. विजया, ६. वैजयन्ती, ७. जयन्ती, ८. अपराजिता, ९. अरुणप्रभा, १०. चन्द्रप्रभा, ११.

२. अरुणप्पह चंदप्पह,
सूरप्पह अग्गिसप्पहा चेव ।
विमला य पंचवण्णा,
सागरदत्ता तह णागदत्ता य ॥

सूरप्रभा, १२. अग्निप्रभा, १३. विमला, १४. पंचवर्णा, १५. सागरदत्ता, १६. नागदत्ता, १७. अभयकरी, १८. निर्वृतिकरी, १९. मनोरमा, २०. मनोहरा, २१. देवकुरु, २२. उत्तरकुरु, २३. विशाला, २४. चन्दप्रभा ।

३. अभयकरी णिव्वुतिकरी,
मणोरमा तह मणोहरा चेव ।
देवकुरु उत्तरकुरु,
विसाल चंदप्पहा सीया ॥

४. एयातो सीयाओ सव्वेसिं,
चेव जिणवरिंदाणं ।
सव्वजगवच्छलाणं,
सव्वोतुयसुभाए छायाए ॥

सर्वजीववत्सल समस्त जिनवरो को ये शिविकाएँ सब ऋतुओं में शुभ छाया वाली होती हैं ।

५. पुव्विं उक्खित्ता,
माणुसेहिं साहट्ठरोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति सीयं,
असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥

शिविका को पहले संहृष्ट रोम कूपवाले मनुष्य उठाते हैं पश्चात् असुरेन्द्र, सुरेन्द्र और नागेन्द्र वहन करते हैं ।

६. चलचवलकुंडलधरा,
सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
सुरअसुरवंदियाणं,
वहंति सीयं जिणिंदाणं ॥

वे चल-चपल कुंडलधारी, अपनी इच्छा से विनिर्मित आभरणों के धारी, सुरासुर से वंदित जिनेन्द्रों की शिविका को वहन करते है ।

७. पुरओ वहंति देवा,
नागा पुण दाहिणम्मि
पासम्मि ।
पच्चत्थिमेण असुरा,
गरुला पुण उत्तरे पासे ॥

उसे पूर्व में देव, दक्षिण पार्श्व में नागकुमार, पश्चिम में असुरकुमार और उत्तर पार्श्व में गरुड़ वहन करते हैं ।

८७. उसभो य विणीयाए,
बारवईए अरिट्ठवरणेमि ।
अवसेसा तित्थयरा,
निक्खंता जम्मभूमीसु ॥

८७. भगवान् ऋषभ विनीता से, अरिष्टनेमि द्वारवती से और शेष तीर्थङ्कर अपनी-अपनी जन्मभूमि से निष्क्रान्त हुए थे ।

८८. सव्वेवि एगदूसेण,
णिग्गया जिणवरा चउवीसं ।

८८. सभी चौबीस तीर्थङ्कर एक दूष्य से निर्गत हुए थे, अन्यलिंग, गृहलिंग

ण य णाम अण्णलिंगे,
ण य गिहिलिंगे कुलिंगे वा ॥

या कुलिंग से नहीं।

८९. १. एक्को भगवं वीरो,
पासो मल्ली य तिहिं-तिहिं-
सएहिं ।
भयवंपि वासुपुज्जो,
छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो॥

२. उग्गाणं भोगाणं राइण्णाणं,
च खत्तियाणं च ।
चउहिं सहस्सेहिं उसभो,
सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥

८९. भगवान् वीर अकेले, पार्श्व और मल्ली तीन-तीन सौ पुरुषों के साथ और भगवान् वासुपूज्य छह सौ पुरुषों के साथ निष्क्रान्त/प्रव्रजित हुए थे ।

भगवान् ऋषभ चार हजार उग्र, भोग, राजन्य और क्षत्रियों के साथ निष्क्रान्त हुए थे और शेष तीर्थङ्कर हजार-हजार परिवारों के साथ ।

९०. १. सुमइत्थ णिच्चभत्तेण,
णिग्गओ वासुपुज्जो जिणो
चउत्थेणं ।
पासो मल्ली वि य,
अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेणं ॥

९०. भगवान् सुमति नित्यभक्त/उपवास-रहित, वासुपूज्य चतुर्थ भक्त/एक उपवास, पार्श्व और मल्ली अष्टम भक्त/तीन उपवास और शेष बीस तीर्थङ्कर छट्ठ भक्त/दो उपवास पूर्वक निर्गत हुए ।

९१. एएसि णं चउवीसाए तित्थ-गराणं चउवीसं पढमभिक्खादया होत्था, तं जहा—

१. सेज्जंसे बंभदत्ते,
सुरिंददत्ते य इंददत्ते य ।
तत्तो य धम्मसीहे,
सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ॥

२. पुस्से पुणव्वसू पुण्णणंद,
सुणंदे जये य विजये य ।
पउमे य सोमदेवे,
महिंददत्ते य सोमदत्ते य ॥

९१. इन चौबीस तीर्थङ्करों के चौबीस प्रथम भिक्षादाता हुए, जैसे कि—

१. श्रेयांस, २. ब्रह्मदत्त, ३. सुरेन्द्रदत्त, ४. इन्द्रदत्त, ५. धर्मसिंह, ६. सुमित्र, ७. धर्ममित्र, ८. पुष्य, ९. पुनर्वसु, १०. पुण्यनन्द, ११ सुनन्द, १२. जय, १३. विजय, १४. पद्म, १५. सोमदेव, १६. महेन्द्रदत्त, १७. सोमदत्त, १८. अपराजित, १९. विश्वसेन, २०.

३. अपराजिय वीससेणे,
वीसतिमे होइ उसभसेणे य ।
दिण्णे वरदत्ते,
धन्ने वहुले य आणुपुव्वीए ॥

ऋषभसेन, २१. दत्त, २२. वर-दत्त, २३. धन्य, २४. बहुल ।

४. एते विसुद्धलेसा,
जिणवरभत्तीए पंजलिउडा य ।
तं कालं तं समयं,
पडिलाभेई जिणवरिंदे ॥

उस काल और उस काल में इन विशुद्ध लेश्या वाले लोगों ने जिन-वर-भक्ति से प्राञ्जलिपुट होकर, जिनवरों को प्रतिलाभित किया— आहार दिया ।

९२. १. संवच्छरेण भिक्खा,
लद्धा उसभेण लोगणाहेण ।
सेसेहिं वीयदिवसे,
लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥

९२. लोकनाथ ऋषभ ने प्रथम भिक्षा एक संवत्सर/वर्ष पश्चात् उपलब्ध की थी । शेष तीर्थङ्करों ने प्रथम भिक्षा दूसरे दिन उपलब्ध की थी ।

२. उसभस्स पढमभिक्खा,
खोयरसो आसि लोगणाहस्स।
सेसाणं परमण्णं,
अमयरसरसोवमं आसि ॥

लोकनाथ ऋषभ की प्रथम भिक्षा इक्षुरस थी और शेष तीर्थङ्करों की अमृतरसतुल्य परमान्न खीर थी ।

३. सव्वेसिपि जिणाणं,
जहियं लद्धाओ पढमभिक्खाओ।
तहियं वसुधाराओ,
सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ॥

सभी जिनवरों को जहां प्रथम भिक्षा प्राप्त हुई, वहां शरीर-प्रमाण सुवर्ण-वृष्टि हुई ।

९३. एतेसि णं चउवीसाए तित्थ-गराणं चउवीसं चेइयरुक्खा होत्था, तं जहा—

९३. चौवीस तीर्थङ्करों के चौवीस चैत्यवृक्ष थे, जैसे कि—

१. णग्गोह - सत्तिवण्णे,
साले पियए पियंगु छत्ताहे ।
सिरिसे य णागरुक्खे,
माली य पिलंखुरुक्खे य ॥

२. तेंदुग पाडल जंबू,
आसोत्थे खलु तहेव दधिवण्णे।

१. न्यग्रोध, २. सप्तपर्ण, ३. शाल, ४. प्रियाल, ५. प्रियंगु, ६. छत्राक, ७. शिरीष, ८. नागवृक्ष, ९. माली, १०. प्लक्ष, ११. तिदुक, १२. पाटल १३. जंबु, १४. अश्वत्थ, १५. दधि-पर्ण, १६. नंदि, १७. तिलक, १८.

णंदीरुक्खे तिलए य,
अंबयरुक्खे असोगे य ।।

३. चंपय वउले य तहा,
वेडसिरुक्खे धायईरुक्खे ।
साले य वद्धमाणस्स,
चेइयरुक्खा जिणवराणं ।।

आम्र, १६. अशोक, २०. चम्पक, २१. वकुल, २२. वेतस, २३. धातकी, २४. शाल ।

४. बत्तीसइं धणूइं,
चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स ।
णिच्चोउगो असोगो,
ओच्छण्णो सालरुक्खेणं ।।

वर्द्धमान का अशोक चैत्यवृक्ष बत्तीस धनुष ऊँचा, नित्य-ऋतुक/सदा हराभरा और शालरुक्ष से अवच्छन्न था ।

५. तिण्णे व गाउयाइं,
चेइयरुक्खो जिणस्स
उसभस्स ।
सेसाणं पुण रुक्खा,
सरीरतो वारसगुणा उ ।।

जिनवर ऋषभ का चैत्यवृक्ष तीन गाउ ऊँचा था । शेष तीर्थङ्करों के चैत्यवृक्ष उनके शरीर से बारह गुने ऊँचे थे ।

६. सच्छत्ता सपडागा,
सवेइया तोरणेहिं उववेया ।
सुरअसुरगरुलमहिया,
चेइयरुक्खा जिणवराणं ।।

जिनवरों के चैत्यवृक्ष छत्र, पताका, वेदिका और तोरण-उपेत तथा सुर, असुर और गरुड़ देवों द्वारा पूजित थे ।

९४. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसीसा होत्था, तं जहा—

१. पढमेत्थ उसभसेणे,
बीए पुण होइ सीहसेणे उ ।
चारू य वज्जणाभे,
चमरे तह सुव्वते विदब्भे ।।

२. दिण्णे वाराहे पुण,
आणंदे गोथुभे सुहम्मे य ।
मंदर जसे अरिट्ठे,
चक्काउह सयभु कुंभे य ।।

३. भिसए य इंदे कुंभे,
वरदत्ते दिण्ण इंदभूती य ।

९४. चौबीस तीर्थङ्करों के प्रथम शिष्य चौबीस थे । जैसे कि—

१. ऋषभसेन, २. सिंहसेन, ३. चारु, ४. वज्रनाभ, ५. चमर, ६. सुव्रत, ७. विदर्भ, ८. दत्त, ९. वाराह, १०. आनन्द, ११ कौस्तुभ, १२. सुधर्मा, १३. मन्दर, १४. यश, १५. अरिष्ट, १६. चक्रायुध, १७. स्वयंभू, १८. कुम्भ, १९. भिषक्, २०. इन्द्र, २१. कुम्भ, २२. वरदत्त, २३. दत्त, २४. इन्द्रभूति ।

उदितोदितकुलवंसा,
विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया ।।
तित्थप्पवत्तयाणं,
पढमा सिस्सा जिणवराण ।।

तीर्थ-प्रवर्तक जिनवरों के प्रथम शिष्य उदितोदित कुल - वंश वाले, विशुद्ध वंश वाले और गुणों से उपेत थे ।

९५. एएसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सिणीओ होत्था, तं जहा—

१. बंभी फग्गू सम्मा,
अतिराणी कासवी रई
सोमा ।
सुमणा वारुणि सुलसा,
धारिणि धरणी य
धरणिधरा ।।

२. पउमा सिवा सुइ अंजू,
भावियप्पा य रक्खिया ।
बधू पुप्फवती चेव,
अज्जा धणिला य आहिया ।।

३. जक्खिणी पुप्फचूला य,
चंदणऽज्जा य आहिया ।
उदितोदितकुलवसा,
विसुद्धवसा गुणेहिं उववेया ।
तित्थप्पवत्तयाणं,
पढमा सिस्सी जिणवराणं ।।

९५. चौबीस तीर्थङ्करों की प्रथम शिष्याएं चौबीस थी, जैसे कि—

१. ब्राह्मी, २. फल्गु, ३. शर्मा, ४. अतिराज्ञी, ५. काश्यपी, ६. रति, ७. सोमा, ८. सुमना, ९. वारुणी, १०. सुलसा, ११. धारणी, १२. धरणी, १३. धरणिधरा, १४. पद्मा, १५. शिवा, १६. शुचि, १७. अंजू, १८. भावितात्मा रक्षिका १९. बन्धू, २०. पुष्पवती, २१. आर्या धनिला, २२. यक्षिणी, २३. पुष्पचूला और २४. आर्या चन्दना ।

तीर्थ-प्रवर्तक जिनवरों की प्रथम शिष्याएँ उदितोदित कुलवंशवाली, विशुद्ध वंश वाली और गुणों से उपेत थी ।

९६. जबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टि-पियरो होत्था, तं जहा —

१. उसभे सुमित्तविजए,
समुद्दविजए य अस्ससेणे य ।
विस्ससेणे य सूरे,
सुदंसणे कत्तवीरिए य ।।

९६. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में बारह चक्रवर्ती के बारह पिता थे । जैसे कि—

१. ऋषभ, २. सुमित्रविजय, ३. समुद्रविजय, ४. अश्वसेन, ५. विश्वसेन, ६. सूर, ७. सुदर्शन, ८. कार्त्तवीर्य, ९. पद्मोत्तर, १०. महाहरि,

२. पउमुत्तरे महाहरी,
विजय राया तहेव य।
बम्हे बारसमे वुत्ते,
पिउनामा चक्कवट्टीणं ॥

११. विजयराजा, १२. ब्रह्मा।

९७. जंबुद्दीवे णं भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टि-मायरो होत्था, तं जहा—

१. सुमंगला जसवती,
भद्दा सहदेवी अइर सिरि देवी।
तारा जाला मेरा,
वप्पा चुलणी अपच्छिमा ॥

९७. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में बारह चक्रवर्तियों की बारह माताएँ थीं। जैसे कि—
१. सुमंगला, २. यशस्वती, ३. भद्रा, ४. सहदेवी, ५. अचिरा, ६. श्री, ७. देवी, ८. तारा, ९. ज्वाला, १०. मेरा, ११. वप्रा, १२. चुलनी।

९८. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी-होत्था, तं जहा—

१. भरहो सगरो मघवं,
सणंकुमारो य रायसद्दूलो।
संती कुंथू य अरो,
हवइ सुभूमो य कोरव्वो ॥

२. नवमो य महापउमो,
हरिसेणो चेव रायसद्दूलो।
जयनामो य नरवई,
बारसमो बंभदत्तो य ॥

९८. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में बारह चक्रवर्ती हुए थे। जैसे कि—
१. भरत, २. सगर, ३. मघव, ४. राजशार्दूल सनत्कुमार, ५. शान्ति, ६. कुन्थु, ७. अर, ८. कुरुवंशज सुभूम, ९. महापद्म, १०. राजशार्दूल हरिषेण, ११. नरपति जय, १२. ब्रह्मदत्त।

९९. एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस इत्थिरयणा होत्था, तं जहा—

१. पढमा होइ सुभद्दा,
भद्दा सुणंदा जया य विजया य।

९९. इन बारह चक्रवर्तियों के बारह स्त्री-रत्न थे, जैसे कि—
१. सुभद्रा, २. भद्रा, ३. सुनन्दा, ४. जया, ५. विजया, ६. कृष्ण-श्री, ७. सूर्यश्री, ८. पद्मश्री, ९.

कण्हसिरि सूरसिरि,
पउमसिरि वसुंधरा देवी ॥
लच्छिमई कुरुमई,
इत्थिरयणाण नामाइं ॥

वसुन्धरा, १०. देवी, ११. लक्ष्मी-मती, १२. कुरुमती ।

१००. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नव बल-देव - वासुदेव-पितरो होत्था, तं जहा—
१. पयावई य बंभे,
रोद्दे सोमे सिवेति य ।
महसिहे अग्गिसिहे,
दसरहे नवमे य वसुदेवे ॥

१००. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में नौ बलदेवों और नौ वासुदेवों के नौ पिता थे । जैसे कि—
१. प्रजापति, २. ब्रह्मा, ३. रुद्र, ४. सोम, ५. शिव, ६. महासिंह, ७. अग्निसिंह, ८. दशरथ, ९. वसुदेव ।

१०१. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव वासु-देव-मायरो होत्था, तं जहा—
१. मियावई उमा चेव,
पुहवी सीया य अम्मा य।
लच्छिमती सेसवती,
केकई देवई इय ॥

१०१. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में नौ वासुदेवों की नौ माताएँ थीं, जैसे कि—
१. मृगावती, २. उमा, ३. पृथ्वी, ४. सीता, ५. अम्बिका, ६. लक्ष्मी-मती, ७. शेषवती, ८. कैकयी, ९. देवकी ।

१०२. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेव मायरो होत्था, तं जहा—
१. भद्दा तह सुभद्दा य,
सुप्पभा य सुदंसणा ।
विजया य वेजयंती,
जयंती अपराइया ॥
णवमिया रोहिणी,
बलदेवाण मायरो ॥

१०२. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में नौ बलदेवों की नौ माताएँ थीं, जैसे कि—
१. भद्रा, २. सुभद्रा, ३. सुप्रभा, ४. सुदर्शना, ५. विजया, ६. वैजयन्ती, ७. जयन्ती, ८. अपरा-जिता, ९. रोहिणी ।

१०३. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए नव दसार-मंडला होत्था, तं जहा—

१०३. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी में नौ दशारमण्डल वासुदेव/बलदेव हुए थे, जैसेकि—

उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगमा सव्व-जणणयण-कंता ओहबला अइबला महाबला अणिहया अपराइया सत्तुमद्दणा रिपुसहस्स-माण-महणा साणुक्कोसा अमच्छरा अचवला अचंडा मिय-मंजुल-पलाव-हसिया गंभीर-मधुर-पडिपुण्ण-सच्च-वयणा अब्भुवगय-वच्छला सरण्णा लक्खणवंजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाणपडिपुण्ण-सुजात-सव्वंग-सुंदरंगा ससिसोमागार-कंतपिय-दंसणा अमसणा पयंडदंडप्पयार-गंभीर-दरिसणिज्जा तालद्ध-ओव्विद्ध-गरुल-केऊ महाधणुविकड्ढगा महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्ध-कित्तिपुरिसा विउलकुल-समुब्भवा महारयण-विहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुल-वंस-तिलया अजिया अजियरहा हल-मुसलकणग-पाणी संख-चक्क-गय-सत्तिनंदगधरा पवरुज्जल-सुक्कंतविमल-गोथुभ-तिरीडधारी कुंडल-उज्जोइयाणणा पुंडरीय-णयणा एकावलि-कंठलइयवच्छा सिरिवच्छ-सुलंछणा-वरजसा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइत-पलंब-

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रधान पुरुष, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, छायावन्त, कान्त, सोम, सुभग, प्रियदर्शन, सुरूप, सुख, शील, सुखाभिगम, सर्वजन-नयन-कान्त, ओघ बल वाले, अति बल वाले, महाबल वाले, अनिहत, अपराजित, शत्रु का मर्दन करने वाले, हजारों शत्रुओं के मान को मथने वाले, सानुक्रोश/दयालु, अमत्सर, अचपल, अचंड/मृदु, मित-मंजुल वार्तालाप करने वाले, हंसने वाले, गम्भीर, मधुर, प्रतिपूर्ण सत्य-वचन बोलने वाले, अतिथि-वत्सल, शरण्य, लक्षण-व्यञ्जन और गुणों से उपेत, मान-उन्मान और प्रमाण से प्रतिपूर्ण सुजात सर्वाङ्ग सुन्दर अंग वाले, चन्द्रवत् सौम्याकार, कान्त और प्रियदर्शन वाले, अमर्षण, प्रकांड दंडनीति वाले, गम्भीर दर्शनीय, तालध्वज वाले तथा उच्छ्रित-गरुडध्वज वाले, बड़े-बड़े धनुष चढ़ाने वाले, महासत्वसागर, दुर्धर, धनुर्धर, धीरपुरुष और युद्ध में कीर्तिपुरुष, विपुलकुल में समुत्पन्न, महारत्न/वज्र के विघटक, अर्ध भरत के स्वामी, सोम, राज-कुलवंश-तिलक, अजित, अजेय रथ वाले, हल-मूशल तथा कणक/बाण, शंख, चक्र, गदा, शक्ति और नंदक धारी, प्रवर-उज्ज्वल-शुक्लांत और निर्मल कौस्तुभ किरीटधारी कुंडलों से उद्योतित, पुंडरीक,

सोमंतकंत-विकसंत- चित्त - वर-मालरइय - वच्छा अट्ठसय-विभत्त-लक्खण - पसत्थ - सुन्दर-विरइयंगमंगा मत्तगयवरिंद-ललिय - विक्कम - विलसियगई सारय - नवथणियमधुर - गंभीर-कोंच-निग्घोस-दुं दुभिसरा कडि-सुत्तग-नीलपीय - कोसेयवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुयवसभ-कप्पा अब्भहियं राय - तेय-लच्छीए दिप्पमाणा नीलग-पीतग - वसणा दुवे - दुवे राम-केसवा भायरो होत्था, तं जहा—

कमल-नयन वाले, एकावली हार कण्ठ शोभित वक्ष वाले, श्रीवत्स चिह्न वाले, यशस्वी, सब ऋतुओं के सुरभि-कुसुमों से सुरचित, प्रलम्ब, शोभायमान, कमनीय, विकस्वर, विचित्र वर्ण वाली उत्तम माला से शोभित वक्ष वाले, पृथक्-पृथक् एक सौ आठ लक्षणों से प्रशस्त और सुन्दर अंगोपांग वाले, मत्त गजवरेन्द्र की ललित विक्रम-विलसित जैसी गति वाले शरद ऋतु के नव स्तनित, मधुर, गम्भीर क्रौंचपक्षी के निर्घोष तथा दुंदुभि स्वरवाले, कटिसूत्र तथा नील और पीत कौशेय वस्त्रों से प्रवर-दीप्त तेज वाले, नरसिंह, नरपति, नरेन्द्र, नरवृषभ, मरुदेश के वृषभ तुल्य, अभ्यधिक राज्य-तेज की लक्ष्मी से देदीप्यमान, नील और पीत वस्त्र वाले दो-दो राम (बलराम) और केशव (वासुदेव) भाई थे, जैसे कि—

१. तिविट्ठू य दुविट्ठू य,
सयंभू पुरिसुत्तमे ।
पुरिससीहे तह पुरिस-
पुंडरीए,
दत्ते नारायणे कण्हे ॥

त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुरुषपुंडरीक, दत्त, नारायण और कृष्ण [—ये नौ वासुदेव थे ।]

२. अयले विजए भद्दे,
सुप्पहे य सुदंसणे ।
आणंदे णंदणे पउमे,
रामे यावि अपच्छिमे ॥

अचल, विजय, भद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द, नन्दन, पद्म और राम [—ये नौ बलदेव थे ।]

१०४. एतेसि णं णवण्हं बलदेव-वासु-

१०४. इन नौ बलदेवों और नौ वासुदेवों

देवाणं पुव्वभविया नव-नव नामधेज्जा होत्था, तं जहा—

१. विस्सभूई पव्वयए,
घणरत्त समुद्दत्त सेवाले।
पियमित्त ललियमित्ते,
पुणव्वसू गंगदत्ते य ॥

२. एयाइं नामाइं,
पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं।
एत्तो वलदेवाणं,
जहक्कमं कित्तइस्सामि ॥

३. विसनंदी सुवंधू य,
सागरदत्ते असोगललिए य।
वाराह धम्मसेणे,
अपराइय रायललिए य ॥

के पूर्वभव के नौ-नौ नाम थे, जैसे कि—

१. विश्वभूति, २. पर्वतक, ३. धनदत्त, ४. समुद्रदत्त, ५. शैवाल, ६. प्रियमित्र, ७. ललितमित्र, ८. पुनर्वसु, ९. गंगदत्त।

ये नाम वासुदेवों के पूर्वभव के थे। वलदेवों के नाम यथाक्रम कहूँगा—
१. विषनन्दी, २. सुबन्धु, ३. सागरदत्त, ४. अशोक, ५. ललित, ६. वाराह, ७. धर्मसेन, ८. अपराजित, ९. राजललित।

१०५. एतेसि णं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था, तं जहा—

१. संभूत सुभद्दे सुदंसणे,
य सेयंसे कण्हं गंगदत्ते य।
सागरसमुद्दनामे,
दुमसेणे य णवमए ॥

२. एते धम्मायरिया,
कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं।
पुव्वभवे आसिण्हं,
जत्थ निदाणाइं कासीय ॥

१०५. इन नौ वासुदेवों के पूर्वभविक नौ धर्माचार्य थे, जैसे कि—

१. संभूत, २. सुभद्र, ३. सुदर्शन, ४. श्रेयांस, ५. कृष्ण, ६. गंगदत्त, ७. सागर, ८. समुद्र, ९. द्रुमसेन।

ये नौ धर्माचार्य कीर्त्तिपुरुष वासुदेवों के थे।
इन [वासुदेवों] ने पूर्वभव में निदान किया।

१०६. एतेसि णं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव निदाणभूमिओ होत्था, तं जहा—

१. महुरा य कणगवत्थू,
सावत्थी पोयणं च
रायगिहं।

१०६. इन नौ वासुदेवों के पूर्वभव में नौ निदान-भूमियां थीं, जैसे कि—

१. मथुरा, २. कनकवस्तु, ३. श्रावस्ती, ४. पोतनपुर, ५. राजगृह, ६. काकन्दी, ७. कौशांबी,

कायंदी कोसंवी,
मिहिलपुरी हत्थिणपुरं च ।।

८. मिथिलापुरी और ९. हस्तिनापुर ।

१०७. एतेसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव नियाणकारणा होत्था, तं जहा—

१. गावो जुवे य संगामे,
इत्थी पराइग्रो रंगे ।
भज्जाणुराग गोट्ठी,
परइड्ढी माउया इय ।।

१०७. इन नौ वासुदेवों के निदान करने के नौ कारण थे, जैसे कि—

१. गाय, २. द्यूत, ३. संग्राम, ४. स्त्री, ५. रण में पराजय, ६. भार्यानुराग, ७. गोष्ठी, ८. पर-ऋद्धि, ९. माता ।

१०८. एएसि णं नवण्हं वासुदेवाणं नव पडिसत्तू होत्था, तं जहा—

१. अस्सग्गीवे तारए,
मेरए महुकेढवे निसुंभे य ।
बलि पहराए तह,
रावणे य नवमे जरासंधे ।।

२. एए खलु पडिसत्तू,
कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वे वि चक्कजोही,
सव्वे वि हया सचक्केहिं ।।

१०८. इन नौ वासुदेवों के नौ प्रतिशत्रु थे । जैसे कि—

१. अश्वग्रीव, २. तारक, ३. मेरक, ४. मधुकैटभ, ५. निशुंभ, ६. बलि, ७. प्रभराज, ८. रावण, ९. जरासंध ।

ये कीर्त्तिपुरुष वासुदेवों के प्रतिशत्रु थे, सभी चक्र-योधी थे और सभी अपने ही चक्र से मारे गए ।

१०९. १. एक्को य सत्तमाए,
पंच य छट्ठीए पंचमा एक्को ।
एक्को य चउत्थीए,
कण्हो पुण तच्चपुढवीए ।।

२. अणिदाणकडा रामा,
सव्वेवि य केसवा
नियाणकडा ।
उड्ढंगामी रामा,
केसव सव्वे अहोगामी ।।

१०९. मरणोपरान्त एक [ वासुदेव ] सातवीं पृथ्वी में, पांच छट्ठी पृथ्वी में, एक पांचवी पृथ्वी में, एक चौथी पृथ्वी में और कृष्ण तीसरी पृथ्वी में गए ।

सभी राम/बलदेव अनिदानकृत होते हैं, सभी केशव/वासुदेव निदानकृत होते हैं, सभी राम ऊर्ध्वगामी होते हैं और सभी केशव अधोगामी होते हैं ।

३. अट्ठंतकडा रामा,
एगो पुण बंभलोयकप्पंमि ।
एक्का से गब्भवसही,
सिज्भिस्सइ आगमेस्साणं ।।

आठ राम/बलदेव अन्तकृत हुए और एक [ बलभद्र ] ब्रह्मलोक कल्प में उत्पन्न हुआ । वह भविष्य में एक गर्भवास करेगा और सिद्ध होगा ।

११०. जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा—

१. चंदाणणं सुचंदं च,
अग्गिसेणं च नंदिसेणं च ।
इसिदिण्णं वयहारिं,
वदिमो सामचंदं च ।।
२. वंदामि जुत्तिसेणं,
अजियसेणं तहेव सिवसेणं ।
बुद्धं च देवसम्मं,
सययं निक्खित्तसत्थं च ।।
३. असंजलं जिणवसहं,
वंदे य अणंतयं अमियणाणि ।
उवसंतं च धुयरयं,
वंदे खलु गुत्तिसेणं च ।।
४. अइपासं च सुपासं,
देवसरवंदियं च मरुदेवं ।
णिव्वाणगयं च धरं,
खीणदुहं सामकोट्ठं च ।।
५. जियरागमग्गिसेणं,
वंदे खीणरयमग्गिउत्तं च ।
वोक्कसियपेज्जदोसं च,
वारिसेणं गयं सिद्धि ।।

११०. जम्बूद्वीप द्वीप के ऐरवत-वर्ष में इस अवसर्पिणी में चौबीस तीर्थंकर हुए थे । जैसे कि—

१. चन्द्रानन, २. सुचन्द्र, ३. अग्निषेण, ४. नंदिषेण, ५. ऋषिदत्त, ६. व्रतधारी, ७. श्यामचन्द्र, ८. युक्तिषेण, ९. अजितसेन, १०. शिवसेन, ११. देवशर्मा, १२. निक्षिप्तशस्त्र, १३. असंज्वल, १४. अनन्तक, १५. उपशान्त, १६. गुप्तिषेण, १७. अतिपार्श्व, १८. सुपार्श्व, १९. मरुदेव, २०. धर, २१. श्यामकोष्ठ, २२. अग्निषेण, २३. अग्निपुत्र, २४. वारिषेण ।

१११. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा भविस्संति, तं जहा—

१११. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी में सात कुलकर होंगे । जैसे कि—

१. मित्तवाहणे सुभूमे य,
सुप्पहे य सयंपहे ।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य,
आगमेस्साण होक्खति ॥

१. मित्रवाहन, २. सुभूम, ३. सुप्रभ, ४. स्वयंप्रभ, ५. दत्त, ६. सूक्ष्म, ७. सुवन्धु ।

११२. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए ओसप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति, तं जहा—

१. विमलवाहणे सीमंकरे,
सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे ।
दढधणू दसधणू,
सयधणू पडिसूई संमूइत्ति ॥

११२. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में आगामी अवसर्पिणी में दस कुलकर होंगे। जैसे कि—

१. विमलवाहन, २. सीमंकर, ३. सीमंधर, ४. क्षेमंकर, ५. क्षेमंधर, ६. दृढधनु, ७. दशधनु, ८. शतधनु, ९. प्रतिश्रुति, १०. सन्मति ।

११३. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति, तं जहा—

१. महापउमे सूरदेवे,
सुपासे य सयंपहे ।
सव्वाणुभूई अरहा,
देवउत्ते य होक्खति ॥
२. उदए पेढालपुत्ते य,
पोट्टिले सतए ति य ।
मुणिसुव्वए य अरहा,
सव्वभावविउ जिणे ॥
३. अममे णिक्कसाए य,
निप्पुलाए य निम्ममे ।
चित्तउत्ते समाही य,
आगमिस्साए होक्खइ ॥
४. संवरे अणियट्टी य,
विजए विमलेति य ।
देवोववाए अरहा,
अणंतविजए ति य ॥

११३. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी में चौवीस तीर्थङ्कर होंगे। जैसे कि—

१. महापद्म, २. सूरदेव, ३. सुपार्श्व, ४. स्वयंप्रभ, ५. अर्हन् सर्वानुभूति, ६. देवपुत्र, ७. उदक, ८. पेढाल-पुत्र, ९. पोट्टिल, १०. शतक, ११. अर्हन् मुनिसुव्रत, १२. सर्वभावविद्, १३. अमम, १४. निष्कषाय, १५. निष्पुलाक, १६. निर्मम, १७. चित्रगुप्त, १८. समाधि, १९. संवर, २०. अनिवृत्ति, २१. विजय, २२. विमल, २३. देवोपपात, २४. अनन्तविजय ।

५. एए वुत्ता चउवीसं,
भरहे वासम्मि केवली ।
आगमेस्साण होक्खति,
धम्मतित्थस्स देसगा ॥

ये चौवीस तीर्थङ्कर भविष्य में भरतवर्ष में धर्मतीर्थ के उपदेशक/प्रवर्तक होंगे ।

११४. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं पुव्वभविया चउवीसं नामधेज्जा भविस्संति, तं जहा—

१. सेणिय सुपास उदए,
पोट्टिल अणगारे तह दढाऊ य ।
कत्तिय संखे य तहा,
नंद सुनंदे सतए य बोद्धव्वा ॥

२. देवई च्चेव सच्चई,
तह वासुदेव बलदेवे ।
रोहिणी सुलसा चेव,
तत्तो खलु रेवई चेव ॥

३. तत्तो हवइ मिगाली,
बोद्धव्वे खलु तहा भयाली य ।
दीवायणे य कण्हे,
तत्तो खलु नारए चेव ॥

४. अंबडे दारुमडे य,
साईबुद्धे य होइ बोद्धव्वे ।
उस्सप्पिणी आगमेस्साए,
तित्थगराणं तु पुव्वभवा ॥

११४. इन चौवीस तीर्थङ्करों के पूर्व-भविक नाम चौवीस थे, जैसे कि—

१. श्रेणिक, २. सुपार्श्व, ३. उदक, ४. अनगार पोट्टिल, ५. दढायु, ६. कार्तिक, ७. शंख, ८. नंद, ९. सुनंद, १०. शतक, ११. देवकी, १२. सत्यकी, १३. वासुदेव, १४. वलदेव, १५. रोहिणी, १६. सुलसा, १७. रेवती, १८. मृगाली, १९. भयाली, २०. कृष्णद्वीपायन, २१. नारद, २२. अम्बड़, २३. दारुमड, २४. स्वातिबुद्ध ।

ये आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले तीर्थङ्करों के पूर्वभविक नाम हैं ।

११५. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पियरो भविस्सति, चउवीसं मायरो भविस्संति, चउवीसं पढमसीसा भविस्संति, चउवीसं पढमसिस्सिणीओ भविस्संति, चउवीसं पढमभिक्खादा भविस्संति, चउवीसं चेइयरुक्खा भविस्संति ।

११५. इन चौवीस तीर्थङ्करों के चौवीस पिता, चौवीस माताएँ, चौवीस प्रथम-शिष्य, चौवीस प्रथम-शिष्याएँ, चौवीस प्रथम-भिक्षा-दायक और चौवीस चैत्यवृक्ष होंगे ।

११६. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टी भविस्संति, तं जहा—

१. भरहे य दीहदंते,
गूढदंते य सुद्धदंते य ।
सिरिउत्ते सिरिभूई,
सिरिसोमे य सत्तमे ॥
२. पउमे य महापउमे,
विमलवाहणे विपुलवाहणे चेव ।
रिट्ठे बारसमे वुत्ते,
आगमेसा भरहाहिवा ॥

११६. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी में बारह चक्रवर्ती होंगे, जैसे कि—

१. भरत, २. दीर्घदन्त, ३. गूढदन्त, ४. शुद्धदन्त, ५. श्रीपुत्र, ६. श्रीभूति, ७. श्रीसोम, ८. पद्म, ९. महापद्म, १०. विमलवाहन, ११. विपुलवाहन, १२. रिष्ट ।

११७. एतेसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस पियरो भविस्सति, बारस मायरो भविस्सति, बारस इत्थी-रयणा भविस्संति ।

११७. इन बारह चक्रवर्तियों के बारह, पिता, बारह माताएँ और बारह स्त्रीरत्न होंगे ।

११८. जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्संति नव-वासुदेव-मायरो भविस्संति, नव बलदेव-मायरो भविस्संति, नव दसारमंडला भविस्संति, तं जहा—

उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी एवं सो चेव धण्णओ भणियव्वो जाव नीलग-पीतग-वसणा दुवे-दुवे राम-केसवा भायरो भविस्संति, तं जहा—

१. नंदे य नंदमित्ते,
दीहबाहू तहा महाबाहू ।

११८. जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी में नौ बलदेव-वासुदेवों के नौ पिता, नौ वासुदेवों की नौ माताएँ, नौ बलदेवों की नौ माताएँ और नौ दशारमण्डल होंगे, जैसे कि—

उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, प्रधान-पुरुष, ओजस्वी, तेजस्वी, यावत् नील-पीत वस्त्र वाले दो-दो राम और केशव भाई होंगे, जैसे कि—

नंद, नंदमित्र, दीर्घबाहु, महाबाहु, अतिबल, महाबल, बलभद्र, द्विपृष्ठ

अइबले महाबले,
बलभद्दे य सत्तमे ॥

२. दुविट्ठू य तिविट्ठू य,
आगमेसाण वण्हिणो ।
जयंते विजय भद्दे,
सुप्पहे य सुदंसणे ।
आणंदे नंदणे पउमे,
संकरिसणे य अपच्छिमे ॥

और त्रिपृष्ठ—भविष्य में ये नौ वासुदेव होंगे।

जयंत, विजय, भद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द, नन्दन, पद्म और संकर्षण—ये नौ बलदेव होंगे।

११९. एएसि णं नवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्संति, नव धम्मायरिया भविस्संति, नव नियाणभूमिओ भविस्संति, नव नियाणकारणा भविस्संति, नव पडिसत्तू भविस्सति, तं जहा—

१. तिलए य लोहजंघे,
वरइजंघे य केसरी पहराए ।
अपराइए य भीमे,
महाभीमे य सुग्गीवे ॥

२. एए खलु पडिसत्तू,
कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वेवि चक्कजोही,
हम्मिहिंति सचक्केहिं ॥

११९. इन नौ बलदेव-वासुदेवों के नौ-नौ पूर्वभविक नाम, नौ धर्माचार्य, नौ निदानभूमियां, नौ निदान-कारण और नौ प्रतिशत्रु होंगे। जैसे कि—

१. तिलक, २. लोहजंघ, ३. वज्रजंघ, ४. केसरी, ५. प्रभराज, ६. अपराजित, ७. भीम, ८. महाभीम, ९. सुग्रीव ।

ये कीर्तिपुरुष वासुदेवों के प्रतिशत्रु होंगे, सभी चक्र-योधी होंगे और सभी अपने ही चक्र से मारे जायेंगे।

१२०. जंबुदीवे णं दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति, तं जहा—

१. सुमंगले य सिद्धत्थे,
णिव्वाणे य महाजसे ।
धम्मज्झए य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥

१२०. जम्बूद्वीप द्वीप के ऐरवत वर्ष में आगामी उत्सर्पिणी में चौबीस तीर्थङ्कर होंगे, जैसे कि—

१. सुमंगल, २. सिद्धार्थ, ३. निर्वाण, ४. महायश, ५. धर्मध्वज, ६. श्रीचन्द्र, ७. पुष्पकेतु, ८. महाचन्द्र, ९. श्रुतसागर, १०.

२. सिरीचंदे पुप्फकेऊ,
महाचंदे य केवली ।
सुयसागरे य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥
३. सिद्धत्थे पुण्णघोसे य,
महाघोसे य केवली ।
सच्चसेणे य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥
४. सूरसेणे य अरहा,
महासेणे य केवली ।
सव्वाणंदे य अरहा,
देवउत्ते य होक्खइ ॥
५. सुपासे सुव्वए अरहा,
अरहे य सुकोसले ।
अरहा अणंतविजए,
आगमिस्साण होक्खइ ॥
६. विमले उत्तरे अरहा,
अरहा य महाबले ।
देवाणंदे य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥

पुण्यघोष, ११. महाघोष, १२. सत्यसेन, १३. शूरसेन, १४. महासेन, १५. सर्वानन्द, १६. देवपुत्र, १७. सुपार्श्व, १८. सुव्रत, १९. सुकौशल, २०. अनन्तविजय, २१. विमल, २२. उत्तर, २३. महाबल और २४. देवानन्द ।

७. एए वुत्ता चउव्वीसं,
एरवयम्मि केवली ।
आगमिस्साण होक्खंति,
धम्मतित्थस्स देसगा ॥

ये चौवीस तीर्थङ्कर आगामी उत्सर्पिणी में ऐरवत वर्ष में धर्म-तीर्थ के देशक/प्रवर्तक होंगे ।

१२१. बारस चक्कवट्टी भविस्संति, बारस चक्कवट्टीपियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ।

१२१. बारह चक्रवर्ती, उनके बारह पिता बारह माताएँ और स्त्रीरत्न होंगे ।

नव बलदेव - वासुदेवपियरो भविस्संति, णव वासुदेव-मायरो भविस्संति, णव दसारमंडला

नौ बलदेव-वासुदेवों के नौ पिता, नौ वासुदेवों की नौ माताएँ, नौ बलदेवों की नौ माताएँ और नौ

भविस्संति, उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा जाव दुवे दुवे रामकेसवा भायरो भविस्संति, णव पडिसत्तू भविस्संति, नव पुव्वभवणामधेज्जा, णव धम्मायरिया, णव णियाणभूमिओ, णव णियाणकारणा, आयाए, एरवए आगमिस्साए भणियव्वा।

दशारमण्डल होंगे। उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, प्रधानपुरुष यावत् दो-दो राम और केशव भाई होंगे। उनके नौ प्रतिशत्रु, पूर्वभव के नौ नाम, नौ धर्माचार्य, नौ निदान-भूमियाँ और नौ निदान-कारण होंगे। ऐरवत में आकर भविष्य में मुक्त होंगे, यह वक्तव्य है।

१२२. एवं दोसुवि आगमिस्साए भणियव्वा।

१२२. इसी प्रकार भविष्य में दोनों [भरत और ऐरवत] में यह वक्तव्य है।

१२३. इच्चेयं एवमाहिज्जति, तं जहा—
कुलगरवंसेति य, एवं तित्थगरवंसेति य, चक्कवट्टिवंसेति य दासारवंसेति य, गणधरवंसेति य, इसिवंसेति य, जतिवंसेति य, मुणिवंसेति य, सुतेति वा, वा, सुतंगेति वा, सुयसमासेति वा, सुयखंधेति वा, समाएति वा संखेति वा।

१२३. इस प्रकार यह ऐसे कहा गया है, जैसे कि—
कुलकरवंश, तीर्थङ्करवंश, चक्रवर्ती वंश, दशारवंश, गणधरवंश, ऋषिवंश, यतिवंश, मुनिवंश, श्रुत, श्रुतांग, श्रुतसमास, श्रुतस्कन्ध, समवाय और संख्या।

समत्तमगमक्खायं अज्झयणं।

यह समस्त अंग-आख्यात अध्ययन

—त्ति बेमि।

—ऐसा मैं कहता हूँ।